गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिक दिसम्बर-2016

गुरुत्व ज्योतिष

रत्न विशेष

रत्नों का अद्भुत रहस्य

अंक ज्योतिष से जाने शुभ रत्न

रत्न का पूर्ण प्रभावी काल ?

84 प्रकार के रत्न और उपरत्न

फ़िरोजा एक विलक्षण रत्न

रत्नो की उत्पत्ति

विशेषज्ञ की सलाह से ही करें रत्न धारण

रत्न धारण से विद्या प्राप्ति

आजीविका और रत्न धारण

रत्न एवं रंगों द्वारा रोग निवारण

रत्न धारण से अभिष्ट कार्यसिद्धि

रत्न द्वारा रोग उपचार



NON PROFIT PUBLICATION

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष पत्रिका

दिसम्बर-2016

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ORISSA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
http://gk.yolasite.com/
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी, स्वस्तिक आर्ट

हमारे मुख्य सहयोगी

स्वस्तिक.ऎन.जोशी (स्वस्तिक सोफ्टेक इन्डिया लि)

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

BHUBNESWAR-751018, (ORISSA) INDIA
Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

संपादकीय

आज के वैज्ञानिक युग में रत्नों को धारण करने से रत्नो मनुष्य पर पड़ने वाल शुभ-अशुभ प्रभाव को वैज्ञानिक भी मानते हैं। रत्न शब्द का अर्थ है बेजोड़ वस्तु। सामान्यतः इसी लिए हम किसी विषय वस्तु या व्यक्ति को उनके गुणों के आधार पर रत्न शब्द से संबोधित किया जाता हैं।

वैज्ञानिक द्रष्टिकोण से संपूर्ण सौरमण्डल सूर्य के कारण अस्तित्व में आया हैं। इसलिये सभी ग्रह सूर्य के ईर्द-गिर्द एक निश्चित गति एवं स्थान पर परिक्रमा करते हैं।

वैदिक ज्योतिष के प्रमुख ग्रंथो में सूर्य को विशेष महत्व दिया गया हैं। सूर्य के संबंध में सूर्यदेव को सात घोडो के रथ पर विराजमान बताया गया हैं। विद्वानो के मत से सूर्य के सात घोडे सूर्य की किरणों में स्थित सात रंगो का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसी प्राकार सौरमण्डल में स्थित नवग्रहों को सात रंगो के प्रतीक माना गया हैं। उन ग्रहो के संबंधित रंगो का प्रभाव प्रकाश के द्वारा परिवर्तित होकर रत्नों के माध्यम से हमारे शरीर पर पडता हैं। रत्नों में प्रकाश किरणो को अवशोषित करके उसे परावर्तित करने का प्रमुख गुण होता हैं। जानकारो की माने तो रत्नों का सीधा असकर ग्रहो के स्वभाव एवं कार्यप्रणाली के अनुशार हमारे शरीर ओर व्यक्तित्व पर पडता हैं। मानव शरीर पंचतत्वों एवं सात चक्र से बना हैं। उपयुक्त रत्नों के धारण करने से मानव शरीर में पंचतत्वों व सातचक्रो को संतुलन करने के लिये सहायता प्राप्त होती हैं। जिससे प्रकार धारणकर्ता व्यक्ति के व्यक्तित्व में सुधार आता हैं। हर रत्न के रंगो का अद्भुत एवं चमत्कारिक प्रभाव होता हैं जिस्से हमारे मानव शरीर से सभी प्रकार के रोग हेतु उपयुक्त रत्न का चुनाव कर लाभ प्राप्त किया जासकता हैं।

ब्रह्मांड में व्याप्त हर रंग इंद्रधनुष के सात रंगों के संयोग से संबंध रखता हैं, हमारे ऋषि-मुनियों ने हजारों साल पहले खोज लिया की इंद्रधनुष के सात रंग सात ग्रहों के प्रतीक होते हैं, एवं इन रंगों का संबंध ब्रह्मांड के सात ग्रहो से होता हैं जो मनुष्य पर अपना निश्चित प्रभाव हर क्षण डालते हैं। इस बात को आज का उन्नत एवं आधुनिक विज्ञान भी इस बातकी पृष्टि करता हैं। ज्योतिष के द्रष्टि कोण से हर ग्रह का अपना अलग रंग व रत्न हैं।

हमारे विद्वान ऋषि-मुनियों ने रत्नो के मानव प्रभाव जीवन पर पड़ने वाले शुभ-अशुभ प्रभाव एवं रत्नो की उपयोगिता का विस्तृत अध्ययन कर जान लिया था। उन ऋषि-मुनियों ने अपने योग बल एवं अद्वितिय अध्ययन से प्राप्त ज्ञान को एकत्रित कर विभिन्न ग्रंथो एवं शास्त्रो की रचना की।

हमारे मार्गदर्शन हेतु उन ऋषि-मुनियों ने ग्रंथो में रत्नों के विभिन्न उप्योगीता एवं प्रभाव का विस्तृत वर्ण भी किया। जिससे मनुष्य अपनी आवश्यक्ता के अनुशार विभिन्न रत्नो के माध्यम से अपने कार्य उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर सके। ज्योतिष विद्वान एवं रत्न विशेषज्ञ के मत से रत्न घारण करने से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इच्छित परिवर्तन किया जा सकता हैं। क्योकि रत्न विज्ञान एक प्रचीन विद्या हैं।

रत्नों के विषय में मणि माला ग्रन्थ में उल्लेख हैं:-

माणिक्यम् तरणेः सुजात्यममलम्
मुक्ताफलम् शीतगोर्माहियस्य च विद्रुमो
निगदितः सौम्यस्य गारुत्मतम्।
देवेज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्रूयसय
वज्रम् शनेर्नीलम् निर्म्मलमन्ययोश्च
गदिते गोमेदवैदूर्य्यके॥

अर्थात्: ग्रहों के विपरीत होने पर उन्हें शान्त करने के लिए रत्न पहने जाते हैं। सूर्य के विपरीत होने पर निर्दोष माणिक,

चन्द्र के विपरीत होने पर उत्तम मोती, मंगल के लिए मूंगा, बधु के लिए पन्ना, बृहस्पति के लिए पुखराज, शुक्र के लिए हीरा, शनि को शान्त करने के लिए नीलम, राहु के लिए गोमेद एंव केतु के विपरीत होने पर लसुनिया घारण करना चाहिए। (मणि माला)

हमारे ऋषि-मुनियो का कथन हैं की प्रकृति ने मानुष्य के विभिन्न विकारो के निवारण के लिए कुदरत के अति अनमोल उपहार के रूप में विविध प्रकार के रत्न प्रदान किए हैं, जो हमें भूमि (रत्नगर्भा), समुद्र (रत्नाकर) आदि विविध स्त्रोतों से प्राप्त होते हैं।

कौटिल्यजी का कथन हैं:-

खनिः स्त्रोतः प्रकीर्णकं च योनयः।

अर्थात्:ये रत्न हमारे हर विकार को दूर करने में सक्षम हैं। चाहे विकार भौतिक हो या आध्यात्मिक। किसी रत्न विशेष के बारे में जानने से पूर्व मूल रत्नों को जानना आवश्यक है। विद्वानो ने मूल रत्नो कि संख्या 21 बताई हैं।

महर्षि वाराहमिहिर नें भारतीय प्राचिन ज्योतिष शास्त्र के प्रमुख ग्रंथो में बृहत्संहिता की रचना की जिसमें रत्नो के गुण-दोष का विस्तार से वर्णन हैं। विद्वानो के मतानुशार अभी तक हुए शोधा कार्य में ज्योतिष एवं रत्न शास्त्र में रुचि रखने वाले लोगो के लिये बृहत्संहिता अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रामाणिक शास्त्र सिद्ध हुवा हैं।

क्योकि महर्षि वाराहमिहिर ने जिन मुख्य रत्नों का उल्लेख किया हैं, उससे ज्ञात होता हैं की आज हम जिन प्रमुख रत्नो को जानते हैं उन रत्नो को पुरातन काल से या उससे पूर्व से यह रत्न अवश्य उपलब्ध थे एवं उन रत्नो को विभिन्न उद्देश्य के लिये प्रयोग में लिया जाता था। विद्वानो के अनुशार अभी तक प्राप्त हुवे पुरातन शास्त्र एवं ग्रंथो में जितने रत्नो का वर्णन मिलता हैं उस सब से अधिक संख्या में रत्नो का उल्लेख बृहत्संहिता में किया गया हैं।

रत्न विज्ञान अति विशाल एवं अनंत हैं उसे किसी किताब एवं पत्रिका में समाहित कर पाना असंभव हैं। फिर भी हमने आपको रत्न के विषय में अधिक से अधिक विशेष जानकारी प्राप्त हो यहिं प्रयास किया हैं।

जानकार ज्योतिषी से सलाह प्राप्त कर ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए रत्न धारण करना सरल एवं अत्याधिक लाभ प्रदान करने वाला श्रेष्ठ उपाय सिद्ध हो सकता हैं। क्योकि उचित मार्ग दर्शन से धारण किया गया रत्न शीघ्र एवं निश्चित शुभ प्रभाव प्रदान करने में समर्थ हैं। अतः रत्न धारण करने से पूर्व किसी कुशल विशेषज्ञ से परामर्श अवश्य कर ले। आपको अपने कार्य उद्देश्य में विभिन्न क्षेत्र में निश्चित सफलता प्राप्त हो इसी उद्देश्य से रत्न शक्ति विशेष अंक को आपके मार्गदर्शन हेतु उपलब्ध करवाया गया हैं।

इस अंक में रत्न से संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए रत्न के लाभ, हानि, अन्य मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ्ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न रत्न, मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाले उपायों, पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो परमात्मा से यही प्राथना हैं...

हमारी शुभकामनाएं आपके साथ हैं..... ✍ चिंतन जोशी

***** रत्न धारण करने से संबंधित सूचना *****

- पत्रिका में प्रकाशित रत्न से संबंधित सभी जानकारीयां गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ आरक्षित हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित वर्णित रत्न के प्रभाव को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- रत्न विज्ञान ज्योतिष से संबंधित होने के कारण भारतिय ज्योतिष शास्त्रों से प्रेरित होकर रत्नो के प्रभाव की जानकारी दी गई हैं।
- रत्नो के प्रभाव से संबंधित विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- रत्नो के प्रभाव से की प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी लेखक, कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी बारे में जानकारी देने हेतु लेखक, कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- रत्नो से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना न होना उनकी इच्छा एवं आवश्यक पर निर्धारित हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- रत्नों की जानकारी से संबंधित पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- रत्नों से संबंधित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गए हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले रत्न, मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी रत्न, मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं की होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों , सामाजिक , कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- रत्नो से संबंधित जानकारी को मान ने से प्राप्त होने वाले लाभ, हानी कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- रत्न धारण करने से पूर्व किसी जानकार ज्योतिषी रत्न विशेज्ञ की सलाह अवश्यलें।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

रत्नों का अद्भुत रहस्य

चिंतन जोशी

रत्नो के मानव प्रभाव जीवन पर पड़ने वाले शुभ-अशुभ प्रभाव एवं रत्नो की उपयोगिता को हजारो वर्ष पूर्व हमारे विद्वान ऋषि-मुनियों ने अध्ययन कर जान लिया था। उन ऋषि-मुनियों ने अपने योग बल एवं अद्विितिय अध्ययन से प्राप्त ज्ञान को एकत्रित कर विभिन्न ग्रंथो एवं शास्त्रो की रचना की। हमारे मार्गदर्शन हेतु उन ऋषि-मुनियों ने ग्रंथो में रत्नों के विभिन्न उप्योगीता एवं प्रभाव का विस्तृत वर्ण भी किया। जिससे मनुष्य अपनी आवश्यक्ता के अनुशार विभिन्न रत्नो के माध्यम से अपने कार्य उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर सके।

ज्योतिष विद्वान एवं रत्न विशेषज्ञ के मत से रत्न घारण करने से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इच्छित परिवर्तन किया जा सकता हैं। क्योकि रत्न विज्ञान एक प्रचीन विद्या हैं।

रत्नों के विषय में मणि माला ग्रन्थ में उल्लेख हैं:-

माणिक्यम् तरणेः सुजात्यममलम्
मुक्ताफलम् शीतगोर्माहेयस्य च विद्रुमो
निगदितः सौम्यस्य गारुत्मतम्।
देवेज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्ऱ्यसय
वज्रम् शनेर्नीलम् निर्म्मलमन्ययोश्च
गदिते गोमेदवैदूर्य्यके॥

अर्थात्: ग्रहों के विपरीत होने पर उन्हें शान्त करने के लिए रत्न पहने जाते हैं। सूर्य के विपरीत होने पर निर्दोष माणिक, चन्द्र के विपरीत होने पर उत्तम मोती, मंगल के लिए मूंगा, बधु के लिए पन्ना, बृहस्पति के लिए पुखराज, शुक्र के लिए हीरा, शनि को शान्त करने के लिए नीलम, राहु के लिए गोमेद एंव केतु के विपरीत होने पर लसुनिया घारण करना चाहिए। (मणि माला)

धन्यम् यशस्यमायुष्यम् श्रीमद् व्यसनसूदनम्।



हर्षणम् काम्यमोजस्यम् रत्नाभरणधारणम्॥
ग्रहदृष्टिहरम् पुष्टिकरम् दुःखप्रणाशनम् ।
पापदौर्भाग्यशमनम् रत्नाभरणधारणम्॥

(मणि माला)

अर्थात्: रत्न जड़ित आभूषण को घारण करने पर सम्मान, यश, दिर्धायु, धन, सुख और धन में वृद्धि होती है तथा सभी प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति होती है। ऐसा करने से ग्रह के विपरीत प्रभाव कम होते हैं शरीर पुष्ठ होता है तथा दुःख, पाप एंव दुर्भाग्य का नाश होता हैं।

रत्नेन शुभेन शुभम् भवति नृपाणामनिष्तमशुभेन।
यस्मादतः परीक्ष्यं दैवं रत्नाश्रितम् तज्ज्ञैः॥

अर्थात्: शुभ, स्वच्छ व उत्तम श्रेणी के रत्न धारण करने से राजाओं का भाग्य शुभ तथा अनिष्ट कारक रत्न पहनने से अशुभ भाग्य होता है। अतः रत्नों की गुणवत्ता पर अवश्य ध्यान देना चाहिए दैवज्ञ को खूब जाँच-परखकर ही रत्न देना चाहिए, क्योंकि रत्न में भाग्य निहित होता है।

प्रकृति ने मानुष्य के विभिन्न विकारो के निवारण के लिए कुदरत के अति अनमोल उपहार के रूप में विविध प्रकार के रत्न प्रदान किए हैं, जो हमें भूमि (रत्नगर्भा), समुद्र (रत्नाकर) आदि विविध स्त्रोतों से प्राप्त होते हैं।

कौटिल्यजी का कथन हैं:-

खनिः स्त्रोतः प्रकीर्णकं च योनयः।

अर्थात्:ये रत्न हमारे हर विकार को दूर करने में सक्षम हैं। चाहे विकार भौतिक हो या आध्यात्मिक। किसी रत्न विशेष के बारे में जानने से पूर्व मूल रत्नों को जानना आवश्यक है। विद्वानो ने मूल रत्नो कि संख्या 21 बताई हैं।

1) हीरा (वज्र),
2) नीलम (इन्द्रनील),
3) पुखराज
4) पन्ना (मरकत),
5) माणिक,
6) (रुधिर रत्न,)
7) वैदुर्य, लहसुनिया,
8) कटैला,
9) विमलक (चमकीला रत्न)
10) राजमणि,
11) स्फटिक,
12) चन्द्रकान्तमणि,
13) सौगन्धिक,
14) गोमेद,
15) शंखमणि,
16) महानील,
17) ब्रह्ममणि,
18) ज्योतिरस,
19) सस्यक,
20) मोती व
21) प्रवाल (मूँगा)।

इन २१ रत्नो को भाग्य वृद्धि हेतु उत्तम एवं धारण करने योग्य माना गया हैं।

सामान्यतः एसी मान्यता हैं की पृथ्वी से मूल रूप में प्राप्त होने वाले प्रमुख रत्न 21 ही हैं। लेकिन 21 मूल रत्नों के अलावा इनके 21 उपरत्न भी हैं। विद्वानो के मत से रत्नों की संख्या 21 ही होने का कारण है। जिस प्रकार मनुष्य को दैहिक, दैविक तथा भौतिक रूप से तीन तरह की व्याधियाँ त्रस्त करती हैं उसी प्रकार से इन्हीं तीन प्रकार की उपलब्धियाँ होती हैं और इंगला, पिंगला और सुषुम्ना इन तीन नाड़ियों से इनका उपचार होता है।

इसी प्रकार एक-एक ग्रह से उत्पन्न तीनों प्रकार की व्याधियों एवं उपलब्धियों को आत्मसात् या परे करने के लिए एक-एक ग्रह को तीन-तीन रत्न प्राप्त हैं। ध्यान रहे, ग्रह भी मूल रूप से मात्र सात ही हैं।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनि और राहु एवं केतु की अपनी कोई स्वतन्त्र सत्ता न होने से इनकी गणना मूल ग्रहों में नहीं होती है। इन्हें छाया ग्रह कहा जाता है। इस प्रकार एक-एक ग्रह के तीन-तीन रत्न के हिसाब से सात ग्रहों के लिए 21 मूल रत्न निश्चित हैं।

अस्तु, ये मूल रत्न जिस रूप में पृथ्वी से प्राप्त होते हैं, उसके बाद इन्हें परिमार्जित करके शुद्ध करना पड़ता है तथा बाद में इन्हें तराशा जाता है।

***

रत्नो की उत्पत्ति

चिंतन जोशी

रत्नों का संसार अति बहुत प्राचीन एवं अद्भुत हैं। रत्नो की उत्पत्ति के विषय में अनेको मान्यताएं एवं कथाएं हैं। वृहद संहिता, भावप्रकाश, अग्नि पुराण, गरुड़ पुराण, रस रत्न समुच्चय, आयुर्वेद प्रकाश, देवी भागवत, महाभारत, विष्णु धर्मोत्तर आदि गंथो में रत्नों का वर्णन किया गया है।

अग्नि पुराण:

एक बार महाबली असुरराज वृत्रासुर ने देवलोक पर आक्रमण कर दिया। तब भगवान श्री विष्णु ने इन्द्र को सुझाव दिया की महर्षि दधीचि की हड्डियों से वज्र अस्त्र बनाया जाए। देवताओं की प्रार्थना सुनकर महामुनि दधीचि ने अपना शरीर देवताओं को भेट स्वरुप दे दिया। महर्षि दधीचि की हड्डियों से इन्द्र देव ने वज्र बनाकर

फिर इसी वज्र से देवताओं ने वृत्रासुर का वध किया। इन्द्र द्वारा अस्त्र (वज्र) के निर्माण के समय दधीचि की अस्थियों के, जो अस्थियों के अंश पृथ्वी पर गिरे थे उनसे रत्नों की खानें बन गईं। कुछ विद्वानो के मत से उस अस्थियों के अंश पृथ्वी पर गिरने से हीरे की खाने बन गईं। इस लिए हीरा सबसे अधिक कठोर कोई पदार्थ हैं।

समुद्र मंथन की कथा :

पुराण के अनुशार देवताओं और राक्षसों ने जब समुद्र मंथन किया तब अमृत कलश प्रकट हुआ तो असुर उस अमृत को लेकर भाग गए। देवताओं ने उनका पीछा किया और देवता व राक्षसों में छीना-झपटी हुई जिस में अमृत की कुछ बूंदें छलक कर पृथ्वी पर गिरीं। कालांतर में अमृत की ये बूंदें मिट्टी में मिलकर रत्नों में परिवर्तित हो गएं।

दैत्यराज बलि की कथा:

भगवान विष्णु ने वामन अवतार धारण करके दैत्यराज बलि से तीन पग भूमि माँगी। पहले पग में पूरा ब्रह्मांड, दूसरे पग में पाताल सहित समस्त पृथ्वी पर तीसरे पग में दैत्यराज बलि ने वामनजी को अपना शरीर अर्पण कर दिया। भगवान विष्णु का पैर बलि के शरीर पर रखते ही बली का शरीर रत्नो का बन गया। उसके बाद में देवराज इन्द्र ने बलि के शरीर के टुकडे-टुकडे कर दिए। बलि के शरीर के टुकडे सभी अंगों से अलग-अलग रंग-रूप व गुण के रत्न बन गए।

फिर भगवान शिव ने उन रत्नों को अपने त्रिशूल पर स्थापित करके फिर उन त्रिशूल पर नौ ग्रहों एवं बाहर राशियों का प्रभुत्व स्थापित किया। इसके बाद उन्हें पृथ्वी पर चार दिशाऑं में गिरा दिया। फलस्वरूप पृथ्वी पर विभिन्न रत्नों के भंडार उत्पन्न हो गएं। कुछ विद्वानो के मत से राजा बलि शरीर के टुकडों से 21 प्रकार के रत्नों का प्रादुर्भाव हुआ। तो कुछ विद्वानो का मत हैं की राजा बलि शरीर के टुकडों से 84 प्रकार के रत्नों का प्रादुर्भाव हुआ था।

- जहाँ बलि का रक्त गिरा वहाँ माणिक्य की उत्पत्ति हुई।
- जहाँ बलि का मन, दांत गिरा वहाँ मोति की उत्पत्ति हुई।
- जहाँ बलि की अंतड़ियों गिरी वहाँ मूंगे की उत्पत्ति हुई।
- जहाँ बलि का पित्त गिरा वहाँ पन्ना की उत्पत्ति हुई।
- जहाँ बलि का मांस गिरा वहाँ पुखराज की उत्पत्ति हुई।
- जहाँ बलि का हड्डियां गिरी वहाँ हीरे की उत्पत्ति हुई।
- जहाँ बलि का नेत्र गिरी वहाँ निलम की उत्पत्ति हुई।

आचार्य वराहमिहिर ने अपने ग्रंथ वृहद्संहिता में 21 रत्नों की उत्पत्ति का कारक दैत्यराज बलि को माना हैं। उसके पश्चात देवताओं के कल्याण के लिए अपनी अस्थियां दान कर देने वाले महर्षि दधीची की हड्डियों से भी अनेक रत्नों की उत्पत्ति हुई।

उक्त कथा को सत्य मानना आज आज के आधुनिक युग में कठिन हो जाता हैं। आजकी आधुनिक शैक्षणिक पद्धति से शिक्षा ग्रहण कर चूके विद्वान व जानकारो की माने तो यह संभंव ही नही हैं, क्योकी की कैसे किसी के शरीर के भिन्न हिस्से जैसे खून से माणिक्य, दांत से मोति, आंत से मूंगा, पित्त से पन्ना आदि बन सकता हैं?

मोति का निर्मण तो समुद्र में एक विशेष प्रकार के जीव द्वारा होता हैं।

मूंगा भी एक प्रकारका जैविक रत्न हैं जो समुद्र में एक विशेष प्रकार के कीड़े होते हैं जो अपने लिए घर बनाते हैं, उसी को मूंगा कहा जाता हैं। इस के अलावा प्रायः अन्य सभी रत्न खनिज रत्न हैं जो पृथ्वी के गर्भ से प्राप्त होते हैं।

यहि कारण हैं की उक्त कथा को सत्य मानना कठिन हैं। क्योकि उसे सत्य मानने हेतु आज हमारे पास पर्याप्त पुरावे व जानकारीयों का अभाव हैं। उक्त कथाओं को पुराणों में उल्लेखित कथा या जानकारी के लिये पढीं व मानी जा सकती हैं लेकिन वास्तविकता जोडना मुश्किल हो सकता हैं।

क्योकि आज का समय वैज्ञानिक सिद्धांतो एवं तथ्यो पर आधारीत हो गया हैं। आज विज्ञान में हर दिन नये-नये शोध कार्य एवं प्रयोग होते हैं। जिसका परिणाम यह हैं की आज हर पीला दिखने वाला रत्न पुखराज नहीं होता। हर पीला दिखने वाले रत्न जैसे पुखराज, सुनहला, टोपाज़ आदि में अंतर करने में समर्थ हैं।

वैज्ञानिक मत से कोई पत्थर रत्न तब कहलाता हैं जब वहं सामान्य पत्थरो से अलग कुछ विशेष प्रकार के तत्व युक्त होता हैं तब वहं एक विशेष रत्न कहलाता हैं। हर रत्न की एक विशेषताएं होती हैं जो उसे अन्य रत्न से अलग करता हैं।

वैज्ञानिक मत हैं की पृथ्वी के गर्भ में अग्नि के प्रभाव से पदार्थ के विभिन्न तत्व रासायनिक प्रक्रिया द्वारा रत्न बन जाते हैं। यही कारण हैं की हर रत्न विशेष प्रकार के विभिन्न रासायनिक यौगिक मेल से बनता हैं। किसी एक रासायनिक तत्व से रत्न नहीं बन सकता। स्थान की भिन्नता से विविध रासायनिक तत्वों के संयोग की भिन्नता के कारण ही रत्नों के रंग, रूप, कठोरता व चमक में अंतर होता हैं।



रत्न का पूर्ण प्रभावी काल ?

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

आपने अपने जीवन में कभी यहं महसूस किया हैं, की जो रत्न आपने धारण किया हैं, उसका प्रभाव एक निश्चित समय अवधि तक ही पूर्ण रहता हैं। उस समय सीमा के पूर्ण होते ही धीरे-धीरे उस रत्न का प्रभाव कुछ कम हो जाता हैं या रत्न का प्रभाव धारण करने के समय जितना अनुभव हो रहाथा उतना अनुभव नहीं होता! यह एक सामान्य नियम हैं, शायद आपने अनुभव न किया हो लेकीन यह पूर्ण अनुभूत व शास्त्रोक्त सिद्धांत हैं।

क्या आप ने कभी अनुभव किया हैं, कि आपने जो रत्न आपने पहना हैं, वह उच्च कोटी का होने पर भी अपना प्रभाव नहीं दिखा रहा या आप की अपेक्षा से कम दिखा रहा हैं या आप को शुभ फल की जगा पर अशुभ एवं नकारात्मक प्रभाव दिख रहा हैं। आपने रत्न जिस स्थान से खरीदा हैं वह आपने नया रत्न हैं इस धारणा से खरीदा हैं लेकिन वह आपकी गलत धारण हैं। कई जौहरी एक ही रत्न को बार-बार लगातार एक ग्राहक से दूसरे ग्राहक को बेचते हैं।

एक व्यक्ति ने धारण किया हुवा रत्न कुछ समय के पश्चयात उस के खरीद मूलय से कुछ धन राशी काटकर बदली करके नया देते हैं या पैसे देकर पुराने रत्न खरीदते हैं। इस तरहा कभी-कभी रत्न विक्रेता लाखो रूपये के मुल्य का रत्न हजारो में/या हजारो के मुल्य का रत्न कुछ सौ रूपयो में खरीद के उस रत्न को वापस लाखो एवं हजारो में बेचते हैं।

इस तरह बेचे हुए माल को बार-बार लगातार बेचते रहते हैं। जिससे रत्न का प्रभाव कम होता चला जाता हैं, और व्यक्ति विशेष रत्न के शुभ एवं अनुकुल प्रभावो से वंचित रह जाता हैं या कभी-कभी प्रतिकूल प्रभावो से सम्मुखिन होता हैं। जिस कारण से उस व्यक्तिका रत्नों पर से विश्वास कम हो जाता हैं या टूट जाता हैं।

रत्नो के विषय में विद्वान ज्योतिषो का भी यह सिद्धांत रहा हैं। किसी भी व्यक्ति का पहना या इस्तेमाल किया गया रत्न नहीं पहन ना चाहिये। क्योकि अनुभवो से यह सामने आया हैं की किसी व्यक्ति का पहना रत्न उच्च कोटी का होकर भी प्रभाव नहीं दिखाता या लाभ के स्थान पर अशुभ एवं विपरीत परीणाम देता हैं।

कुछ ज्योतिष अपनी दुकान चलाने के लिये एवं कम समय में ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने के लिये लोगो में भ्रम पैदा कर रहैं हैं की निम्न कोटी को रत्न या उपरत्न प्रभाव नहीं देते। केवल उच्च कोटी का रत्न ही आपको काम करेगा/या में जो रत्न दे रहा हुं वो रत्न ही सही हैं या आपको यही रत्न काम करेंगा और कोई रत्न काम नहीं करेंगा इस प्रकार की चिकनी-चुपड़ी बाते बना के लोगो को भ्रमीत एवं गलत माग्रदर्शन दे रहे हैं।

यहां हम स्पष्ट करना चाहते हैं की रत्न ऐक विज्ञान हैं, ये किसी व्यक्ति विशेष के देने पर ही काम करेगा एसा कोई सिद्धांत नहीं हैं। आप कही से भी दोष रहीत रत्न खरीद कर धारण कर सकते हैं। अगर आप रत्न खरीद ने में असमर्थ हो तो बिना किसी परेशानी के पूर्ण विश्वास से उपरत्न भी धारण कर सकते हैं एवं शुभ फल प्राप्त कर सकते हैं।

यदि आप को संदेह हैं की कोई रत्न आपके लिये अनुकूल होगा या नहीं एसी स्थिलि में आप महंगे रत्न खरीद कर धारण कर ने के बजाय कम मूल्य वाले रत्न या उपरत्न धारण करे जिस्से आप को पता चले की रत्न आप को शुभ फल देता हैं या अशुभ फल प्रदान करता हैं।

आपके मार्गदर्शन हेतु रत्नो की पूर्ण प्रभावी होने की समय अवधि दर्शायी जा रही हैं।

रत्न एवं उपरत्न	उत्तम कोटि	निम्न कोटि
माणिक्य	4 वर्ष 4 माह	2 वर्ष 2 माह
तामडा, सूर्यकांत मणि	1 वर्ष	–
मोति	2 वर्ष 2 माह	1 वर्ष 1 माह
चंद्रकांत मणि	1 वर्ष	-
मूंगा	3 वर्ष 3 माह	1 वर्ष 7 माह
पन्ना	3 वर्ष 3 माह	1 वर्ष 7 माह
पन्ना के उपरत्न	1 वर्ष	–
पुखराज	4 वर्ष 4 माह	2 वर्ष 2 माह
सुनहला	1 वर्ष 1 माह	–
हीरा	7 वर्ष 7 माह	3 वर्ष 10 माह
जरकन	1 वर्ष 6 माह	–
निलम	5 वर्ष 5 माह	2 वर्ष 8 माह
निलम के उपरत्न	1 वर्ष	
गोमेद	3 वर्ष 3 माह	1 वर्ष 7 माह
लहसुनिया	3 वर्ष 3 माह	1 वर्ष 7 माह

उक्त समय अवधि के पश्चयात रत्न को बलद देना चाहिए या किसी जानकार से पूनः शोधन करवा कर चैतन्य युक्त करवा लेना चाहिए। यह एक अनुभूत सिद्वांत हैं की रत्न का प्रभाव निर्धारित समय अवधितक ही सिमित रहता हैं एवं किसी के द्वारा व्यवहार या धारण किया गया रत्न दूसरे व्यक्ति के धारण करने से उचित लाभ प्राप्त नहीं होता अपितु प्रतिकूल परिणाम प्राप्त होते देखे गए हैं। परंतु इस मत से कुछ ज्योतिष के जानकार व रत्न विक्रेता का मत भिन्न हैं।

विद्या प्राप्ति हेतु सरस्वती कवच और यंत्र



आज के आधुनिक युग में शिक्षा प्राप्ति जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। हिन्दू धर्म में विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को माना जाता हैं। इस लिए देवी सरस्वती की पूजा-अर्चना से कृपा प्राप्त करने से बुद्धि कुशाग्र एवं तीव्र होती है।

आज के सुविकसित समाज में चारों ओर बदलते परिवेश एवं आधुनिकता की दौड में नये-नये खोज एवं संशोधन के आधारो पर बच्चो के बौधिक स्तर पर अच्छे विकास हेतु विभिन्न परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धाएं होती रहती हैं, जिस में बच्चे का बुद्धिमान होना अति आवश्यक हो जाता हैं। अन्यथा बच्चा परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा में पीछड जाता हैं, जिससे आजके पढे-लिखे आधुनिक बुद्धि से सुसंपन्न लोग बच्चे को मूर्ख अथवा बुद्धिहीन या अल्पबुद्धि समझते हैं। एसे बच्चो को हीन भावना से देखने लोगो को हमने देखा हैं, आपने भी कई सैकडो बार अवश्य देखा होगा?

ऐसे बच्चो की बुद्धि को कुशाग्र एवं तीव्र हो, बच्चो की बौद्धिक क्षमता और स्मरण शक्ति का विकास हो इस लिए सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक हो सकता हैं।

सरस्वती कवच को देवी सरस्वती के परंम दूर्लभ तेजस्वी मंत्रो द्वारा पूर्ण मंत्रसिद्ध और पूर्ण चैतन्ययुक्त किया जाता हैं। जिस्से जो बच्चे मंत्र जप अथवा पूजा-अर्चना नहीं कर सकते वह विशेष लाभ प्राप्त कर सके और जो बच्चे पूजा-अर्चना करते हैं, उन्हें देवी सरस्वती की कृपा शीघ्र प्राप्त हो इस लिये सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक होता हैं।

दस महा विद्या पूजन यंत्र



दस महा विद्या पूजन यंत्र को देवी दस महा विद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महा विद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महा विद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महा विद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महा विद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महा विद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महा विद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महा विद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इस लिए दस महा विद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दशमहाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

84 प्रकार के रत्न और उपरत्न

चिंतन जोशी

1. माणिक्य (Ruby): माणिक्य सूर्य का रत्न है। माणिक्य एक बहुमूल्य रत्न है। प्रायः माणिक्य रंग में यह गुलाबी व लाल होता है। औषधीय रूप से माणिक्य में वात, पित्त, कफ जनित रोग को शांत करने की शक्ति होती हैं। माणिक्य क्षय रोग, बदन दर्द, उदर शूल, पक्षाघात, चक्षु रोग, हर्निया, कब्ज आदि रोग को दूर करता हैं। इसके अलावा माणिक्य रक्तवर्धक, वायुनाशक और उदर रोग में लाभकारी होता हैं। माणिक्य नेत्र ज्योति को बढ़ाने वाला हैं तथा अग्नि, कफ, वायु तथा पित्त दोष का शमन करता है। माणिक्य की भस्म के सेवन से आयु की वृद्धि होती हैं। माणिक्य की भस्म शरीर में उत्पन्न होने वाली उष्णता और जलन को दूर करती हैं। पौराणिक मान्यता हैं की माणिक्य घाव और विष प्रभाव आदि से सुरक्षा में उपयुक्त है।

2. हीरा (Diamond): हीरा शुक्र का रत्न है। हीरा एक बहुमूल्य रत्न है। यह सफेद, हलका पीला, हलका लाल, गुलाबी तथा हलके काले रंग का होता है। पौराणिक मान्यता के अनुशार औषधीय रूप से हीरा धारण करने से विषैले जीव-जंतुओं का भय नहीं रहता। वृद्ध व्यक्ति के हीरा धारण करने से उनके बल एवं साहस में वृद्धि होती हैं। वंश-वृद्धि हेतु हीरा धारण करना अत्यंत लाभदायक होता हैं। हीरा धारण करना शुक्र जनित रोगों में अत्यंत लाभदायक माना जाता है।

3. पन्ना (Emerald): पन्ना बुध का रत्न है। इसका रंग हरा होता है। पौराणिक मान्यता के अनुशार औषधीय रूप से पन्ना धारण करने से शारीरिक बल एवं सौदर्य में वृद्धि होती हैं। पन्ना बुखार, सन्निपात, उल्टी, विष, बवासीर, दमा, मिरगी, पागलपन, आंत्रशोथ इत्यादि रोगो में अति लाभदायक हैं। पथरी, मूत्र रोग आदि में पन्ना की भस्म लाभदायक होती हैं।

4. नीलम (Blue Saphire): नीलम शनि का रत्न है। इसका रंग नीला, बैंगनी एवं हलके आसमानी रंग का भी होता हैं। पौराणिक मान्यता के अनुशार औषधीय रूप से शनि रत्न नीलम धारण करने से नेत्र रोग, दिमाग की गर्मी, पागलपन, ज्वर, अजीर्ण, उपदंश, खांसी, हिचकी, मुंह से खून आना, उल्टी आदि रोगो में लाभप्राप्त होता हैं।

5. लहसुनिया (Cat's Eye): यह केतु का रत्न है। लहसुनिया दो प्रकार के होते हैं। क्वार्टज लहसुनिया(Quartz cat's eye) ओर क्रायसोबेरील लहसुनिया (Chrysoberyl Cat's Eye) इसका रंग प्रायः सुनहरी, पीला, काला, सफेद, हरा, धूम्रवर्ण होता हैं। जिस लहसुनिये में बिल्ली की आँख जैसा सूत दिखलाई पड़ता हो वह रत्न श्रेष्ठ होता हैं। प्रायः उत्तम सूत वाले क्रायसोबेरील लहसुनिया अधिक मूल्यवान होते हैं। पौराणिक मान्यता के अनुशार औषधीय रूप से वैदूर्य रत्न धारण करने से यह वायु-गोला तथा पित्त जन्य रोगों का नाशक होता हैं। नेत्र रोग, मधुमेह, उपदंश में लाभदायक होता हैं। लहसुनिया धारण करने से पांडुरोग में शरीर का पीलापन शीघ्र कम होने लगता हैं। पाचन शक्ति को बढाने में भी वैदूर्य रत्न लाभकारी हैं।

6. मोती (Pearl): मोती चंद्रमा का रत्न है। मोती सफेद, काला, नीला, पीला, बैंगनी, हलका गुलाबी तथा संतरंगी (इंद्रधनुषी) इत्यादि रंग के होते हैं। ज्योतिषीय मान्यता के अनुसार जिन लोगों का मन अशांत रहता हैं और जिनको अधिक क्रोध आता है उन्हें मोती धारण करने से विशेष लाभ प्राप्त होते हैं। पौराणिक मान्यता के अनुशार औषधीय रूप से मोती विभिन्न रोगों को नाश करने में भी सहायक होता हैं। ज्वर में मोती धारण करना लाभप्रद रहता हैं। मोती मिरगी, उन्माद, पथरी, आंत्रशोथ, अल्सर एवं पेट एवं आदि बीमारियों में लाभदायी होता हैं। यह हृदय गति को नियंत्रण करने में सहायक होता हैं।

7. मूंगा (Coral): यह मंगल का रत्न है। मूंगा मुख्यत लाल, सिंदूरी, गेरूआ, सफेद, काला आदि मिलते-जुलते रंग में पाया जाता हैं। पौराणिक मान्यता के अनुशार औषधीय रूप से पीलिया, मिरगी व हृदय रोग में भी मूंगे की भस्म का सेवन

लाभकारी रहता हैं। बवासीर में मूंगा अत्यंत लाभदायक होता हैं। जानकारो के मतानुशार यदि पुराना बवासीर हो तो लगभग एक मास हर दिन रात्री में मूंगे को पानी में रात भर डूबा कर रखदें उस पानी को सुबह पीने से बवासीर जड़ से समाप्त हो जाता हैं। मूंगे की भस्म का सेवन शारीरिक बल में वृद्धि करता हैं। उदर संबन्धी रोगों में भी इसका सेवन लाभदायक होता हैं। मूंगे को रात में जल में डूबा कर रखकर सुबह इस जल को आंखों में लगाने से नेत्र ज्योति तेज होती हैं।

8.पुखराज (Yellow Sapphire): यह देव गुरु (बृहस्पति) का रत्न है। पुखराज रत्न को विद्वान ग्रंथकारो नें सभी रत्नों का राजा हैं। पुखराज पीले, सफ़ेद, गुलाबी, हरा, केसरिया और नीले रंगों का होता हैं। एसी मान्यता हैं की फूलो के जितने कुदरती रंग होते हैं, पुखराज भी उतने ही रंग में पाया जाता हैं। पीले रंग का पुखराज सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुशार औषधीय रूप से पुखराज पीलिया, तिल्ली, पांडू रोग, खांसी, दन्त रोग, अल्सर, सन्निपात, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि आदि कई प्रकार के रोगों के ईलाज के लिए प्रयोग किया जाता रहा हैं। गुरु ग्रह को जीवनदाता माना गया हैं। गुरु वसा एवं ग्रंथियों से सीधा संबंध रखता है। इस लिये गला रोग, सीने का दर्द, श्वास रोग, वायु विकार, टीबी, हृदय रोग में पुखराज धारण करने से लाभप्रद होता है। पीले रंग का पुखराज मोटापे को नियंत्रित करने के लिए उत्तम रत्न हैं एवं जिस व्यक्ति का स्वास्थ्य दुर्बल रहता हों, उन्हें अपनी सेहत में सुधार के लिए पुखराज धारण करना भी लाभप्रद होता हैं। पुखराज धारण करने से रक्तचाप नियंत्रित रहता हैं।

9. गोमेद (Gomed): यह राहु का रत्न है। गोमेद का रंग शहद जैसा होता है। शास्त्रोक्त मत से गोमेद का रंग गाय के मूत्र के रंग के समान होने से इसे गोमेद कहा जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुशार औषधीय रूप से गोमेद धारण करने से हृदय, चर्म, नेत्र, तिल्ली, बवासीर, पांडुरोग, नकसीर, ज्वर, पैरों का दर्द एवं मानसिक रोगों का शमन होता हैं। गोमेद धारण करने से भ्रम जनित रोगों का नाश होता हैं। गोमेद धारण करने से अभक्ष्य खाद्य पदार्थो के सेवन, नशा, बुरी आदत, परस्त्री/परपुरुष में आसक्ति कम होती हैं। गोमेद धारण करने से पाचन शक्ति में सुधार होता हैं।

10. फ़िरोज़ा (Firoza / Turquoise): यह नीलम का उपरत्न है। फ़िरोज़ा आसमानी, रंग का कुछ हरापन लिए होता है। निशापुरी / ईरानी फिरोजा श्रेष्ठ होता है। पौराणिक मान्यता के अनुशार औषधीय रूप से फ़िरोज़ा संक्रमण, ऊँचा रक्तचाप, अस्थम, दाँत और मुँह की समस्या एवं सूर्य के विकिरण से रक्षा होती है। शराब की लत छुडाने के लिए क्रिस्टल चिकित्सकों द्वारा फ़िरोजा की सिफारिश की जाती है।

11. लालड़ी (Lalri): लाल, गुलाबी, कत्थई रंग का होता हैं। यह सूर्य रत्न माणिक्य का उपरत्न है।

12. जबरजद्द (Zabarjadd or Peridot): यह तोते जैसे हलके/गहरे हरे रंग का होता है। पौराणिक मान्यता के अनुशार औषधीय रूप से मिरगी रोग में लाभप्रद होता हैं। यह बुध रत्न पन्ना का उपरत्न है।

13. ओपल या उपल (Opal): ओपल प्रायः सभी रंगों में प्राप्त है। इस पर सब रंगों का असर पड़ता है। ओपल को शुक्र का उपरत्न हैं। कुछ पौराणिक जानकारों ने ओपल को चंद्र का उपरत्न भी माना है। यह एक नरम पत्थर है।

14. तुरमली (Tourmaline): तुरमली विभिन्न रंग के रत्न प्राप्त होते हैं। यह एक नरम पत्थर है। तुरमली शुक्र का उपरत्न हैं। लेकिन इसके विभिन्न रंग के अनुशार शुक्र के साथ अन्य ग्रहों के संयोजन में भी धारण करने की सलाह दी जाती हैं। हरा = शुक्र + बुध, पीला = शुक्र + बृहस्पति, नीला = शुक्र + शनि, ब्राउन (कत्थई) = शुक्र + राह, गुलाबी = शुक्र + सूर्य और मंगल ग्रह, सफेद = शुक्र + चंद्रमा (चंद्र)

15. नरम या नर्म (Naram or Spinel Ruby): यह सूर्य रत्न माणिक्य का उपरत्न है। यह रत्न लाल जर्दपन तथा श्यामलता लिए होता है।

16. सुनहला या सुनैहला (Sunehla or Golden Topaz / Citrine): यह गुरु रत्न पुखराज का उपरत्न है। सुनहला प्रायः सुनहरी, हल्का / गहरा पीला होता है। यह पुखराज का उपरत्न है।

17. कटैला या कटहला (Katela or Amethyst): यह शनि रत्न नीलम का उपरत्न हैं। बैंगनी रंग का या नीले रंग का होता है। कम मूल्य के अधिकतर कटैला दुरंगे होते हैं। एक रंग का कटैला उत्तम माना जाता हैं।

18. संगसितारा या सितारा (Gold Stone / Sitara) यह ज्यादातर गेरुआ रंग, भूरे रंग का होता है तथा उसके चारों तरफ स्वर्ण / रजत कणों के समान चमकीले छीटों होते हैं जिससे यह खुब चमकता है। मानसिक हताशा और निराशा को दूरकरने में सहायक माना जाता हैं।

19. स्फटिक (Crystal or Rock Crystal): स्फटिक रत्न प्रायः पारदर्शी व रंगहीन चमकीला होता हैं लेकिन यह हल्के पीले, गुलाबी, मटमैले आदि रंग में भी पाया जाता हैं। स्फटिक शुक्र का उपरत्न माना जाता हैं।

20. गौदंता / गोदंती (Goudanta / Moon Stone): गौदंता गाय के दांत के समान श्वेत रंग लेकिन थोड़ा जर्दपन लिए होता है। इसमें सूत भी पड़ते हैं। यह केतु का उपरत्न है। यह चमकहीन शुष्क, नरम रत्न हैं जो शीघ्र खराब होता हैं।

21. तामड़ा (Tamra or Garnet): लाल, गुलाबी रंग में काले रंग की लाली लिए होता है। यह सूर्य रत्न माणिक्य का उपरत्न है। तामड़ा यह चमकहीन अर्धपारदर्शी या अपारदर्शी शुष्क, नरम रत्न हैं जो शीघ्र खराब होता हैं।

22. संगेमरियम / माहेमरियम (Sang-e-Maryam /Mahemariyam/ Jasper): यह दोरंगी रत्न होता है। पीली मिट्टी गहरे रंग की विशेष प्रकार की रेखाएं बनी होती हैं । प्रायः मरियम बवासीर / पाइल्स के रोगी हेतु लाभप्रद माना गया हैं। संगेमरियम शांति के लिए भी धारण किया जाता हैं। अन्य मान्यता के अनुसार यदि गर्भवती महिला धारण करे तो, प्रसव के समय दर्द कम होता है !

23. सिंदुरिया / सिंदूरी (Sinduriya): यह गुलाबी रंग का कुछ सफेदी लिए होता है। यह मंगल के रत्न मूंगे का उपरत्न है।

24. काका नीली (Lolite /Kakanili): नीला व काला मिश्रित वर्ण का मुलायम, हल्का, पानीदार, पारदर्शी रत्न है। यह शनि रत्न नीलम का उपरत्न है।

25. धुनेला / धुनहला (Dhunela or Smoky Quartz): धुएं के समान रंग का यह रत्न पारदर्शी, नर्म और चमकीला होता है। यह शनि रत्न नीलम का उपरत्न है।

26. बेरुज या बैरूज (Beruj or Aquamarine): इसका हलका हरा, पीला, नीला, आसमानी आदी रंग का होता है। यह शनि रत्न नीलम का उपरत्न है।

27. मरगज (Margajor Jade): यह बुध के रत्न पन्ने का उपरत्न है। यह प्राय हरे रंग का होता है, लेकिन नीला, श्वेत आदि रंगों में भी पाया जाता हैं। मरगज में रंगों के गाढ़े/हल्के छींटे होते हैं। यह नर्म फीकी चमक वाला रत्न हैं।

28. बांसी/ बांशी (Banshi): यह बुध के रत्न पन्ने का उपरत्न है। बांसी हलके हरे रंग का चमकीला नरम पत्थर होता है।

29. पितौनिया (Pitoniya / Bloodstone) यह बुध के रत्न पन्ने का उपरत्न है। यह हरे रंग का पत्थर होता है, इसकी सतह पर लाल रंग के छींटे होते हैं।

30. मकनातीस (Magnetic or Load stone): प्रायः मकनातीस काले रंग का चमकदार पत्थर है, इसे चुंबक भी कहते हैं। यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। मकनातीस ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में विशेष लाभ देता है, मकनातीस लोहे को अपनी तरफ खींचता है एवं चुम्बक की तरह कार्य करता है|

31. लूधया (Ludhya): यह सूर्य रत्न माणिक्य का उपरत्न है। मजीठ के समान लाल रंग का होता है।

32. रोमनी (Romni): यह सूर्य रत्न माणिक्य तथा मंगल के रत्न मूंगे का उपरत्न है। यह गहरे लाल रंग का श्यामवर्णीय होता है।

33. दुर्वेनजफ या दुर्वेनज्फ : कच्चे धान के समान होता है।

34. सुलेमानी (Onyx): सुलेमानी प्रायः काले रंग का पत्थर होता है। कुछ सुलेमानी पर सफेद रंग की धारियां होती है। सुलेमानी को शनि के रत्न नीलम का उपरत्न माना जाता है।

35. आलेमानी (Onyx): आलेमानी भी सुलेमानी की जाति का रत्न है। इसका रंग हल्का भूरा होता है, जिस पर भूरे रंग की धारियां होती है।

36. जजेमानी (Onyx): जजेमानी यह भी सुलेमानी की जाति का होता है, इसका रंग भूरा या पीला होता है। इस पर हल्के रंग की धारियां दिखलाई पड़ती है।

37. सावोर (Savour): यह बुध के रत्न पन्ने का उपरत्न है। यह हरे रंग का होता है। इस पर भूरे रंग की धारियां दिखलाई पड़ती है।

38. तुरसावा (Tursava): यह सूर्य रत्न माणिक्य का उपरत्न है। इसके गुलाबी रंग की धारियां या छींटे होते है। यह बहुत चमकीला किन्तु नरम पत्थर होता है।

39. आबरी /अबरी (Saphire): यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। यह काले रंग का पत्थर होता है। प्रायः आबरी की सतह पर काला एवं पीला रंग अब्रवाला होता है। कम मूल्य का यह संगमरमर जैसा प्रतीत होता है।

40. लाजवर्त (Lapis Lazuli): यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। यह नीले रंग का नरम पत्थर होता है। लाजवर्त की सतह पर कुदरती रुप से चमकीले रजत और सुवर्ण रंग के छींटे / चकते होते हैं। यह शनि का उपरत्न है। सुवर्ण रंग के छींटे वाले लाजवर्त उत्तम माने जाते हैं।

41. कूदरत (Kudrat): यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। यह काले रंग का नरम पत्थर होता है। उसकी सतह पर सफेद और पीले रंग के छींटे / चकते होते है।

42. अहवा (Ahwa): यह सूर्य रत्न माणिक्य का उपरत्न है। इसका रंग गुलाबी होता है। इस पर छोटे-बडें मिश्रीत रंग के छींटे / चकते होते है।

43. चित्ती (Chitti): यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। काले रंग का होता है। सफेद या सुनहरी धारियां होती हैं।

44. संगसन (White Jade): यह सफेद व हल्का अंगूरी रंग का होता है।

45. लारू (Laru): लारू को यह मकराने / मार्बल पत्थर की श्रेणी का उपरत्न है।

46. दाना फिरंग (Kidney Stone): यह बुध के रत्न पन्ने का उपरत्न है। इसका रंग हल्का/गहरा हरा होता है। इस पर गुर्दे के समान आकृति बनी होती है। पौराणिक मान्यता के अनुशार किडनी/ गुर्दे से सम्बन्धित रोगों में यह लाभ देता है|

47. मारवर (Marbel): यह मंगल के रत्न मूंगे का उपरत्न है। यह विभिन्न रंग में पाया जाता हैं लेकिन मुख्यतः इस का रंग बांस जैसे रंग का, लाल तथा सफेद होता है।

48. कसौटी (Black Stone): यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। यह काले रंग का पत्थर को सोने की परीक्षा के लिए उपयोग में आता है।

49. दारचना (Darchana): यह पत्थरदार चने के समान दिखलाई पड़ता है। कत्थई रंग पर नीले, पीले और धूमिल छींटे होते हैं।

50. हकीक या कलबहार (Haqeak): यह जल से प्राप्त होता है। कलबहार का रंग कुछ पीलापन लिए / हकीक का रंग कुछ हरापन लिये होता है ।

51. हालन (Halan): यह चंद्र रत्न मोती का उपरत्न है। यह सफेद / यह गुलाबी रंग का होता है। जब हालन को हिलाते हैं, तो इसका रंग हिलता नज़र आता है।

52. सीजरी / सजरी / शजर (Seizri): यह चंद्र रत्न मोती का उपरत्न है। यह विभिन्न रंगों का होता है। इस पर वृक्ष आकृति नज़र आती है। स्वामी ग्रहों के रंगानुसार यह हकीक धारण करने की सलाह दी जाती है।

53. मुबेनजफ (Pearl Stone): यह चंद्र रत्न मोती का उपरत्न है। इसमें बाल के समान रंगदार रेखा होती है और इसका रंग सफेद होता है।

54. अंबर या कहरुवा (Amber): यह सूर्य रत्न माणिक्य का उपरत्न है। यह लाल या हल्का पीले रंग का होता है।

55. झरना (Jhrana): यह चंद्र रत्न मोती का उपरत्न है। यह मटमैले रंग का होता है। इसमें पानी में देने से यह झड़ जाता है।

56. संगबसरी (Sangbasri): यह शनि का उपरत्न है। यह आँखों के लिए सुरमा बनाने के उपयोग में लाया जाता है।

57. दातला /कांसला (Yellow Stone): यह चंद्र रत्न मोती का उपरत्न है। पीलापन लिए पुराने शंख के समान रंग वाला होता है। दातला दंत रोग में उपयोगी है।

58. मखड़ा (Black Spider): यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। रंग हल्का काला, उपर मकड़ी का जाला के आकृति होती हैं।

59. संगीया (Sangia): यह चंद्र रत्न मोती का उपरत्न है। रंग में शंख के समान सफेद होता है।

60. गूदड़ी (Goodri): यह सूर्य रत्न माणिक्य का उपरत्न है। यह कई तरह की, कई रंग की होती है लेकिन पीले रंग की अधिकता होती है। इसे फकीर लोग पहनते हैं।

61. कांसला /कामला(Green Stone): यह बुध रत्न पन्ना का उपरत्न है। इसका रंग हल्का हरा तथा कुछ सफेदी लिए होता है।

62. सिफरी (Sifti): यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग आसमानी एवं कुछ हरापन लिए होता है।

63. हरीद (Hareed): यह राहु के रत्न गोमेद का उपरत्न है। इसका रंग काला तथा भूरापन लिए होता है। हरीद वजन में भारी होता है।

64. हवास (Hawas): यह बुध रत्न पन्ना का उपरत्न है। हवास का रंग हरा व कुछ सुनहरी आभायुक्त होता है।

65. सींगली (Smoky Ruby): यह सूर्य रत्न माणिक्य का उपरत्न है। लाल रंग का कुछ श्याम आभा युक्त होता है।

66. ठेडी/ढेडी (Black Stone): यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। यह काले रंग का चिकना पत्थर है।

67. हकीक/अकीक (Haqeek or Agate): यह विभिन्न रंगों में उपलब्ध होता है। हिन्दु संप्रदाय में इसे लक्ष्मीकारक हकीक के रुप में धारण एवं पूजन किया जाता हैं। मुस्लिम संप्रदाय के लोग भाग्यशाली रत्न के तौर पर पहनते हैं। स्वामी ग्रहों के रंगानुसार यह हकीक धारण करने की सलाह दी जाती है।

68. गौरी (White Stone): यह विभिन्न रंगों में उपलब्ध होता है, लेकिन इस पर विभिन्न की धारियां होती हैं।

69. सीया (Seya Black): यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग काला होता है।

70. सोमाक / सीमाक (Somak / Seemak): यह सूर्य रत्न माणिक्य का उपरत्न है। सोमाक लाल रंग का हल्का पीलापन लिए होता है। इस पर गुलाबी रंग के छींटे होते हैं।

71. मूसा (Moosa): यह चंद्र रत्न मोती का उपरत्न है। इसका रंग सफेद मटमेल होता है।

72. पनघन (Panghan): यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग थोड़ा कालापन लिए एवं कुछ हरा होता है।

73. अमलीया (Amliya): यह सूर्य रत्न माणिक्य का उपरत्न है। इसका रंग थोड़ा कालापन लिए कुछ गुलाबी होता है। इसके

74. डूर (Black Haessonite): यह राहु के रत्न गोमेद का उपरत्न है। कत्थे के रंग का होता है।

75. लिलियर (Lilyer or Black Saphire): यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग काला एवं उपर सफेद छींटे होते हैं।

76. खारा (Khara): यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग काला एवं कुछ हरापन भी लिए होता है।

77. पारा जहर / येजहर (Mercury): यह बुध रत्न पन्ना का उपरत्न है। इसका रंग हल्का सफेद होता है। मान्यता हैं की पारा जहर को घाव पर लगाने से घाव ठीक हो जाता है।

78. सीर खड़ी / सेलखड़ी: (Gypsum): साधारण भाषा में इसे सेलखड़ी भी कहते हैं। इसका रंग मिट्टी के समान होता है।

79. जहर मोहरा (Jahar Mohara): यह बुध रत्न पन्ना का उपरत्न है। इसका रंग हरा होता है लिकेन कुछ सफेदी युक्त होता हैं। मान्यता हैं की जहर मोहरा के वर्तन में विष भी अपना कुप्रभाव खो देता है। यह पने का उपरत्न है। एसा मिथक हैं की जहर मोहरा धारण करने वाले को सर्प कटाने का भय नहीं होता।

80. रवात (Ravaat): यह सूर्य रत्न माणिक्य का उपरत्न है। यह दो रंगों में उपलब्ध है, लाल एवं नीला। मान्यता हैं की इस रत्न को धारण करने से रात्री ज्वर में लाभप्रद है।

81. सोहन मक्खी (Sihan Makkhi): इसका रंग सफेद मिट्टी जैसा होता है। यह मूत्र रोग में लाभकारी है, इसे औषध रत्न भी कहते हैं।

82. हजरते ऊद (Hajrate Uda): यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग काला होता है, यह औषधि बनाने में काम आता है।

83. सुरमा (Surma): यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग काला होता है। इसे आँखों में लगाया जाता है।

84. पारस (Paras): यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग काला होता है। पौराणिक मान्यता है, कि इसके छूने मात्र से लोहा भी सोना बन जाता है।

***

जन्म वार से व्यक्तित्व

चिंतन जोशी

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार सप्ताह के सभी वार का व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता हैं. व्यक्ति का जन्म जिस वार में हुवा हो उस वार के प्रभाव से व्यक्ति का व्यवहार और चरित्र प्रभावित होता हैं.

रविवार :

रविवार के दिन जन्म लेने वाला व्यक्ति सूर्य के प्रभाव के कारन तेजस्वी, चतुर, गुणवान, उत्साही, दानी, लेकिन थोडा गर्व रखने वाल और पित्त प्रकृति का होता हैं। स्वभाव में अत्याधिक क्रोध भरा होता है. यदि केसी से झगडे की स्थिति पैदा हो जाए तो उसमें अपनी पूरी ताकत झोकने से पीछे नहीं हटते हैं.

सोमवार:

सोमवार के दिन जन्म लेने वाला व्यक्ति चंद्र के प्रभाव के कारन बुद्धिमान, प्रकृति स्वभाव से शांत, अपनी मधुर वाणी से अन्य लोगो को अपनी और सरलता से मोहित कर लेते है। व्यक्ति स्थिर स्वभाव वाले, सुख एवं दुःख किसी भी स्थिति में समान रहने वाले हैं।

मंगलवार:

मंगलवार के दिन जन्म लेने वाला व्यक्ति मंगल के प्रभाव के कारन जटिल स्वभाव वाला, दूसरो के कार्य मे आसानी से नुक्श निकालने वाल, युद्ध प्रेमी, पराक्रमी, अपनी बातो पर कायम रहने वाले, कभी कभी हिंसक प्रवृत्ति रखने वाले एवं अपने परिवार का नाम रोशन करने वाले होते हैं।

बुधवार:

बुधवार के दिन जन्म लेने वाला व्यक्ति बुध के प्रभाव के कारन मिठा बोलने वाले, विद्या अध्ययन मे रूचि रखने वाले, ज्ञानी, लेखन, सम्पत्तिवान होते हैं, बुधवार के दिन जन्म लेने वाले लोग व्यक्ति लोग जल्दी से विश्वास नहीं कते हैं.

गुरुवार (बृहस्पतिवार):

गुरुवार के दिन जन्म लेने वाला व्यक्ति गुरु के प्रभाव के कारन विद्या,धनवान , ज्ञानी, विवेकशील, उत्तम सलाहकार होते हैं। व्यक्ति दूसरो को उपदेश देने मे सदैव अग्रणिय रेहते हैं, एवं लोगो से मान सम्मान प्राप्त कर बहोत सारी प्रसिद्धि प्राप्ति करना चाहते हैं।

शुक्रवार:

शुक्रवार के दिन जन्म लेने वाला व्यक्ति शुक्र के प्रभाव के कारन स्वभाव चंचल, भौतिक सुखों में लिप्त रहने वाले, तर्क-वितर्क मे होशियार, धनवान एवं तीक्ष्ण बुद्धि के स्वामी होते हैं। ईश्वर मे आस्था कम ही होती हैं, यदी होतो नही के बराबर होती हैं।

शनिवार:

शनिवार के दिन जन्म लेने वाला व्यक्ति शनि के प्रभाव के कारन कठोर स्वभाव के, पराक्रमी एवं परिश्रमी, दुःख सेहने की गजब की शक्ति रखने वाले, न्यायी एवं गंभीर स्वभाव के होते हैं। सेवा कर नाम व प्रसिद्धि प्राप्त करने वाले होते हैं।

रत्न धारण से अभिष्ट कार्यसिद्धि

चिंतन जोशी

ग्रहों के अनिष्ट प्रभाव को दूर करने के लिए हमारे देश में रत्न धारण करने की प्रणाली प्राचीन काल से प्रचलित है। आचार्य वाराहमिहिर ने बृहत्संहिता में रत्नों तथा उनके गुण-दोष का विस्तार से वर्णन किया हैं।

विद्वानो के मत से रत्न धारण करने के पीछे वैज्ञानिक रहस्य छिपा हैं। प्रायः आजके आधुनिक युग में सभी लोग इस बात से भली-भांति परिचित हैं की सौरमंडल की रश्मियों का प्रभाव रत्नो के रंग, रुप, आकार, प्रकार एवं उसके गुणो को निरंतर प्रभावित करता रहता हैं।

इसी कारण एक समान गुण वाली रश्मियों के कारक ग्रह के प्रभाव वृद्धि हेतु व्यक्ति को उसी प्रकार की रश्मि से उत्पन्न रत्न धारण करवा कर शुभ परिणाम प्राप्त किए जाते हैं। यदि प्रतिकूल प्रभाव के व्यक्ति को विपरीत प्रभावशाली रश्मियों में उत्पन्न रत्न धारण करवाया जाए, तो वह रत्न व्यक्ति के लिए अशुभ परिणाम देता हैं।

यहि कारण हैं रत्न धारण करने से पूर्व जन्म कुंडली में ग्रहो के अनुकूल एवं प्रतिकूल प्रभाव को जांच लेना चाहिए। क्योकि रत्नों को धारण करने के लिए कुछ विशेष सिद्धांत होते हैं। जिसका विस्तृत वर्णन हमारे विद्वान ऋषि-मुनियों ने ग्रंथो एवं शास्त्रों में किया हैं। रत्न धारण का मुख्य सिद्धांत हैं की जिस ग्रह से संबंधित रत्न धारण किया जाता हैं, उस ग्रह का बल प्राप्त करना। रत्न का कारक ग्रह (संबंधित ग्रह) उस व्यक्ति की जन्म कुंडली से इस रत्न को धारण करने से बल प्राप्त कर लेता हैं। रत्न धारण द्वारा संबंधित ग्रह कि रश्मि उस रत्न में होती हैं एवं धारण करने से व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करती हैं। और ग्रह से प्राप्त पीडा एवं कष्टों में कमी होने लगती हैं।

रोगों से बचने हेतु किस ग्रह का रत्न धारण करना चाहिए इस विषय में विद्वानो का मत हैं की रोगों से मुक्ति हेतु लग्नेश अर्थात लग्न के स्वामी का ग्रह का रत्न धारण करना उचित होता हैं। लग्नेश का रत्न व्यक्ति के शरीर में प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि करता हैं जिससे रोग से व्यक्ति को कम से कम हानि करता हैं और जल्द स्वस्थ करने हेतु मदद करता हैं एवं भविष्य में रोग से बचाता हैं। अतः रोगों के आग्रमण से बचने हेतु व्यक्ति को अपने लग्नेश का रत्न अवश्य पहनना चाहिए। क्योकि प्रतिरोधक क्षमता उत्तम स्वास्थ्य का लक्षण हैं।

कुछ ज्योतिष विद्वानो के मत से व्यक्ति की जन्म कुंडली में वर्तमान समय में जिस ग्रह की महादशा या अंतरदशा चल रही हो, या जो ग्रह प्रतिकूल हो उसका रत्न धारण करना चाहिए। ऐसा करने से ग्रह के अनिष्ट प्रभाव में कमी आती हैं और रोग शांत होने लगते हैं।

विशेषज्ञ की सलाह से ही करें रत्न धारण

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

जानकारो की माने तो अपने व्यक्तित्व में निखार और जीवन में सफलता के लिए व्यक्ति को लग्नेश और त्रिकोणेश अर्थात पंचमेश और नवमेश के रत्न धारण करने चाहिए। उनकी माने तो लग्नेश, पंचमेश एवं नवमेश के रत्न धारण करने से भाग्योदय तीव्र गति से होता हैं, लेकिन इस विषय में मतभेद हैं कुछ ज्योतिष का मत है कि यदि लग्नेश नीच राशि स्थित में स्थित हो, या त्रिकोणेश हो, तो उनके रत्न धारण नहीं करने चाहिए।

कुछ ज्योतिषी विद्वानो ने अपने अध्ययन में पाया हैं की यदि लग्नेश, पंचमेश एवं नवमेश नीच का हो, तबभी उसका रत्न लाभकारी सिद्ध होता हैं।

महर्षि वराहमिहिर एवं अन्य प्राचीन आचार्यों ने अपने ग्रंथो में उल्लेख किया हैं की यदि जन्म कुंडली में पंच महापुरुष, राजयोग बन रहा हो, तो जन्म कुंडली में राज योग बनाने वाले ग्रह का रत्न लाभकारी होता हैं।

ज्योतिष में पंच महा पुरुषयोग

1). रूचक योग
2). भद्र योग
3). हंस योग
4). मालव्य योग
5). षष योग

यह तो सभी ज्योतिषी जानते हैं कि यदि गुरु, शुक्र, बुध, मंगल, या शनि जन्म लग्न से केंद्र में स्वग्रही, या उच्च का हो, तो मंगल से रूचक, बुध से भद्र, गुरु से हंस, शुक्र से मालव्य एवं शनि से शश पंच महापुरुष राजयोग बनते है। अतः राजयोगकारी ग्रह का रत्न लाभकारी सिद्ध होगा। यदि किसी की जन्मपत्रिका में उपर्युक्त पंच महापुरुष राजयोग हो, तो उक्त ग्रह की महादशा में उसका रत्न धारण करना चाहिएं, जैसे, मंगल से रूचक योग में मूंगा, बुध से भद्र योग में हरा पन्ना, गुरु से हंस योग में पीला पुखराज, शुक्र से मालव्य योग में सफेद हीरा, शनि से शश योग में नीलम।

विद्वानो के अनुशार अष्टेश (अष्टम भाव के स्वामी ग्रह) का रत्न धारण नहीं करना चाहिए। रत्न धारण करते समय यह सावधानी अवश्य रखे।

1) मेष लग्न वाले जातक का मंगल अष्टमेश होता है, तो उन्हें मूंगा धारण नहीं करना चाहिए।
2) वृष लग्न वाले जातक का गुरु अष्टमेश होता है, तो उन्हें पीला पुखराज धारण नहीं करना चाहिए।
3) मिथुन लग्न वाले जातक का शनि अष्टमेश होता है, तो उन्हें नीलम धारण नहीं करना चाहिए।
4) कर्क लग्न वाले जातक का शनि अष्टमेश होता है, तो उन्हें नीलम धारण नहीं करना चाहिए।
5) सिंह लग्न वाले जातक का गुरु अष्टमेश होता है, तो उन्हें पीला पुखराज धारण नहीं करना चाहिए।
6) कन्या लग्न वाले जातक का मंगल अष्टमेश होता है, तो उन्हें मूंगा धारण नहीं करना चाहिए।
7) तुला लग्न वाले जातक का शुक्र अष्टमेश होता है, तो उन्हें हीरा धारण नहीं करना चाहिए।
8) वृश्चिक लग्न वाले जातक का बुध अष्टमेश होता है, तो उन्हें पन्ना धारण नहीं करना चाहिए।
9) धनु लग्न वाले जातक का चंद्र अष्टमेश होता है, तो उन्हें मोति धारण नहीं करना चाहिए।
10) मकर लग्न वाले जातक का सूर्य अष्टमेश होता है, तो उन्हें माणिक धारण नहीं करना चाहिए।
11) कुंभ लग्न वाले जातक का बुध अष्टमेश होता है, तो उन्हें पन्ना धारण नहीं करना चाहिए।
12) मीन लग्न वाले जातक का शुक्र अष्टमेश होता है, तो उन्हें हीरा धारण नहीं करना चाहिए।

महर्षियों ने अपनी खोज में पाया है कि जिस रत्न का रंग जितना गहरा होगा वह उतना ही लाभकारी होगा। अतः धारण करने से पूर्व इस बात का अवश्य ध्यान रखे।

रत्नो का नामकरण

✍ विजय ठाकुर

महर्षि वाराहमिहिर नें भारतीय प्राचिन ज्योतिष शास्त्र के प्रमुख ग्रंथो में बृहत्संहिता की रचना की जिसमें रत्नो के गुण-दोष का विस्तार से वर्णन हैं। विद्वानो के मतानुशार अभी तक हुए शोधा कार्य में ज्योतिष एवं रत्न शास्त्र में रुचि रखने वाले लोगो के लिये बृहत्संहिता अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रामाणिक शास्त्र सिद्ध हुवा हैं।

क्योकि महर्षि वाराहमिहिर ने जिन मुख्य रत्नों का उल्लेख किया हैं, उससे ज्ञात होता हैं की आज हम जिन प्रमुख रत्नो को जानते हैं उन रत्नो को पुरातन काल से या उससे पूर्व से यह रत्न अवश्य उपलब्ध थे एवं उन रत्नो को विभिन्न उद्देश्य के लिये प्रयोग में लिया जाता था। विद्वानो के अनुशार अभी तक प्राप्त हुवे पुरातन शास्त्र एवं ग्रंथो में जितने रत्नो का वर्णन मिलता हैं उस सब से अधिक संख्या में रत्नो का उल्लेख बृहत्संहिता में किया गया हैं।

बृहत्संहिता में जिन जिन रत्नो का वर्णन किया गया हैं। उन रत्नो को सुख, समृद्धि, वैभव एवं संपन्नता का सूचक मानागया हैं।

बृहत्संहिता में वर्णित रत्नों की तालिका यहा प्रस्तुत हैं:-

1)	वज्र	7)	सौगन्धिक	13)	मुक्ता	19)	महानील
2)	पद्मराज	8)	इन्द्रनील	14)	सम्यक	20)	ज्योतिरस
3)	विमलक	9)	रुधिर	15)	शंख	21)	ब्रह्ममणि
4)	मरकत	10)	राजमणि	16)	कर्केटक	22)	प्रवाल
5)	वैदूर्य	11)	गोमेद	17)	पुलक		
6)	स्फटिक	12)	पुष्पराग	18)	शशिकान्त		

बृहत्संहिता के अलावा अन्य कई ग्रन्थो में रत्नो का उल्लेख प्राप्त होता हैं।

महर्षि वाराहमिहिर द्वारा प्राप्त जानकारी को आधार बनाकर कालांतर में अन्य विद्वानो में अपनी रुचि रत्नों की और अग्रस्त की होगी और शोध अध्ययन के पश्चयात उसे लिखा होगा। जिस कारण समय के साथ-साथ रत्नो की उपयोगिता, सौंदर्य, गुण, औषधीय प्रभाव, दुर्लभता आदि से लोग परिचित होने लगे।

पुरातन काल में रत्न मूल्यवान होने के कारण सामान्य वर्ग लोगो की अपेक्षा केवल संपन्न लोग ही रत्नो का व्यवहार कर पाते थे। लेकिन समय बदला और आज के आधुनिक दौर में कुदरति रत्नो के साथ-साथ कृत्रिम रत्न भी सामानय वर्ग के लोगो के लिये उप्लब्ध होने लगे हैं, आज भी बहुमूल्य एवं किमती रत्नो की मांग दुनिया भर में समय के साथ में बढती जा रही हैं।

माणिक्य

✍ चिंतन जोशी

सूर्य का रत्न माणिक्य सूर्य ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं।

माणिक्य विभिन्न भाषाओ मे निम्न लिखित नामो से जाना जात है।

हिन्दी मे :- चुन्नि, माणिक्य, लाल मणि,

सस्कृत मे :- पद्मराग मणि, माणिक्यम, सोणमल, कुरविंद, वसुरत्न, सोगोधक, स्त्रोण्ग्रत्न, रत्ननायक, लक्ष्मी पुष्प,

फ़ारसी मे :- याकूत,

अरबी मे :- लाल बदपशकनि

लेटिन मे :- रुबी, नर्स,

माणिक्य में लाल रंग की आभा होती हैं। माणिक्य लाल रंग के अलावा अन्य रंग गुलाबी, काला और नीले रंग की आभा वाले भी पाये जाते हैं। माणिक्य खनिज रत्नो में से एक रत्न हैं।

रक्त के समान लाल रंग की आभा बिखेरने वाला माणिक्य अति मूल्यवान एवं उत्तम होता हैं। बाजार में बर्मा माणिक्य की मांग सबसे अधिक होती हैं। अलग-अलग स्थानों से प्राप्त माणिक्य के रंगों में भिन्नता होती हैं।

जानकारो के मत से बर्मा में माणिक्य की खदानें सबसे पुरातन हैं। अभी तक प्राप्त माणिक्य में सबसे उत्तम माणिक्य बर्मा से ही प्राप्त हुए हैं। यहि कारण हैं की बर्मा के माणिक्य की कीमत और मांग अंतराष्ट्रिय बाजारो में सबसे अधिक होती है।

माणिक्य के लाभ:

- माणिक्य धारण करने से व्यक्ति का मन प्रसन्न रहाता हैं एवं उत्साह और उमंग में वृद्धि होती हैं।
- कुछ विद्‌वानो के मत से माणिक्य प्रेम बढाने वाला रत्न मानते हैं।
- माणिक्य निराशा और उदासीनता को दूर करता हैं।
- माणिक्य भूत-प्रेत आदि शुद्र बाधाओं से मुक्ति दिलाता हैं।
- माणिक्य संतान सुख की प्राप्ति हेतु उत्तम माना गया हैं।
- माणिक्य धारण करने से आर्थिक स्थिति में सुधार होता हैं और विभिन्न स्तोत्र से धन प्राप्त होता हैं।



- माणिक्य धारण करने व्यक्ति की समाज में मान-सम्मन एवं प्रतिष्ठित में निरंतर वृद्धि होती हैं।
- माणिक्य जहर के प्रभाव को कम करता हैं एवं जहरीली वस्तु पास होने पर इसक रंग फीका दिखने लगता हैं।
- पश्चिमि देशों में ऎसी मान्यता हैं की माणिक्य विष को दूर करता हैं, माणिक्य महामारी जैसे प्लेग आदि से रक्षा करता हैं।
- माणिक्य धारण करने से व्यक्ति के दुख को दूर करता हैं।
- मन में नकारात्मक विचारों को आने से रोकता हैं।
- एसा माना जाता हैं की यदि किसी व्यक्ति ने माणिक्य धारण किया हो, तो उस पर विपत्ति आने पर, उसका रंग बदल जाता हैं (फीका हो जाता हैं) अर्थात माणिक्य विपत्तियों के आने से पूर्व संकेत देता हैं और संकट टल जाने पर पुन: माणिक्य की आभा पूर्ववत हो जाती हैं।

मान्यता:

- जो माणिक्य सूर्य की किरण पड़ने से लाल रंग बिखेरता है वह सर्वोत्तम होता हैं।
- उच्च कोटि के माणिक्य की पहचान है कि माणिक्य को दूध में बार-बार डुबोने से दूध मे माणिक्य की आभा दिखने लगती हैं।
- अंधेरे कमरे में रखने पर यह सूर्य के समान प्रकाशमान होता हैं।
- माणिक्य को कमाल की कली पर रखे तो कली तुरंत ही खिल उठती हैं।
- माणिक्य को यदि सफ़ेद मोतियों के बीच रखे तो मोती माणिक्य के रंग के हो जाते हैं।

माणिक्य और आध्यात्म:

- माणिक्य पहन कर सूर्य उपासना करने से सूर्य पूजा का फल में वृद्धि हो जाती है।
- रंग चिकित्सा का मूल आधार हैं की रंगों की रश्मियां घनीभूत होती हैं।

हृदय और रत्न: सूर्य व्यय का प्रतिनिधि है। रत्नों में वह माणिक्य का प्रतिनिधि है। इसलिए व्यक्ति को सूर्य को बल देने के लिए माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य हृदय के सभी प्रकार के कष्टों अथवा रोगों को दूर करता हैं। माणिक्य की पिष्टी और भस्म दोनों औषधि के रूप में उपयोग में आते हैं।

माणिक्य के दोष

1. जिस माणिक्य में दो रंगों आभा हो उसे धारण करने से पिता को कष्ट प्राप्त होता हैं। अत: दो रंगों से युक्त माणिक्य धारण नहीं करना चाहिए
2. जिस माणिक्य में मकड़ी के समान जाले नजर आते हो इस प्रकार के माणिक्य को धारण करने से धारणकर्ता कई प्रकार के कष्टों से पीड़ित हो जाता है
3. गाय के दूध के समान रंग वाले माणिक्य को धारण करने से धन का नाश होता हैं और हृदय में उद्धविग्नता रहती है
4. जिस माणिक्य का रंग धुएं के समान हो ऐसे माणिक्य को धारण करने से विभिन्न प्रकार काष्ट और संकटो का सामना करना पड़ता हैं।
5. काले रंग का माणिक्य धन नाश और अपयश देने वाला होता हैं।
6. जिस माणिक्य में दोष हो ऐसे माणिक्य को धारण करने से विभिन्न प्रकार के रोग, व्याधि और आकस्मिक दुर्घटनाओं की सम्भावना अधिक रहती हैं।

अत: माणिक्य धारण करने से पहले इसके दोषों को परख लेना चाहिए।

रोग और माणिक्य:

- माणिक्य रक्तवर्धक, वायुनाशक और उदर रोग में लाभकारी होता हैं।
- माणिक्य नेत्र ज्योति को बढ़ाने वाला हैं तथा अग्नि, कफ, वायु तथा पित्त दोष का शमन करता है।
- माणिक्य के भस्म के सेवन से आयु की वृद्धि होती हैं।
- माणिक्य में वात, पित्त, कफ जनित रोग को शांत करने की शक्ति होती हैं।
- माणिक्य क्षय रोग, बदन दर्द, उदर शूल, चक्षु रोग, कब्ज आदि रोग को दूर करता हैं।
- माणिक्य की भस्म शरीर में उत्पन्न होने वाली उष्णता और जलन को दूर करती हैं।

बृहत्संहिता के अलावा आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ भाव प्रकाश, आयुर्वेद प्रकाश एवं रस रत्न समुच्चय के अनुसार माणिक्य कसैले स्वाद का और मीठा रस प्रधान रत्न हैं।

मोती

✍ चिंतन जोशी

चंद्र का रत्न मोती चंद्र ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं। मोती को चंद्र रत्न माना गया है।

मोती विभिन्न भाषाओ मे निम्न लिखित नामो से जाना जात है।

हिन्दी मे :- मोती, मुक्ता

सस्कृत मे :- मुक्ता, सौम्या, नीरज, तारका, शशिरत्न, मौक्तिक, तारा, स्वप्नसार, इन्दुरत्न, मुक्ताफल, शूलिज, शोक्तिक, शशिप्रिय, जीवरत्न, बिन्दुफल, शुक्तिमणि, रसाईभव, सौकितक, मूर्वारिद आदि।

फ़ारसी मे :- मुखारिद,

अरबी मे :- मुखारिद,

लेटिन मे :- मार्गोरिटा

अंग्रेजी :- पर्ल

मोती की उत्पत्ति

प्रायः मोती स्वेत रंग का ही होता हैं। स्वेत रंग के अलावा गुलाबी, लाल, पीले, नीले, काले, हरे आदि रंगो में भी पाये जाते हैं।

मोती एक जैविक रत्न होता है। क्योकि मोती का निर्माण भी समुद्र में सीप/छिप में होता है। समुद्र में एक विशेष प्रकार का जीव होता हैं जिसे घोंघा (मूसेल) नाम से जाना जाता हैं। यह घोंघा सीप के अंदर अपना घर बनाकर रहता है। मोती के विषय में एसी मान्यता है की जब चंद्रमा स्वाति नक्षत्र में होता हैं तब पानी की टपकने वाली बूंद जब घोंघे के खुले हुए मुंह में पड़ती है तब मोती का जन्म होता है।

लेकिन एसा बहोत कम होत हैं।

ज्यादातर मोती रेत के कण या कोई छोटे जीव से बनते हैं। वैज्ञानिक मत से घोंघा के शरीर पर धागे के समान अंग होते हैं। जिसकी मदद से वह अपने आपको बडी शिला/ पत्थर पर जलीय स्थानों में अपने आपको चिपकाता हैं। घोंघा जल में एक बर्ष में दो ऋतु में जन्म लेते हैं। जानकारो की माने तो जो घोंघा बडी शिला का सहारा प्राप्त कर लेते हैं वहीं घोंघा इस योग्य होता हैं की वह मोति बना सकते हैं।

घोंघा मांस के दो आवरण के अंदर होता हैं जिसे मेण्टल कहा जाता हैं। यह मेण्टल सूक्ष्म छत्तों से ढंका होता हैं, जिसमें एक विशेष प्रकार के कठोर पदार्थो के मिश्रण को निकालने की क्षमता होती हैं। यह मिश्रण जमा होते-होते धीरे-धीरे सीप का रुप ले लेता हैं। यह सीपियां हर घोंघे को ढंककर रखती हैं और उसकी रक्षा करती हैं। घोंघा अपनी आवश्यक्ता के अनुशार जरुरत पडने पर सीप को खोलकर अपना भोजन प्राप्त करके सीप को पुनः बंध कर लेता हैं।

प्रायः सीप में चार पर्ते होती हैं। यह चारों पर्ते बहोत धीरे-धीरे बनती हैं एवं विभिन्न परतों से पडते हुए प्रकाश की रश्मिसे मोती में सुंदरता आती हैं।

घोंघा उक्त क्रियाओं से अपने लिये सीप में घर बना लेता हैं। जब कोई भिन्न पदार्थ जैसे रेत के कण या किडा, घोंघे के शरीर से लग जाता हैं तो घोंघा इस कण से मुक्ति पाने के लिये पूर्ण कोशिश करता हैं और कभी सफल तो कभी असफल होता हैं। जब घोंघा असफलता प्राप्त करता हैं, तब घोंघा उस कण को सीप में मौजुद पदार्थो से उसे ढंकने की कोशिश करता हैं और उस पर परत दर परत चढाता हैं। जिस पदार्थ से सीप बनती हैं उसी पदार्थ को वह उस कण पर चढाता हैं। समय के साथ यह परते मोति का पूर्ण रुप धारण कर लेता हैं। मोती का आकार भिन्न-भिन्न होते हैं। मोती गोल, अण्डाकार, नासपति आदि अनियमित आकार के होता हैं। घोंघा ने बनाये सीप या मेण्टल के बिच में जब कोई चिपकने वाला कीडा फस कर छेद कर देता हैं तब जो

मोती बनते हैं वह सीप से चिपक जाते हैं। उन मोतीयों को सीप से काटकर निकाल ना पडता हैं। इस तरह प्राप्त होने वाले मोती चपटे एवं अनियमित आकार के होते हैं। जिन्हें बिल्स्टर पर्ल कहा जाता हैं। गोल मोती से उनका मूल्य कम होता हैं।

मान्यता के अनुशार मोती विशेष रुप से अपने प्राकृतिक रूप में प्राप्त होता है। मोती घोंघे में गोल, अण्डाकार अथवा टेढ़ा-मेढ़ा जैसा भी बनता हैं, वह उसी रूप में उपलब्ध होता हैं।

अन्य रत्नों की भांति इसकी कटिंग तथा पॉलिस आदि नहीं की जाती हैं। मोती को माला में पिरोने के लिए इनमें छिद्र ही किये जाते हैं।

लेकिन आज समय के साथ आधुनिक उपकरणो एवं नवीनतम तकनिको की मदद से मोती को पॉलिस अवश्य किया जाता हैं। यदि किसी मोती का आकार गोल व अंडाकर या टेढ़ा-मेढ़ा होने के उपरांत उसका कोई एक हिस्सा नुकीला हो तो उसे काटकर पॉलिस कर उसकी उपरी परतो को हटा दिया जाता हैं। यह क्रिया सभी नुकीले मोती में संभव नहीं होती कुछ ही मोतीयों में संभव हो पाती हैं।

मोती के लाभ:

- विद्वान ज्योतिषीय के अनुसार जिन लोगों का मन अशांत रहता हैं और जिनको अधिक क्रोध आता है उन्हें मोती धारण करने से विशेष लाभ प्राप्त होते हैं।
- मोती मान की एकाग्रता बढ़ाता हैं एवं मानसिक शांति प्रदान करने मे सहायक होता हैं।
- मोती धारण करने से व्यक्ति को मान-प्रतिष्ठा एवं धन, ऐश्वर्य एवं वैभव की प्राप्ति होती हैं।
- मोती रोगों को नाश करने में भी सहायक होता हैं।
- ज्वर में मोती धारण करना लाभप्रद रहता हैं।
- यह हृदय गति को नियंत्रण करने में सहायक होता हैं।
- मोती आंत्रशोथ, अल्सर एवं पेट एवं आदि बीमारियों में लाभदायी होता हैं।
- ऐसी मान्यता है, कि जो व्यक्ति शुद्ध मोती धारण करते हैं उस पर देवी लक्ष्मी प्रसन्न रहती हैं और उसे धन का अभाव नहीं होता।
- मोती दाम्पत्य सम्बन्ध में सुधार लाने में भी लाभदायक होता हैं।
- धन प्राप्ति के लिए पीले रंग की आभा वाला मोती धारण करना लाभदायक होता हैं।
- बौद्धिक क्षमता में वृद्धि के लिए लाल रंग की आभा वाला मोती धारण करना लाभदायक होता हैं।
- मान-सम्मान एवं प्रसिद्धि के लिये सफेद रंग की आभा वाला मोती धारण करना लाभदायक होता हैं।
- ईश्वरीय कृपा प्राप्ति के लिए नीले रंग की आभा वाला मोती धारण करना लाभदायक होता हैं।

मान्यता:

- कांच के गिलास में पानी डाल कर उसमें मोती रखा जाता है. अगर इस पानी से किरण निकल रही हों तो मोती को असली समझा जाता है.
- मिट्टी के बरतन में गौमूत्र डालकर उसमें मोती रखा जाता है. रातभर मोती को इसी बरतन में रखा जाता है. सुबह मोती को देखा जाता है. मोती पर इस उपाय का कोई प्रभाव नहीं पडा हों और मोती अंखड हों तो मोती को असली समझा जाता है.
- मोती को अनाज के भूसे से जोर से रगडा जाता है. मोती के नकली होने पर उसका चूरा हो जाता है. मोती पर कोई प्रभाव नहीं पड रहा हों तो यह मोती असली होता है
- इस उपाय के अन्तर्गत मोती को शुद्ध गाढे घी में कुछ देर के लिये रखा जाता है. अगर मोती असली होने पर घी के पिघलने की संभावनाएं बनती हैं।

मोती के दोष

- यदि मोती टूटा हुआ हो, तो एसा मोती पहनने से मन में चंचलता व्याकुलता व कष्ट कि वृद्धि होती हैं।
- यदि मोती में चमक न हो तो उस मोती को धारण करने से निर्धनता आती हैं।

- यदि मोती में गड्ढा हो, तो एसा मोती स्वास्थय एवं धन सम्पदा को हानि पहुँचाने वाला होता हैं।
- यदि मोती चोंच के जैसा आकार हो या उस पर दाग-धब्बे हो, तो एसा मोती धारण करने से पुत्र से संबंधित कष्ट होता हैं।
- यदि मोती चपटा हो तो, वह मोती सुख सौभाग्य का नाश करने वाला व चिंता बढाने वाला होता हैं।
- यदि मोती पर छोटे काले दाग तो, एसा मोती धारण करने से स्वास्थय कि हानि होती हैं।
- यदि मोती पर रेखाएं हो तो, एसा मोती धारण करने से यश एवं ऐश्वर्य की हानि होती हैं।
- यदि मोती के चारों तरफ गोल रेखा हो तो, एसा मोती धारण करने से भयवर्धक तथा स्वास्थय व हृदय को हानि पहुँचाने वाला होता हैं।
- यदि मोती पर लहरदार रेखाएं दिखाई देती हो तो, एसा मोती धारण करने से मन में उद्विग्नता व धन कि हानि होती हैं।
- यदि मोती दिखने में लंबा या बेडौल हो तो, एसा मोती धारण करने से बल व बुद्धि की हानि होती हैं।
- यदि मोती पर छाला के समान धब्बे उभरे हो तो, एसा मोती धारण करने से धन-सम्पदा व सौभाग्य का नष्ट करने वाला होता हैं।
- यदि मोती की सतह फटी हुई हो हो तो, एसा मोती धारण करने से नाना प्रकार के कष्ट होते हैं।
- यदि मोती पर काले रंग की आभा युक्त हो तो, एसा मोती धारण करने से अपयश कि प्राप्ति होती हैं।
- यदि मोती तीन कोने वाला हो तो, एसा मोती धारण करने से बल एवं बुद्धि का नाश होता हैं और नपुंसकता की वृद्धि होती हैं।
- यदि मोरी ताम्र वर्ण का हो तो, एसा मोती धारण करने से भाई-बहन व परिवार का नाश होता हैं।
- यदि मोती चार कोणों से युक्त हो तो, एसा मोती धारण करने से पत्नी का नाश होता हैं।
- यदि मोती रक्त वर्ण का हो तो, एसा मोती धारण करने से चारों तरफ से विपदा आन पड़ती हैं।

कितने दिनों में प्रभाव दिखाते हैं रत्न ?

ज्योतिषी मान्यता के अनुसार जिस प्रकार हर रत्न का रंग भिन्न होता हैं उसी प्रकार उसके प्रभाव भी एक दूसरे से भिन्न होता हैं । यदि कोई रत्न शीघ्र अपना प्रभाव दिखाता हैं तो कोई मंद गति से थोड़ा विलंब से अपना प्रभाव दिखाता हैं। विद्वानों ने अपने अनुभवों से पाया हैं की कौन सा रत्न शीघ्र व कौन सा विलंब से अपना प्रभाव दिखाता हैं।

- ❖ माणिक्य 28 दिनों में
- ❖ मोती 2 दिनों में
- ❖ मूंगा 18 दिनों में
- ❖ पन्ना 5 दिनों में
- ❖ पुखराज 12 दिनों में
- ❖ नीलम 4 दिनों में
- ❖ हीरा 24 दिनों में
- ❖ गोमेद 30 दिनों में
- ❖ लहसुनिया 30 दिनों में

रत्नों का प्रभाव रत्न की गुणवत्ता पर भी निर्भर करता हैं। साधारणतः उत्तम गुणवत्ता का रत्न शीघ्र प्रभाव दिखाता हैं तो मध्यम या उस्से कम गुणवत्ता का रत्न विलंब से प्रभावी होता हैं।

मूंगा

चिंतन जोशी

मंगल का रत्न मूंगा मंगल ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं।

मूंगे को मंगल का रत्न माना गया है।

मूंगे को विभिन्न भाषाओ मे निम्न लिखित नामो से जाना जात है।

हिन्दी मे :- मूंगा

सस्कृत मे :- विद्रूम, लालमणि, प्रवाल, रत्नांग, अंगारक मणि, भौम रत्नक, अम्भोदिपल्लव आदि नाम से जाना जाता हैं।

फ़ारसी मे :- मिरजान, मिरंगा, मिरंग, मरजां

अंग्रेजी :- कोरल, रेड कोरल

मूंगा मुख्यत लाल, सिंदूरी, गेरूआ, सफेद, काला आदि मिलते-जुलते रंग में पाया जाता हैं। मूंगा रत्न चमकदार व कोणदार होता हैं। मूंगे का वजन औसत से अधिक होता हैं। मूंगा एक जैविक रत्न होता है।

मूंगे का जन्म:

मूंगा समुद्र से मिलने वाला रत्न हैं। यह जैविक रत्न हैं जो समुद्र में एक विशेष प्रकार के कीड़े होते हैं जो अपने लिए घर बनाते हैं। जो मूंगे का पौधा या बैल के नाम से जाना जाता हैं, जिसे मूंगा चट्टाने भी कहते हैं। मूंगे का पौधा केवल शाखाओं से युक्त होता हैं, जिस में पत्ते नहीं होते।

मूंगे का एक पौधा अंदाजन एक-दो फुट ऊंचा और लगभग एक इंच मोटा होता है। कुछ दुर्लभ मूंगे कभी-कभी इस्से अधिक उचाई और चौडाई में प्राप्त होते हैं।

रासायनिक संरचना से मूंगा कैल्सियम कार्बोनेट का एक घटक होता हैं। मूंगे का पौधा जब परिपक्व हो जाता हैं, तब उसे समुद्र से निकालकर बाजार में कटाई के लिये आता हैं और उसे विभिन्न आकार और साईज़ में काटा जाता है।

समुद्र में कम गहराई पर प्राप्त मूंगे का रंग गहरा होता हैं और समुद्र में मूंगा जितनी गहराई पर प्राप्त होता है, उसका रंग उतना ही फीका होता जाता हैं।

जानकारो के मतानुशार भूमध्यसागर के आस-पास के द्वीपों एवं देश अल्जीरिया, ट्यूनीदिया, कारडीनिया, सिसली, ईरान, हिंद महासागर, स्पेन, इटली तथा जापान में प्राप्त होता है।

इटली से प्राप्त मूंगा गहरे लाल रंग का होता है जिसे इटैलियन मूंगा कहा जाता है। सर्वोत्तम मूंगा जापान का होता है जिसे जापानी मूंगे के कहां जाता हैं।

मूंगा से लाभ:

- एक उत्तम मूंगे में विलक्षण शक्तियां समाहित होती हैं। इस कारण यह धारणकर्ता की धैर्य शक्ति में वृद्धि करता हैं।
- मूंगा शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए विशेष लाभदायक होता हैं।
- स्वप्न भय, बूरी नज़र रे रक्षा, भूत-प्रेत आदि का भय नहीं होता हैं।
- जिन बच्चों को बार-बार नज़र लगती हों उनके गलें में छोटा 2-3 रत्ती का मूंगा गले में पहनाना चाहिए।
- मूंगा धारण करने से रक्त की शुद्धि और रक्त की वृद्धि होती हैं।
- हृदय रोगों में मूंगा लाभदायक होता हैं।
- मूंगे की माला को जाप करने के लिये भी प्रयोग किया जाता है.
- मूंगा धारण करने से साहस और वीरता का संचार होता हैं।
- मूंगे का सीधा प्रभाव मनुष्य के मांस एवं रक्त पर पड़ता हैं।

- यह शरीर के रक्त से विशेष प्रकार के विटामिन बनाता हैं।
- विद्वानो के अनुसार सुहागिन स्त्रियों के मूंगा धारण करने से अखंड सौभाग्य प्राप्त होता हैं।
- लोक मान्यताओं के अनुसार मूंगा धारणकर्ता पर यदि कोई रोग का संकट आने वाला हो तो मूंगे का रंग बदलजाता हैं, एवं रोग शांत होने पर मूंगा पुनः वास्तविक रंग का हो जाता हैं।
- बौद्ध धर्म के विद्वानो के मत से यदि कोई मानसिक रोग से पीडित हो तो मूंगा धारण करने से यह रोग
- को दूर करने वाला हैं। मूंगा व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता में वृद्धि करने वाला हैं। मूंगा रक्त स्राव को रोकने में विशेष लाभकारी होता हैं।

रोग और मूंगा:

- मूंगा बहुमूल्य औषधी के रुप में भी प्रयोग किया जाता हैं।
- मूंगेकी भस्म का सेवन शारीरिक बलमें वृद्धि करता हैं।
- उदर संबन्धी रोगों में भी इसका सेवन लाभदायक होता हैं।
- मूंगे को रात में जल में डूबा कर रखकर सुबह इस जल को आंखों में लगाने से नेत्र ज्योति तेज होती हैं।
- पीलिया, मिरगी व हृदय रोग में भी मूंगे की भस्म का सेवन लाभकारी रहता हैं।
- बवासीर में मूंगा अत्यंत लाभदायक होता हैं। जानकारो के मतानुशार यदि पुराना बवासीर हो तो लगभग एक मास हर दिन रात्री में मूंगे को पानी में रात भर डूबा कर रखदें उस पानी को सुबह पीने से बवासीर जड़ से समाप्त हो जाता हैं।

मान्यता:

- मूंगा अन्य रत्नों की अपेक्षा चिकना होता है तथा हाथ में लेने पर फिसलता है।
- असली मूंगे को रक्त में रखने से उसके चारों ओर रक्त जम जाता है।
- असली मूंगे पर पानी की बूंद रखने से बूंद मूंगे पर बनी रहती है, फैलती नहीं हैं।
- असली मूंगे पर हाइड्रोक्लोरिक एसिड डालने से उसकी सतह पर झाग उठने लगते हैं।
- काले मूंगे पर हाइड्रोक्लोरिक एसिड का कोई प्रभाव नहीं होता।
- असली मूंगा आग में डालने से जल जाता है। और उसमें से बाल जलने के समान गंध आती है।

मूंगे के दोष

- यदि मूंगे में गड्ढा हो तो वह जीवन साथी के लिये प्राण घातक होता हैं।
- यदि मूंगे में काले छींडे या धब्बे हो तो धारण कर्ता का स्वास्थ्य क्षीण होता हैं।
- यदि मूंगे में सफेद छींडे या धब्बे हो तो धन का नाश करने वाला होता हैं।
- राख के समान रंग का मूंगा धारण करने से आकस्मिक धन हानी, चोरी-लूट आदि में धन नाश होता हैं।
- जिस मूंगे का एक कोना कटा हो एसा मूंगा संतान के लिए हानिकारक होता हैं।
- फटा हुवा मूंगा धारण करने से स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं होने लगती हैं।
- दो या दो से अधिक रंग का मूंगा धारण करना धन-संपत्ति के लिए हानी कारक होता हैं।

पन्ना

✍ चिंतन जोशी

बुध का रत्न पन्ना बुध ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं।

पन्ना को बुध का रत्न माना गया है। पन्ना बुध ग्रह का प्रतिनिधि रत्न माना जाता है

इसे विभिन्न नामों से पुकारा जाता है-

हिन्दी मे :- पन्ना

सस्कृत मे :- पन्ना, मरकत, पाचि, गुरुत्मत, हरितमणि, गरुडांकित गरतारि, सौपर्णि, गरुड़ोदूर्गीर्ण आदि नाम से जाना जाता हैं।

फ़ारसी मे :- जमुईद, जमरन,

अंग्रेजी :- एमराल्ड

पन्ना रत्न को अति प्राचीन बहुप्रचलित व मूल्यवान माना जाता हैं। पन्ना मूल रुप से बैरूज जाति के पत्थर में से एक विशिष्ठ जाति का पत्थर होता हैं। उत्तम गुणो वाला पन्ना हरी मखमली घास के समान अति सुन्दर हरे रंग का होता हैं। पन्ना गहरे हरे रंग से लेकर हल्के हरे रंग का होता हैं। जानकारो की माने तो पन्ना पीले व गुलाबी रंग का भी पाया जाता हैं। लेकिन गहरे हरें रंग के पन्न सर्वश्रेष्ठ होते हैं।

पन्ना भारत में अधिकतर अजमेर व उदयपुर के अलाव अन्यस्थानो से प्राप्त होता हैं। विदेशों में पन्ना रुस, पाकिस्तान, कोलम्बिया (अमेरिका), ब्राजील, रोडेशिया(अफ्रीका), मिस्र, सेन्डेवान(अफ्रीका), मेडागास्कर आदि स्थानों से प्राप्त होता हैं।

कोलम्बिया के पन्ना की मांग आज बाजारो में सर्वाधिक हैं। पन्ना पारदर्शी और अपारदर्शी दोनों तरह के होते है। कम मूल्य के पारदर्शी पन्ना रत्न में प्रायः बादल जैसा रेशा या हल्का-सा जाला होता हैं, दोष रहित पन्ना कम ही प्राप्त होते हैं इस लिये दोष रहित पन्ना का मूल्य अंतराष्ट्रित बाजारो में अधिक होता हैं।

पन्ना मुख्यतः पांच रंगों में पाया जाता है

1. मयूरपंख के रंग के समान रंग का
2. हरे पानी के रंग के समान रंग का
3. सरसों के पुष्प के समान रंग का
4. हल्का शेन्डूल पुष्प के समान रंग का
5. तोते के पंख के समान हरे रंग का

पन्ना धारण करने से लाभ:

- पन्ने का विशेष गुण हैं की वह धारण कर्ता में उत्तेजना एवं मादक भाव पैदा करता हैं।
- इस लिये पूरातन काल में राजा-महाराजा पन्ने के बने गिलासों में शराब पीया करते थे एसी मान्यता हैं की पन्ने के बने गिलासों शराब पीने से शराब का नशा कई गुना बढ़ जाता हैं।
- पन्ना धारण करने से नेत्ररोग एवं ज्वरनाशक होता हैं।
- पन्ना सन्निपात, दमा, फोडे आदि व्याधियों को को दूर करता हैं।
- पन्ना धारण कर्ता के शरीर में बल एवं वीर्य की वृद्धि करता हैं।
- पन्ना धारण करने से व्यक्ति का चंचल चित्त शांत व संयमित हो जाता हैं। जिससे व्यक्ति को मानसिक शांति प्राप्त होती हैं और व्यक्ति का मन एकाग्र हो जाता है।
- पन्ना काम, क्रोध आदि विकारों को शांत कर व्यक्ति को असीम सुख शान्ति प्रदान करता हैं।
- विद्या अध्ययन से जुड़े व्यक्ति को मन की उत्तम एकाग्रता एवं कुशाग्र बुद्धि की प्राप्ति हेतु पन्ना अवश्य धारण करना चाहिए।

मान्यता:

- पन्ना की और देखने से आँखों को शीतलता महसूस होती हैं।
- असली पन्ने को लकड़ी पर रगड़ने से इसकी चमक में वृद्धि होती है।
- असली पन्ने पर पानी की बूंद रखने से बूंद पन्ना पर बनी रहती है, फैलती नहीं हैं।
- इसमें भंगुरता होने के कारण यह जोर से ठोकर लगने पर या गिरने से टूट सकता है।
- पन्ना को सूर्य की रोशनी मे देखने से हरे रंग की छाया निकलती है |
- कांच के गिलास में पानी भर कर पन्ना को इस गिलास में डाल देने से पानी से हरे रंग की किरणे स्फूरीत होती हैं।

रोग और पन्ना:

- पन्ना धारण करने से शारीरिक बल एवं सौदर्य में वृद्धि होती हैं।
- पन्ना बुखार, उल्टी, विष, बवासीर इत्यादि रोगो में अति लाभदायक हैं।
- पथरी, मूत्र रोग आदि में पन्ना की भस्म लाभदायक होती हैं।

पन्ना के दोष

- विद्वानो के मत से पन्ना में विशेष कर निम्न दोष पाए जाते हैं, अतः दोष-युक्त पन्ना कभी भी धारण नहीं करना चाहिए। दोष युक्त पन्ना धारण करने से लाभ के स्थान पर हानि हो सकती हैं।
- जिस पन्ने का रंग सोने के समान हो या उसका मुख पीले रंग का हो, तो इस प्रकार के पन्ना को धारण करने से सभी प्रकार से हानिकारक सिद्ध होता हैं।
- जिस पन्ने में रक्त वर्ण के लाल छींटे हो ऎसा पन्ना धारण करने से सुख-सम्पति को नष्ट हो जाती हैं।
- शहद के रंग के समान रंग वाला पन्ना धारण करना माता-पिता के लिए हानिकारक होता हैं।
- जिस पन्ने में पीले रंग के छींटे हो ऎसा पन्ना धारण करने से संतान पक्ष के लिए हानिकारक होता हैं।
- जिस पन्ने में दो से अशिक रंग हो, एसा पन्ना धारण करने से व्यक्ति के बल, वीर्य और बुद्धि का नाश करने वाला होता हैं।
- जिस पन्ने में जाल जैसी रेखाओं का समूह हो ऎसा पन्ना धारण करना स्वास्थ्य के लिए हानि होता हैं।
- जो पन्ना देखने में चमकहीन हो, उल्टा देखने से सुन्न सा उदास या चमकहीन दिखाई देता हों, ऎसा पन्ना धारण करने से धनहानि होती हैं।
- जिस पन्ने में छोटी-छोटी टूटी हुई धारियों दिखे, ऎसा पन्ना धारण करने से वंशवृद्धि हेतु हानि करता हैं।
- जिस पन्ने में गड्ढा हो, ऎसा पन्ना धारण करने से आकस्मिक दुर्घट्ना होने की संभावना को बढाता हैं।
- जिस पन्ने में काले धब्बे दिखाई देते हों, ऎसा पन्ना धारण करना स्त्री के लिए हानिकारक होता हैं।
- जिस पन्ने सीधी रेखा दिखाई देते हों, ऎसा पन्ना धारण करना धन का करने वाला होता हैं।
- जिस पन्ने को देख ने से वह खुरदरा दिखाई देता हो या उसका रंग फटा-फटा सा दिखाई देता हो, ऎसा पना धारण करने से हानि होती हैं।

पुखराज

✍ चिंतन जोशी

बृहस्पति (गुरु) का रत्न पुखराज गुरु ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं। पुखराज को गुरु का रत्न माना गया है। पुखराज एक बहुमूल्य रत्न हैं।

हिन्दी मे :- पुखराज

सस्कृत मे :- पुष्पराज, गुरुरत्न, गुरु वल्लभ, पुष्पराग, पीतमणि, पीतरक्त मणि, वाचस्पति-वल्लभ आदि नाम से जाना जाता हैं।

फ़ारसी मे :- याकूत

अंग्रेजी :- सेफायर

प्राप्ति स्थान:

जानकारो के मत से पुखराज का प्राप्ति स्थान भारत में आसाम, अन्य देशो में बर्मा, सीलोन, तुर्किस्तान, ईरान, ब्राज़ील, यूराल आदि देशो से पुखराज प्राप्त होते हैं। अंतराष्ट्रिय बाजारों में सीलोन व बर्मा के पुखराज की मांग सबसे अधिक मानी जाती हैं।

पुखराज रत्न को विद्वान ग्रंथकारो नें सभी रत्नों का राजा हैं। पुखराज पीले, सफ़ेद और नीले रंगों का होता हैं। एसी मान्यता हैं की फूलो के जितने रंग होते हैं, पुखराज भी उतने ही रंग में पाया जाता हैं। पीले रंग का पुखराज सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

स्वर्णमय आभायुक्त स्वच्छ, पारदर्शक और वजनदार पुखराज दुर्लभ माना जाता हैं।

विद्वानो के मत से उत्तम पुखराज धारण करने वाले को मनसिक शान्ति, धन की प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ, दिर्धायु, मान-सम्मान, बुद्धि-बल की वृद्धि होती हैं एवं दौलत-शोहरत प्राप्त होती हैं व्यक्ति की प्रतिष्ठा निरंतर बढती हैं। पौराणिक मान्यताके अनुशार यदि किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, उस स्थान पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष का प्रभाव उतर जाता हैं।

पुखराज के लाभ

- पुखराज धारण करने से कन्याओं को वैवाहिक सुख शीध्र प्राप्त होता हैं एवं पूर्ण वैवाहिक सुख प्राप्त होता हैं।
- बृहस्पति को पुत्र संतान कारक माना गया है, अतः पुखराज धारण करने पुत्र संतान की प्राप्ति होती हैं।
- धर्म-कर्म व आध्यात्मिक उन्नति हेतु पुखराज धारण करना अत्यंत लाभदायक होता हैं।
- पुखराज धारण करने से भूत-प्रेत आदि आसुरी बाधाओं का निवारण होता हैं।
- पुखराज को धारण करने से वाणी सम्बन्धी दोष दूर होते हैं एवं गले की पीड़ा से राहत मिलती हैं।
- पुखराज पीलिया, तिल्ली, पांडू रोग, खांसी, दन्त रोग, अल्सर, सन्निपात, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि आदि कई प्रकार के रोगों के ईलाज के लिए प्रयोग किया जाता रहा हैं।
- विद्वान ज्योतिषीयों के मतानुसार यदि किसी कन्या की शादी में विघ्न-बाधा आ रही हो उसे पुखराज धारण कराने से विवाह में बाधा उत्पन्न करने वाले अशुभ योगो का अंत हो जाता हैं अर्थात कन्या की शादी जल्दी हो जाती हैं।
- गुरु ग्रह को जीवनदाता माना गया हैं। गुरु वसा एवं ग्रंथियों से सीधा संबंध रखता है। इस लिये गला रोग, सीने का दर्द, श्वास रोग, वायु विकार, टीबी, ह्रदय रोग में पुखराज धारण करने से लाभप्रद होता है।
- पुखराज पाँच रंगों में पाया जाता है- हल्दी रंग में, केशर/केशरिया, नीबू के छिलके के रंग का, स्वर्ण के रंग का तथा सफेद-पीली झाँई वाला।
- गुरू का रत्न पुखराज हैं। पीले रंग का पुखराज मोटापे को नियंत्रित करने के लिए उत्तम रत्न हैं एवं जिस व्यक्ति

का स्वास्थ्य दुर्बल रहता हों, उन्हें अपनी सेहत में सुधार के लिए पुखराज धारण करना भी लाभप्रद होता हैं। पुखराज धारण करने से रक्तचाप नियंत्रित रहता हैं।

मान्यता:

उत्तम पुखराज वहं हैं जो स्पर्श करन से चिकना लगे, जो हाथ में लेने पर उसका वजन कुछ भारी लगे, जो पारदर्शी हो, जो प्राकृतिक चमक से युक्त हो।

पुखराज को चौबीस घन्टे कच्चे दूध में डूबां कर रखने के बाद यदि उसकी चमक फीकी न पड़े तो समझे पुखराज असली हैं।

पुष्परागं गुरु स्वच्छं स्निग्धं स्थूलं समं मृदु ।
कर्णिकार प्रसूनाभं मसृणं शुभमष्टधा॥

(रसरत्नसमुच्चय अध्याय-४.२४)

अर्थात: जो पुखराज हाथ पर रखने से वजनी (अर्थात: गुरु) हो, देखने में स्निग्ध हो, दाग-धब्बे रहित स्वच्छ हो, आकार में बडा (अर्थात: स्थूल) हो, परत रहित (अर्थात: सम) हो, छूने में मुलायम हो, खिले हुए पीले कण्डिर के फूल के समान आभा हो, कसौटी पर घिसने से रंग और बढा हुवा दिखाई हो एसा पुखराज श्रेष्ठ होता हैं।

निष्प्रभं कर्कशं रूक्षं पीतं श्यामं नतोन्नतम् ।
कपिशं कपिलं पाण्डु पुष्परागं परित्यजेत् ।। रस-४.२५ ।।

पुखराज के दोष:

- दुधिये रंग का पुखराज धारण करने से शरीर पर शस्त्रधात, चोट आदि की आशंकाओं को बढाता हैं।
- जिस पुखराज में चीर- सीधी धारी या लकीर दिखे एसे पुखराज को धारण करने से बंधु-बाँधवों से विरोध उत्पन्न करवाता हैं।
- जिस पुखराज सुन्न हो अर्थात चमकरहित उसे धारण करने से धारण करने वाले के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता हैं।
- जिस पुखराज में लाल रंग के छींटे या धब्बे हो एसे पुखराज को धारण करने से धनधान्य नाशक होता हैं।
- जिस पुखराज में काले रंग के छींटे या धब्बे हो एसे पुखराज को धारण करने से गृहस्थजीवन के लिये नुक्शानदाय सिद्ध होता हैं।
- जिस पुखराज में खड्डा दिखाई देता हो, एसे पुखराज को धारण करने से धन-संपत्ति को नष्ट करने वाला होता हैं।
- जिस पुखराज में जाले दिखाई देता हो, एसे पुखराज को धारण करने से संतान सुख के लिए हानिकारक माना जाता हैं।
- जिस पुखराज में दो रंग हो वह रोग वृद्धि करने वाला माना गया हैं।
- दोषयुक्त पुखराज लाभ के स्थान पर हानि कारता हैं।

हीरा

✍ चिंतन जोशी

शुक्र का रत्न हीरा शुक्र ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं। हीरे को शुक्र का रत्न माना गया है। हीरा एक बहुमूल्य रत्न हैं।

हिन्दी मे :- हीरा

सस्कृत मे :- हीरक, वज्र, भागर्व-प्रिय, मणिवर, पवि, अभेद्‌य, कुलिष, विद्युत, अर्क भिदुर आदि नामो से जाना जाता हैं।

फ़ारसी मे :- अल्मास

अंग्रेजी :- डायमण्ड

हीरा अन्य रत्नो की अपेक्षा सबसे कठोर रत्न हैं। हीरे को अन्य किसी रत्न से खरोंचा नहीं जा सकता। जानकारो के अनुशार हीरा जितना चमकीला और कठोर होता हैं उतना श्रेष्ठ माना जाता हैं।

हीरा मुख्यत: सफेद, पीला , लाल, गुलाबी और काले रंग का होता हैं।

प्राप्ति स्थान:

जब कोयला पृथ्वी के गर्भ में हजारो-लाखों वर्षों दबा रहता हैं उसमें कुछ एक विशेष प्रक्रिया के उपरांत वह कोयला बेशकीमती रत्न हीरे का स्वरुप धारण कर लेता हैं।

हीरे के लाभ

- जानकारो के मत से हीरा का प्राप्ति स्थान मुख्य रूप से भारत, दक्षिण अफ्रीका, अंगोला, नामीबिया, रूस इत्यादि देशो से प्राप्त होते हैं।
- पौराणिक मान्यता के अनुशार हीरा धारण करने से विषैले जीव-जंतुओं का भय नहीं रहता।
- वृद्ध व्यक्ति के हीरा धारण करने से उनके बल एवं साहस में वृद्धि होती हैं।
- कुछ विद्वानो का मत हैं की हीरा धारण करने से भूत-प्रेत आदि पीड़ाएं शांत होती हैं एवं व्यक्ति पर अशुभ टोने-टोटके इत्यादि का प्रभाव नहीं होता हैं।
- हीरा धारण करने से व्यक्ति को सुख, सौभाग्य, ऐश्वर्य, मान-सम्मान, आदि समस्त प्रकार के भौतिक सुख साधनो की प्राप्ति होती हैं।
- जानकारो की माने तो हीरे में वशीकरण करने की अद्‌भुत शक्ति समाहितहोती हैं।
- वंश-वृद्धि हेतु हीरा धारण करना अत्यंत लाभदायक होता हैं।
- हीरा धारण करने से वैवाहिक सुख में वृद्धि होती हैं।
- हीरा धारण करने से धन-धान्य, यश-कीर्ति में वृद्धि होती हैं।
- हीरा धारण करना शुक्र जनित रोगों में अत्यंत लाभदायक होता हैं।
- हीरा धारण करने से स्त्री-पुरुष दोनों के व्यक्तित्व में निखार आता हैं।

स्वास्थ्य:

हीरा धारण करने से दुर्बलता दूर होती हैं। हीरा धारण करने से नंपुसकता, वीर्य विकार, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, मानसिक कमजोरी इत्यादि रोग में लाभ प्राप्त होता हैं। हीरा धारण करने से वीर्य दोष, शीघ्र पतन और जनन अंगों दुर्बलता इत्यादी रोगों का नाशक हैं।

महर्षि शुक्राचार्य के मतानुशार:

न धारयेत् पुत्र कामानारी वज्रम कदाचनः।

अर्थात: जो स्त्रीयां पुत्र संतान की कामना करती उन्हें हीरा नहीं पहनना चाहिए।

इस विषय में विद्वानो के मत में भिन्नता हैं। कुछ विद्वानो का मत शुक्राचार्य जी के पक्षमें हैं तो कुछ विद्वान ज्योतिषी के मतानुशार यदि नियमानुसार कोई

स्त्री त्रिकोण आकार का हीरा धारण करती हैं उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति होती हैं।

अशुभ हीरा धारण करने से विपरित परिणाम प्राप्त होते हैं इस विषय में विद्वानो का मतानुशार:

धारणात् तच्च पापा लक्ष्मी विनाशनम्।

अर्थात: अशुभ हीरा के धारण से लक्ष्मी का विनाश होता है।

"स्वजनविभवजीवितक्षयं जनयति वज्रमनिष्टलक्षणम्।
अशनिविशभयारिनाशनं शुभमुपभोगकरं च भूभृताम्।"

अर्थात: अशुभ व दोषयोक्त हीरा धारण ने से बान्धवों की हानि, वैभव का नाश, जीवन हानि, प्राण नाश आदि भयंकर परिणाम होते हैं।

उत्तम गुणो से युक्त हीरा व्यक्ति को वज्रपात, विषभय, शत्रुभय का नाश करने वाला व मृत्यु भय को दूर करने वाला होता हैं।

शास्त्र कारो नें हीरे के चार गुण माने हैं।

- श्वेत रंग का हीरा सात्विक होता हैं।
- लाल रंग का हीरा तमोगुणी होता हैं।
- पीले रंग का हीरा रजोगुणी होता हैं।
- तथा काले रंग का हीरा शूद्रगुणी होता है।

मान्यता:

- उत्तम हीरे को गर्म पानी, गर्म दूध, या तेल में डाला जाए तो वह उसको शीघ्र ठंडा कर देता हैं।
- शुद्व हीरे पर किसी भी पदार्थ से खरोंच का चिह्न नहीं बना सकते।
- यदि हीरे को धूप में रख दिया जाये तो उसमे से इन्द्रधनुष जैसी किरणे दिखाई देती हैं।
- हीरा अंधेरे में चमकता हैं।
- हीरा धारण करने से युद्ध में शस्त्रघात से रक्षा होती हैं।
- हीरा धारण करने से ज्वर के ताप को भी दूर कर देता है।

दोष:

- जिस हीरे में चमक न हो तो एसे हीरे को धारण करने से धन का नाश होता हैं।
- जिस हीरे का रंग धुँधला, धुएं के समान गंदा हो तो एसे हीरे को धारण करने से वाहन एवं पशुधन हेतु घातक होता हैं।
- जिस हीरे का रंग लाल आभायुक्त हो उसे धारण करने से आर्थिक समस्याएं परेशान करती हैं।
- जिस हीरे में गड्ढा हो एसे हीरे को धारण करने से स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं उत्पन्न होती हैं।
- पीले रंग का हीरा धारण करने से वंश का नाश होता हैं।
- जिस हीरे में कटा हुवा भाग या धार हो, एसे हीरे को धारण करने से चोर भय होता हैं।
- जिस हीरे में अन्य रंग के बिंदु या छींटे हो, उस हीरे को धारण करने से मृत्यु भय होता हैं।
- जिस हीरे में आडी, तिरछी, खडी रेखाएं हो, एसे हीरे को धारण करने से मानसिक शांति भंग होती हैं।
- जिस हीरे में कौएं के पंजे के समान चिह्न हो, उस हीरे को धारण करने से सभी प्रकार से प्रतिकूल होता हैं।

नीलम

✍ चिंतन जोशी

शनि का रत्न नीलम शनि ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं। नीलम को शनि का रत्न माना गया है।

हिन्दी मे :- नीलम, नील मणि,

सस्कृत मे :- नील, महानील, शनिरत्न, शनि प्रिय, नील रत्न, नीलोपान, शोरि रत्न, इन्द्रनील, तृणाशाही आदि नामो से जाना जाता हैं।

फ़ारसी मे :- याकूत, कबूद

अरबी मे :- याकूत-अल-असीर

लेटिन मे :- सेफायरस

अंग्रेजी :- ब्लू सैफायर

वैदिक ज्योतिष शास्त्र में शनि की महादशा या अंतरदशा में शनि के अशुभ प्रभावो को दूर करने के लिए एवं शनि ग्रह के कोप को शांत करने के लिए जानकार ज्योतिषी की सलाह से नीलम धारण करना एक उत्तम उपाय माना जाता हैं।

प्राप्ति स्थान:

भारत में कश्मीर से प्राप्त होने वाले नीलम सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। जो **मयूर नीलम** के नाम से जाने जाते हैं, क्योंकि इस नीलम का रंग मोर की गर्दन के रंग के समान नीला होता हैं। इस के अलावा नीलम का प्राप्ति स्थान मुख्य रूप से श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड, आस्ट्रेलिया, न्यू साउथ वेल्स, अमेरिका, यूरोप, रुस आदि नीलम प्राप्त होते हैं। लेकिन उच्च कोटी के बहुमूल्यवान नीलम श्रीलंका के माने जाते हैं।

नीलम के लाभ

- निलम धारण करने से व्यक्ति को रोग, दोष, दुख-दारिद्रय से मुक्त करदेता हैं।
- निलम धारण करने से व्यक्ति को धन-धान्य, सुख-संपत्ति, बुद्धि, बल, यश, आयु, संपत्ति-संतति की प्राप्ति होती हैं।
- मान्यता के अनुशार नीलम धारण करने से चरित्र स्वच्छ रहता हैं धारण करता में अनैतिकता के गुण जागृत नहीं होते।
- प्रेम में सफलता हेतु नीलम भाग्यवान रत्न माना जाता हैं।
- अनैतिक व पाप कर्मो में लिप्त व्यक्तियों को नीलम विपरीत फल प्रदान करता हैं।
- मन एवं आत्मा की प्रसन्नता हेतु नीलम धारण करना मददगार सिद्ध होता हैं।
- नीलम धारण करने से श्वास, खांसी और पित्त से संबंधित रोगों को शांत करता हैं।

मान्यता:

- गाय के दूध में नीलम डाल दिया जाय तो दूध का रंग नीला हो जाता है।
- कांच के गिलास में पानी भरकर उसमें नीलम रत्न डाल दिया जाय तो पानी से नीले रंग की आभा स्पष्ट निकलती हुई दिखाई देती हैं।
- यदि नीलम को धूप में रखा जाय तो इससे नीले रंग की तीव्र किरणें निकलती दिखाई देती हैं।
- एसी मान्यता हैं की नीलम को विषैले सांप के साथ रखने से सांप मर जाता हैं।
- नीलम धारण करने से भूत-प्रेत आदि आसुरी बाधाओं से छुटकारा मिलता हैं।
- नीलम धारण करने से व्यक्ति भविष्यवाणी करने में समर्थ हो सकता हैं।

- दुष्ट एवं कुकर्म में लिप्त व्यक्ति यदि श्रेष्ठ गुणो वाला नीलम भी धारण करता हैं तो उस नीलम की चमक फिकी हो जाती हैं।
- कुछ विद्वानो का मत हैं की विष प्रभाव को कम करने में नीलम को काफी असरकारक होता हैं।
- चोट या घाव होने पर रक्त प्रवाह रोकने में नीलम सहायक होता हैं।
- नीलम रत्न धारण करने से उसके शुभ-अशुभ प्रभाव कुछ ही घंटों के भीतर प्रकट कर देता हैं।
- नीलम रत्न धारण करने से मुख की कांति तथा नेत्रों की ज्योति में वृद्धि होती हैं।
- नीलम धारण करने के पश्चात रात में बुरे-भयावह स्वप्न दिखाई दें अथवा स्वयं की मुखाकृति में अंतर आ जाय या नेत्र रोग हो जाये अथवा कोई आकस्मिक दुर्घटना, भय, चोरी, रोग या अन्य नुक्शानकारी प्रभाव दिखाई दे तो नीलम को तुरंत उतार देना चाहिए।
- क्रूर कर्म करने वाले व्यक्तियों को हमेशां नीलम धारण करना लाभदायक होता हैं।
- नीलम धारण करने से व्यक्ति में धैर्य व साहस की वृद्धि होती हैं।
- नीलम पहनने से व्यक्ति की कार्य क्षमता बढ़ती हैं व धारणकर्ता को अपनी मेहनतका पूर्ण फल प्राप्त होता हैं।

रोग और नीलम:

नीलम धारण करने से नेत्र रोग, दिमाग की गर्मी, पागलपन, ज्वर, अजीर्ण, उपदंश, खांसी, हिचकी, मुंह से खून आना, उल्टी आदि रोगो में लाभप्राप्त होता हैं।

दोष:

- जिस नीलम में दों से अधिक रंग हो, एसा नीलम धारण करना पत्नी के लिये नुक्शानकारी होता हैं।
- जिस नीलम की चमक फीकी हो, एसा नीलम धारण करने से आत्मिय बंधु/बांधवो का होता हैं।
- जिस नीलम में अन्य रंग के छीटे या धब्बे हो, एसा नीलम धारण करना जीवन में दुःखो से सम्मुखीन करवाता हैं।
- जिस नीलम में चीर या आडी, तिरछी, खडी रेखाएं हो, एसे नीलम को धारण करने से दरिद्रता आती हैं।
- जिस नीलम में स्वेत रंग की रेखा हो, एसा नीलम धारण करने से अस्त्र-शस्त्र के आघात से मृत्यु के योग बनाता हैं।
- जिस नीलम में लाल रंग के छीटे या धब्बे हो, एसा नीलम धारण करना व्यक्ति के स्वास्थ्य, सुख व संतान के लिये हानिकारक होता हैं।
- जिस नीलम का रंग दूधया हो, एसा नीलम धारण करना धन-संपत्ति का नाश करने वाला होता हैं।
- जिस नीलम में गड्ढा हो एसे नीलम को धारण करने से शत्रु से कष्ट प्राप्त होता हैं।
- जिस नीलम में जाल के समान रेखाएं हो एसा नीलम रोग शोक में वृद्धि करने वाला होता हैं।

गोमेद

✍ चिंतन जोशी

राहु का रत्न गोमेद राहु ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं। गोमेद को राहु का रत्न माना गया है।

हिन्दी मे:- गोमेद, गोमेद मणि,
सस्कृत मे:- स्वर भानु, पीत रत्न, राहु रत्न, गोमेद, गौमेदक, त्रणवर, तापोमणि, पिंग स्फटिक आदि नामो से जाना जाता हैं।
अरबी मे:- हजार यमनी
लेटिन मे:- जारगून
अंग्रेजी:- हैसोनाईट, सिनोमन्स्टोन,जेसुन्थ आदि नाम से जाना जाता हैं।

गोमेद का रंग शहद जैसा होता है। शास्त्रोक्त मत से गोमेद का रंग गाय के मूत्र के रंग के समान होने से इसे गोमेद कहा जाता है।

प्राप्ति स्थान:

श्रीलंका, भारत, थाईदेश, कंबोडिया, मैडागास्कर।

गोमेद के लाभ

- गोमेद धारण करने से भ्रम जनित रोगों का नाश होता हैं।
- गोमेद धारण करने व्यक्ति की निर्णय लेने की शक्ति प्रबल होती हैं।
- गोमेद धारण करने से शत्रु पक्ष परास्त्र होता हैं। विजय प्राप्त होती हैं।
- गोमेद धारण करने से नशा, बुरी आदत, परस्त्री/परपुरुष में आसक्ति कम होती हैं।
- गोमेद धारण करने से पाचन शक्ति में सुधार होता हैं।
- गोमेद धारण करने से अभक्ष्य खाद्य पदार्थो के सेवन करने की आदत से छुटकारा मिलता हैं।
- गोमेद धारण करने से विवाह बाधाएं दूर होती हैं एवं शीघ्र शादी के योग बनते हैं।
- यदि संतान प्राप्ति में विलम्ब हो रहा हो तो गोमेद धारण करने से शीघ्र संतान प्राप्ति के योग बनते हैं।
- गोमेद में लोहे का अंश अधिक होने से गोमेद को चुंबक खींचता हैं।
- गोमेद धारण करने से हृदय, चर्म, नेत्र, पैरों का दर्द एवं मानसिक रोगों का शमन होता हैं।
- गोमेद धारण करने से नज़र दोष, भूत-प्रेत, जादू-टोने आदि से सुरक्षा प्रदान करता हैं।
- एक श्रेष्ठ गोमेद में अद्भुत शक्तियां समाई होती हैं जिससे व्यक्ति के जीवन की विभिन्न परेशानियों को दूर कर सकता हैं।

मान्यता:

- असली गोमेद को उसके रंग एवं चमक से पहचाना जा सकता हैं।
- गोमेद रत्न को जब तेज रोशनी में देखने में उसका रंग गोमूत्र जैसा दिखता हैं।
- श्रेष्ठ शुद्ध गोमेद चिकना, चमकीला एवं सुन्दर दिखता हैं।
- जो लोग प्रायः अस्वस्थ्य रहते हैं कोई ना कोई बिमारी लगी रहती हैं उन्हें गोमेद पहनने से स्वास्थ्य लाभ मिलता हैं।
- गोमेद धारण करने से पाचन सम्बन्धी रोग, त्वचा रोग, क्षय रोग तथा कफ-पित्त को भी यह संतुलित रखता हैं।
- गोमेद धारण करने से व्यक्ति को मान-सम्मान एवं धन की प्राप्ति होती हैं।

दोष:

- जिस गोमेद में चीर या आडी, तिरछी, खडी रेखाएं हो, एसे गोमेद को धारण करने से रक्त विकार होता हैं।
- जिस गोमेद में परते दिखाई देती हो, एसे गोमेद को धारण करने से पशुधन की हानि होती हैं।
- जिस गोमेद अन्य रंग के छीटे या धब्बे हो, एसा गोमेद को धारण करने से आकस्मिक मृत्यु के योग बनाता हैं।
- जिस गोमेद में काले रंग के छीटे या धब्बे हो, एसा गोमेद धारण करना स्री के लिये हानिकारक होता हैं।
- जिस गोमेद की चमक फीकी हो, एसा गोमेद धारण करने से लकवा ग्रस्त होने की संभावना बनाता हैं।
- जिस गोमेद में लाल रंग के छीटे या धब्बे हो, एसा गोमेद धारण करना संतान के लिये हानिकारक होता हैं।
- जिस गोमेद को स्पर्श करने प वह रुखा व खुरदरा लगता हो, एसा गोमेद धारण करने से कार्य उद्देश्य की पूर्ति में विलम्ब होता हैं।
- जिस गोमेद में अबरक के समान चमक दिखाई देती हो, एसा गोमेद धारण करने से धन का नाश होता हैं।
- जिस गोमेद में गड्ढा हो एसे गोमेद को धारण करने से वाहन एवं पशुधन का नाश होता हैं।
- जिस गोमेद का रंग रक्त के समान लाल हो, एसा गोमेद धारण करने से विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।
- जिस गोमेद में सफेद रंग के छीटे या धब्बे हो, एसा गोमेद धारण करने से रोग-शोक में वृद्धि करने वाला होता हैं।

***

लहसुनिया

✍ चिंतन जोशी

केतु का रत्न लहसुनिया केतु ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं। लहसुनिया को केतु का रत्न माना गया है।

हिन्दी मे :- लहसुनिया
सस्कृत मे :- विदुराज, वैदूर्य, केतु रत्न, विडालाक्ष, वायज, अभ्ररोह, राष्टुक, मेघखरांकुर, बालसूर्य आदि नामो से जाना जाता हैं।
अरबी मे :- एन अलहिर
अंग्रेजी :- केटस आई

वैदूर्य रत्न की उपरी सतह पर सफेद रंग का सूत्र या धारी दिखाई देती हैं। यह धारी वैदूर्य को हिलाने-डुलाने पर हिलती हुई प्रतीत होती है। सामान्यतः वैदूर्य को देखने से यह बिल्ली की आंख के समान दिखाई देता हैं इस लिये इसे अंग्रजी केटस आई कहां जाता हैं।

प्राप्ति स्थान:

लहसुनिया मुख्यतः भारत, श्रीलंका, ब्राजील, अमेरिका, युराल, चीन तथा बर्मा में प्राप्त होता है। सर्वश्रेष्ठ लहसुनिया भारत में उड़ीसा से प्राप्त होते है। उड़ीसा व श्रीलंका से प्राप्त होने वाले लहसुनिया की अंतराष्ट्रिय बाजारो में अधिक मांग रहती है।

लहसुनिया के लाभ

- वैदूर्य रत्न धारण करने से यह वायु-गोला तथा पित्त जन्य रोगों का नाशक होता हैं।
- जिन व्यक्तियों को सरकारी कार्यों में बाधाएं आरही हो उन्हें वैदूर्य रत्न धारण करने से कार्य में सफलता प्राप्त होती हैं।
- वैदूर्य रत्न धारण करने से आकस्मिक दुर्धटना आदि से रक्षा होती हैं।
- लहसुनिया धारण करने से दुःख दरिद्रता, आधि-व्याधि का अंत होता हैं।
- लहसुनिया धारण करने से धारण कर्ता को भूत-प्रेत आदि बाधाएं पीड़ा नहीं करती हैं।
- लहसुनिया धारण करने से नेत्र रोग में लाभदायक होता हैं।
- लहसुनिया धारण करने से पांडुरोग में शरीर का पीलापन शीघ्र कम होने लगता हैं।
- प्रसव के समय गर्भवती स्त्री के प्रसव पीड़ा में बालों में लहसुनिया बांधने से प्रसव शीध्र हो जाता हैं।
- लहसुनिया धारण करने से श्वांस रोग, न्यूमोनिया आदि रोगो में विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।
- लहसुनिया धारण करने से उसका शुभ-अशुभ परिणाम शीघ्र दिखाता हैं।
- लहसुनिया धारण करने से पापों का नाश होता हैं।
- लहसुनिया धारण करने से बुरी नजर से बचाता हैं।
- लहसुनिया धारण करने से रक्त से सम्बंधित रोग व दोष दूर होते हैं।
- लहसुनिया धारण करने से फोड़े-फुंदी आदि नहीं होते।

मान्यता:

- उत्तम गुणो वाले लहसुनिया में अधिक चमकीलापन तथा चिकनाहट होती हैं।
- लहसुनिया वजन में सामान्य से ज्यादा वजनदार प्रतीत होता हैं।
- लहसुनिया की उपरी सतह पर सफेद रंग का सूत के समान धारी होती हैं।
- लहसुनिया को कपड़े पर रगड़ने से इसकी चमक में वृद्धि होती हैं।

दोष:

- जिस वैदूर्य में अन्य रंग के छीटे या धब्बे हो, एसे वैदूर्य को धारण करने से रोगकारक होता हैं।
- जिस वैदूर्य में गड्ढा हो एसे वैदूर्य को धारण करने से स्वास्थ्य के लिए हाकिकारक होता हैं।
- जिस वैदूर्य में चीर या आडी, तिरछी, खडी रेखाएं हो, एसे वैदूर्य को धारण करना क्षतिकारक होता हैं।
- जिस वैदूर्य अबरक जैसी आभा दिखाई देती हो, एसे वैदूर्य को धारण करना वर्जित माना गया हैं।
- जिस वैदूर्य में चमक न हों देखने में उसकी आभा फीकी नजर आती हों, एसे वैदूर्य को धारण करने से धन का नाश होता हैं।
- जो वैदूर्य खंडित अर्थात टूटा-फूटा हो, छेद हो, एसा वैदूर्य धारण करने से शत्रु भय उत्पन्न होता हैं।
- जिस वैदूर्य में लाल रंग के छीटे या धब्बे हो, उसे धारण करने से राजभय, कारावास जाने के योग बनाता हैं।
- जिस वैदूर्य में सफेद रंग के छीटे या धब्बे हो, एसा वैदूर्य धारण करने से आयु क्षिण करने वाला होता हैं।
- जिस वैदूर्य में चीर या आडी, तिरछी, खडी रेखाएं हो, एसे वैदूर्य को धारण करने से शत्रु पक्ष से हानि होती हैं।
- जिस वैदूर्य में ज्वाला दिखाई देती हो, एसे वैदूर्य को धारण करने से पत्नी को हानि होती हैं।
- जिस वैदूर्य में शहद के रंग जैसे छींटे या धब्बे दिखाई देते हो, एसा वैदूर्य धारण करने से राजकीय कार्यो में रुकावटे पैदा करता हैं।
- जिस वैदूर्य में पांच से अधिक सूत या धारिया दिखाई देती हो, एसा वैदूर्य धारण करने से अनिष्टकारी होता हैं।
- जिस वैदूर्य में दिखने वाला सूत या धारिया उबड़-खाबड़ या टूटी हुई दिखाई देती हो, एसा वैदूर्य धारण करने से नेत्र रोग होता हैं।

कनकधारा यंत्र

आज के युग में हर व्यक्ति अतिशीघ्र समृद्ध बनना चाहता हैं। धन प्राप्ति हेतु प्राण-प्रतिष्ठित कनकधारा यंत्र के सामने बैठकर कनकधारा स्तोत्र का पाठ करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। इस कनकधारा यंत्र कि पूजा अर्चना करने से ऋण और दरिद्रता से शीघ्र मुक्ति मिलती हैं। व्यापार में उन्नति होती हैं, बेरोजगार को रोजगार प्राप्ति होती हैं।

श्री आदि शंकराचार्य द्वारा कनकधारा स्तोत्र कि रचना कुछ इस प्रकार कि हैं, जिसके श्रवण एवं पठन करने से आस-पास के वायुमंडल में विशेष अलौकिक दिव्य उर्जा उत्पन्न होती हैं। ठिक उसी प्रकार से कनकधारा यंत्र अत्यंत दुर्लभ यंत्रो में से एक यंत्र हैं जिसे मां लक्ष्मी कि प्राप्ति हेतु अचूक प्रभावा शाली माना गया हैं। कनकधारा यंत्र को विद्वानो ने स्वयंसिद्ध तथा सभी प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करने में समर्थ माना हैं। जगद्गुरु शंकराचार्य ने दरिद्र ब्राह्मण के घर कनकधारा स्तोत्र के पाठ से स्वर्ण वर्षा कराने का उल्लेख ग्रंथ शंकर दिग्विजय में मिलता हैं।

कनकधारा मंत्र:- *ॐ वं श्रीं वं ऐं ह्रीं-श्रीं क्लीं कनक धारयै स्वाहा*

लक्ष्मीकुबेर धन आकर्षण यंत्र

श्रीयंत्र को समस्त प्रकार के श्रीयंत्रों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है और कुबेर यंत्र को देवताओं में धन के देवता कुबेर जी का सबसे प्रभावशाली यंत्र माना जाता हैं इस यंत्र के पूजन से अक्षय धन कोष की प्राप्ति होती हैं और मनुष्य के लिए नवीन आय के स्रोत बनते हैं। प्रतिदिन लक्ष्मीकुबेर धन आकर्षण यंत्र का पूजन एवं दर्शन करने से व्यक्ति को जीवन में धन और ऐश्वर्य की कभी भी कमी नहीं होती है। विद्वानों ने अपने अनुभवों में पाया हैं की जो मनुष्य अपने गृहस्थ जीवन में धन, वैभव, ऐश्वर्य, सुख-समृद्धि, व्यापार में सफलता, विदेश लाभ, राजनीति में सफलता, नौकरी में पदौन्न्ति आदि की कामना रखता हैं तो उसके लिए श्री लक्ष्मीकुबेर धन आकर्षण यंत्र सर्वश्रेष यंत्र हैं। मनुष्य को लक्ष्मीकुबेर धन आकर्षण यंत्र के पूजन से जीवन के सभी क्षेत्र में सुख-समृद्धि एवं सौभाग्य की प्राप्त होने लगती है। यदि किसी व्यक्ति को व्यापार में यदि व्यापार में पूर्ण परिश्रम एवं लगने से कार्य करने पर भी अधिक लाभ की प्राप्ति नहीं हो रही हो, व्यापार मंदा चल रहा हो या बार-बार लाभ के स्थान पर हानि हो रही हो तो उसे लक्ष्मीकुबेर धन आकर्षण यंत्र को अवश्य अपने व्यवसायीक स्थान पर स्थापित करना चाहिए। जिससे व्यापार में बार-बार होने वाले घाटे या नुकसान से शीघ्र ही लाभ प्राप्त होने के योग बनने लगते हैं।

गुरुत्व कार्यालय संपर्क :

91+ 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com



फ़िरोजा एक विलक्षण रत्न

✍ चिंतन जोशी

फ़िरोजा शब्द अंदाज से 16 वीं सदी के आसपास फ्रेंच भाषा के तुर्की (Turquois) से प्राप्त हुवा था या गहरे नीले रंग का पत्थर (pierre turquin) से प्राप्त हुवा होगा या, इस के नाम मे बहोत सारे सहस्य है! नकली फ़िरोजा के अस्तित्व लागू होने से असली फ़िरोजा का महत्व कम हो गया है, फ़िरोजा को कई नामों से जाना जाता है,

खनिज समूह: मरकत समूह.

प्राप्ति स्थान:

फ़िरोजा के प्राप्ति स्थान बहोत सारे है। जिनमें से कुछ ही का उल्लेख वाणिज्यिक के लिए उत्तम होता है।, जिसकी गुणवत्ता और प्रभाव अच्छा हो उस का उल्लेख किया जारहा है। ईरान के मा'डन (Ma'dan) से ४५-५० किमी उत्तर पश्चिम में नेइशाबुर (निशापुर) जिसे भारत मे निशापुरी के नाम से जाना जता है। निशापुरी सबसे अच्छा होता है इस्का रंग एवं प्रभाव बाकी जगाओ से प्राप्त से उत्तम होता है। दक्षिण ऑस्ट्रेलिया. में चीन, ब्राजील, मेक्सिको, संयुक्त राज्य अमरीका, इंग्लैंड, बेल्जियम और भी बहोत सारी जगाहो से प्राप्त होता है।
प्राकृतिक सुंदर फ़िरोजा फ़ायदेमंद है।
मूल यह एक 100% प्राकृतिक रत्न पत्थर है। (खनन/खादान के माध्यम से प्राप्त)

फ़िरोजा के लाभ

- फ़िरोजा को एक आध्यात्मिक रूप में सहायता हेतु प्रयोग किया जाता है।
- किसी भी स्थिति में, जहां स्पस्ट बात करने की आवश्यक है, वहा व्यक्ति की बात मे एक प्रकार के गुण उत्पन्न करती है जो उसे दूसरो से अलग और ज्यदा स्पस्ट सुवक्ता बनने मे मदद करता है।
- व्यक्ति को दोस्तों के बीच खुले विचार, प्यार और नि:स्वार्थ संबंध के प्रवाह को सक्षम करने के लिए, फ़िरोजा उपयोगकर्ता के अंदर समग्र मानसिक स्थिति को बढ़ाने मे, सकारात्मक सोच, संपूर्णता, अंतर्ज्ञान, बुद्धि, मानसिक अधिक स्थिरता और आत्म का विकास कर उसको जानने के लिए अग्रणी बनाता है।
- फ़िरोजा के लिये कहा जाता ह। इस रत्न का लाभ सभी राशि के लोगो द्वारा उपयोग किया जा सकता है, इसे दुनिया मे सभी उम्र और सब धर्म के लोगो मे इस्तेमाल सबसे आम पहलू यह है, कि प्रत्येक संस्कृति और हर धर्म मे फ़िरोजा के लाभ का सम्मान करते है।
- पहनने वाला के परिवार को मुसीबत से बचाया है विशेष रूप से पति और पत्नी बीच , नफ़रत को नष्ट करता है और प्यार बढ़ाता है।
- इस रत्न की अदृश्य स्त्रोतों से आने वाली ऊर्जा आप के लिए उप्योगी हो सकती है।
- फ़िरोजा के रंग मे बदलाव होता रहता है।
- यदि यह गहरे नीले रंग का हो तो यह अच्छा शगुन है।
- यदि यह गहरे हरे रंग का हो तो यह माध्यम है।
- परन्तु अगर यह पीला हो जाता है यह एक बुरा शगुन है।
- फ़िरोजा को दोस्ती के लिये एक अच्छा संकेत माना जाता है अगर किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा उपहार मे प्राप्त हो।
- अगर इमे धागे के समान रेखा दिखाई देती है, यह शत्रुता उत्पन्न होने का संकेत है।
- यह भी अविवाहित लड़कियों को पेहनाने से उनके विवाह शीघ्र होता है।

लाभ:-

- यह चीन मे व्यापक रूप से फेंग शुई और क्रिस्टल चिकित्सा में इस्तेमाल किया है।
- शराब की लत छुडाने के लिए क्रिस्टल चिकित्सकों द्वारा फ़िरोजा की सिफारिश की जाती है।
- संक्रमण,ऊँचा रक्तचाप, अस्थम, दाँत और मुँह की समस्या एवं सूर्य के विकिरण से रक्षा होती है।
- यह ज्यादातर बाज़र मे बिकने वाले फ़िरोजा जेसे पत्थर असली नहीं होते।
- एक असली या नकली फ़िरोजा को पहचान ने के लिये, इसकी सतह को देखे असली कि सतह खुर्दरी और समतल या सपाट नहीं होती, एवं नकली फ़िरोजा की सतह समतल या सपाट होती है।

चिकित्सा अस्वीकृति

- ऊपर उल्लेख फ़िरोजा सब वर्णन के भारतीय और चीनी पौराणिक कथाओं के अनुसार हैं।
- पत्थर के हीलिंग लाभ के लिये अपने चिकित्सक या अन्य स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर से सलाह ले एक विकल्प के रूप में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

रत्न एवं रंगों द्वारा रोग निवारण

चिंतन जोशी

हर रत्न के रंगो का अद्भुत एवं चमत्कारिक प्रभाव होता हैं जिस्से हमारे मानव शरीर से सभी प्रकार के रोग हेतु उपयुक्त रत्न का चुनाव कर लाभ प्राप्त किया जासकता हैं।

ब्रहमांड में व्याप्त हर रंग इंद्रधनुष के सात रंगों के संयोग से संबंध रखता हैं, हमारे ऋषि-मुनियों ने हजारों साल पहले लिखदिया था कि इंद्रधनुष के सात रंग सात ग्रहों के प्रतीक होते हैं, एवं इन रंगों का संबंध ब्रहमांड के सात ग्रहो से होता हैं जो मनुष्य पर अपना निश्चित प्रभाव हर क्षण डालते हैं। इस बात को आज का उन्नत एवं आधुनिक विज्ञान भी इस बातकी पृष्टि करता हैं। ज्योतिष के द्रष्टि कोण से हर ग्रह का अपना अलग रंग व रत्न हैं। हमारे लिये अपने जीवन को रोग मुक्त रखने हेतु इन सातो रंगो का निश्चित संतुलन रखना अति आवश्यक होता हैं। एवं यदि यह संतुलन बिगड जाये तो व्यक्ति को तरह-तरह के रोग होना प्रारंभ हो जाता हैं एवं उन रंगो को संतुलित करने हेतु रत्नों को माध्यम बनाकर उसे कायम रखकर हम कुछ बीमारियों में लाभ प्राप्त कर सकते हैं।



इन रंगो को प्रिज्म में देखने पर वह अलग रंग का दिखता हैं। वास्तव में हर रंग जो हमे दिखाइ देता हैं जिसे हम - स्वेत-काला-लाल-हरा-पीला-भूरा इत्यादि सभी जो हमे द्रष्टि गोचर होते हैं वह रंग वास्तव में अलग रंग का होता हैं!

जेसे बादल का रंग देखने में हल्का भूरा या हल्का नीला प्रतित होता है, लेकिन यदि इन बादल को प्रिज्म के माध्यम से देखा जाए तो काला या हल्का भूरा दिखने वाला बादल असल में नारंगी रंग का होता हैं। सूर्य की रोशनी देख ने में सफेद या सुनहरी दिखती हैं लेकिन प्रिज्म से देखने से इसमें सात रंग दिखाइ देते हैं।

कोइ भी व्यक्ति रंगों के भेद को समज कर कौन सा रंग शरीर के किस हिस्से पर अपना प्रभावित रखता हैं, कौन रंग किस बीमारी को पैदा कर सकता हैं,

सात रंगो कि जानकारी इस प्रकार हैं।

- सूर्य ग्रह के मुख्य रत्न माणिक्य (रुबी) से लाल रंग कि रश्मि प्राप्त होती हैं।
- चंद्र ग्रह के मुख्य रत्न मोति से केसरी या नारंगी रंग कि रश्मि प्राप्त होती हैं।
- मंगल ग्रह के मुख्य रत्न मूंगे से पीले रंग कि रश्मि प्राप्त होती हैं।
- बुध ग्रह के मुख्य रत्न पन्ना से हरे रंग कि रश्मि प्राप्त होती हैं।
- बृहस्पती (गुरु) ग्रह के मुख्य रत्न पीले पुखराज से नीले रंग कि रश्मि प्राप्त होती हैं।
- शुक्र ग्रह के मुख्य रत्न हीरे से हल्के नीले(आसमानी) रंग कि रश्मि प्राप्त होती हैं।
- शनि ग्रह के मुख्य रत्न निलम से जामुनी रंग कि रश्मि प्राप्त होती हैं।

अब इन रंगो के पंचभूत तत्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश के बारे में जाने और उन्हें समझ कर उनका प्रयोग कर विशेष लाभ प्राप्त कर सके।

- जल तत्वः- केसरी या नारंगी एंव आसमानी रंग का संचालन करता हैं।
- अग्नि तत्वः- लाल एवं पीले रंग का संचालन करता हैं।
- वायु तत्वः- जामुनी रंग का संचालन करता हैं।
- आकाश तत्वः- नीले रंग का संचालन करता हैं।
- पृथ्वी तत्वः- हरे रंग का संचालन करता हैं।

मानव शरीर के साथ रंगो के भेद को जनते हैं। इन सबके भेदो को प्रिज्म द्वारा अनुसंधान कर जानागया हैं ।

आंख :- लाल रंग

श्वसनः- हरा रंग

स्पशः- जामुनी रंग

ध्वनिः- नीले रंग

स्वादः- केसरी या नारंगी

मानव शरीर कि गरमी पीले एवं आसमानी रंग से प्रभावित होती हैं। त्वचा जामुनी रंग से प्रभावित होती हैं। नाक को देखने से नाक हरे प्रभावित होती हैं। जीभ को देखने से केसरी या नारंगी से प्रभावित होती दिखाइ देती हैं। कान को देख ने पर कान की नली नीले रंग कि ही दिखाई देती हैं।

हमारे आस-पास के माहोल मे इन रंगों के होने से ही हम अपने अंगों द्वारा स्पर्श, सूंघने, स्वाद, दृष्टि और आवाज का आभास प्राप्त करते हैं। इसी वजह से हम नाक से केवल सूंघ सकते हैं, देख नहीं सकते या स्वाद नहीं ले सकते। ऐसा इसलिए होता हैं क्योकि खुशबू और बदबू को केवल नाक ग्रहन कर स्कती हैं क्योकि वह हरे रंग से प्रभावित हैं एवं वह केवल हरे रंग को ही ग्रहण करती हैं, बाकी को नहीं कर सकती। इसी लिये हरे रंग को खुशबू और बदबू जेसी सूंघने कि शक्ति के साथ में संबंध होता हैं।

इसी प्रकार सही रोग का अनुसंधान कर सही रंगोका चुनाव कर व्यक्ति निश्चित लाभा उठा सकते हैं इस मे कोइ दो राइ नहीं हो सकती।

मनुष्य के शरीर मे उत्पन्न होने वाले त्रिदोष भी इसी प्रकार सात रंगों के कारण पैदा होते हैं।

- आयुर्वेद में वायु दोष वायु तत्व नीले और जामुनी रंग से उतपन्न होती हैं।
- पित्त अग्नि तत्व के लाल रंग से उतपन्न होता हैं। कफ जल तत्व के केसरी या नारंगी से उतपन्न होता हैं।
- पृथ्वी तत्व हरे रंग से उतपन्न होता हैं। पृथ्वी तत्व का प्रतिनिधित्व करने वाला हरा रंग बाकि सब रंगो में सबसे ठंडा होता है। इसी लिए हमे किसी पेड़ या हरे रंग के छपरे के नीचे होने से हमे कम गरमी लगती हैं।
- शायद इसी अनुसंधान के से आजकल प्लस्टिक के हरें रंगके छपरे या प्लास्टिक प्लेट (ग्रीन इफेक्ट) वाली चद्दर कि बिक्री जोरो पर हैं।
- इस लिये मानव शरीर को गरम-ठंडा रख कर और सही रंगों की पेहचान कर मानव शरीर में प्रवाहित कर दिया जाये तो व्यक्ति सदैव निरोग रह सकता हैं।
- क्योकि जन शरीर में गरमी एवं ठंडी का संतुलन खराब होजाता हैं तभी शरीरमे त्रिदोष उत्पन्न होते हैं जिसे हम विस्तान में वायु, पित्त और कफ के नाम से जानते हैं।
- वायु, पित्त और कफ कि उत्पत्ति से हर छोटी बडी बिमारी उत्पन्न होना शुरु होजाती हैं चाहे वह मामिली शर्दी खासीं होया बडे से बडा कैंसर इत्यादि हो।
- हमारे शरीर में जब गर्मी या ठंडी की अधिकता या कमी हो जाती है तो विपरीत रंगो या रत्नो के

माध्यमों द्वारा रंगों के संतुलन से इसे ठीक किया जाता हैं।

- क्योकि रंग हमें प्राप्त होते हैं रत्नों से। हर एक रत्न में रोग ठीक करने की विलक्षण क्षमता होती है। शरीर में जब रोग पैदा होते हैं तो वह रंग को लेकर और यह कमी पूरी करते हैं रत्न।
- सदियों से आयुर्वेद में रत्नों का उपयोग भस्म के रूप में किया जाता रहा हैं ज्योतिष में रोगों को ग्रहो से जोड कर उसे शांत करने हेतु रत्न धारण कर प्रयोग किया जाता हैं।
- इसी लिये यह सारी क्रियाए महज रंगों का संतुलन शरीर में करने से ही संपन्न होती है।
- ज्यादातर लोगो को गरमी में काला कपड़ा पहनने से अधिक गरमी महसूस होती हैं और सफेद कपड़ा पहनने से ठंडक महसूस होती हैं आपने भी अपने जीवन में कभी ना कभी यह जरुर महसुश किया होगा कि किसी रंग विशेष के कपडे या अन्य सामग्री से आपको लाभा हो रहा हैं या नुक्शान हो रहा हैं।
- किसी विशेष रंग के कपडे पहनेते हि आपको ज्यादा गुस्सा आजाता हैं तो कभी किसी रंग के कपडे पहने होने पर आपको गुस्सा बहोत कम मात्रा में या नहीं के बराबर आता हैं यह प्रभाव तो आपने सहज में ही महसूस किया होगा।।यह सब खेल रंगो कि माय का हैं।

नोट: उपरोक्त सभी जानकारी हमारे निजी एवं हमारे द्वारा किये गये प्रयोगो एवं अनुशंधान के आधार पर दिगई हैं।

कृप्या किसी भी प्रकार के प्रयोग या रंग या रत्न का चुनाव करने से पूर्व विशेषज्ञ कि सलाह अवश्य ले।

यदि कोइ व्यक्ति विशेषज्ञ कि सलाह नही लेकर उपरोक्त जानकारी के प्रयोग करता हैं तो उसके लभा या हानी उसकी स्वयं कि जिन्मेदारी होगी। इस्से के लिये कार्यालय के सदस्य या संस्थपक जिन्मेदार नहीं होंगे।

हम उपयोक्त लाभ का दावा नहीं कर रहे यह महज एक जानकारी प्रदान करेने हेतु इस ब्लोग पर उपलब्ध कराइ हैं।

रंगोका प्रभाव निश्चित हैं इसमे कोइ दो राय नहीं किन्तु रत्न एवं रंगो का चुनाव अन्य उसकि गुणवत्ता एवं सफाई पर निर्भर हैं अपितु विशेषज्ञ कि सलाह अवश्य ले धन्यवाद।

***

Ammonite fossil that is over 100 million years old Stone!

Wonder of Nature

WHAT IS AMMONITE?

Ammonite fossil is over 100 million years old Stone!, Just think of the energy an ammonite holds! For Feng Shui purposes the colourful Ammolite has more power, here is a simple and clear ammonite definition to help you understand the difference between Ammolite and ammonite.

"Ammolite is derived from the ammonite fossil. Just the right combination of heat and pressure created this geological phenomenon. It has been buried for the past 71 million years absorbing a substantial amount of both the Earth's and the universe's positive cosmic energy. It radiates this energy in every colour of the visible spectrum."





Benefit

Its Belief that it's Remove Negative energy and increase Positive Energy in place wherever kept.

its Belief that fossils support longevity, memory.

Also Belief that having Natural energized, high quality ammonites on display in certain areas of the house will enhance the vitality, harmony, prosperity, and overall well-being of all the occupants and visitors to the house. Everybody can benefit from owning or being in physical proximity to high quality ammonites, with or without the study of Feng Shui.

Many Feng Shui masters believe that ammonites contain the absorbed knowledge of the universe. Stored in the spiral inner whorls of the animal, Plasmic energy radiates out in a centrifical motion for the benefit of those in the vicinity. This cosmic energy will enhance health, wealth and enlightenment.

Ammonite may enhance the flow of Qi or life force energy throughout the body and may reduce the body's toxicity. A continuous harmonious balance of natures five elements (fire, earth, metal, water, and wood) is evident within the naturally occurring vibrating colours embodied by the ammonite. This rainbow of energy may benefit people who place or locate the stone within a home or office environment, especially when they are placed upon the heart of the home or business. Strength and power radiate from the shell. It is believed by some that the shell has the ability to transpose negative energy into positive.

Please Note That : We are Not Claim Age of this Ammonite Fossil, We are not Claim benefit of product, Buyer Bought and use product as their requirement.

मंत्र सिद्ध पन्ना गणेश

वास्तु उपाय हेतु सर्वश्रेष्ठ



भगवान श्री गणेश बुद्धि और शिक्षा के कारक ग्रह बुध के अधिपति देवता हैं। पन्ना गणेश बुध के सकारात्मक प्रभाव को बठाता हैं एवं नकारात्मक प्रभाव को कम करता हैं।. पन्न गणेश के प्रभाव से व्यापार और धन में वृद्धि में वृद्धि होती हैं। बच्चो कि पढाई हेतु भी विशेष फल प्रद हैं पन्ना गणेश इस के प्रभाव से बच्चे कि बुद्धि कूशाग्र होकर उसके आत्मविश्वास में भी विशेष वृद्धि होती हैं। मानसिक अशांति को कम करने में मदद करता हैं, व्यक्ति द्वारा अवशोषित हरी विकिरण शांती प्रदान करती हैं, व्यक्ति के शारीर के तंत्र को नियंत्रित करती हैं। जिगर, फेफड़े, जीभ, मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र इत्यादि रोग में सहायक होते हैं। कीमती पत्थर मरगज के बने होते हैं। **Rs.550 से Rs.8200 तक** >> Order Now

मंत्र सिद्ध मंगल गणेश

मूंगा गणेश को विघ्नेश्वर और सिद्धि विनायक के रूप में जाना जाता हैं। इस लिये मूंगा गणेश पूजन के लिए अत्यंत लाभकारी हैं। गणेश जो विघ्न नाश एवं शीघ्र फल कि प्राप्ति हेतु विशेष लाभदायी हैं।

मूंगा गणेश घर एवं व्यवसाय में पूजन हेतु स्थापित करने से गणेशजी का आशीर्वाद शीघ्र प्राप्त होता हैं। क्योकि लाल रंग और लाल मूंगे को पवित्र माना गया हैं। लाल मूंगा शारीरिक और

मानसिक शक्तियों का विकास करने हेतु विशेष सहायक हैं। हिंसक प्रवृत्ति और गुस्से को नियंत्रित करने हेतु भी मूंगा गणेश कि पूजा लाभ प्रद हैं। एसी लोकमान्यता हैं कि मंगल गणेश को स्थापित करने से भगवान गणेश कि कृपा शक्ति चोरी, लूट, आग, अकस्मात से विशेष सुरक्षा प्राप्त होती हैं, जिस्से घर में या दुकान में उन्नती एवं सुरक्षा हेतु मूंगा गणेश स्थापित किया जासकता हैं।

प्राण प्रतिष्ठित मूंगा गणेश कि स्थापना से भाग्योदय, शरीर में खून की कमी, गर्भपात से बचाव, बुखार, चेचक, पागलपन, सूजन और घाव, यौन शक्ति में वृद्धि, शत्रु विजय, तंत्र मंत्र के दुष्ट प्रभा, भूत-प्रेत भय, वाहन दुर्घटनाओं, हमला, चोर, तूफान, आग, बिजली से बचाव होता हैं। एवं जन्म कुंडली में मंगल ग्रह के पीड़ित होने पर मिलने वाले हानिकर प्रभावों से मुक्ति मिलती हैं।

जो व्यक्ति उपरोक्त लाभ प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिये मंत्र सिद्ध मूंगा गणेश अत्यधिक फायदेमंद हैं।

मूंगा गणेश कि नियमित रूप से पूजा करने से यह अत्यधिक प्रभावशाली होता हैं एवं इसके शुभ प्रभाव से सुख सौभाग्य कि प्राप्ति होकर जीवन के सारे संकटो का स्वतः निवारण होजाता हैं। **Rs.550 से Rs.8200 तक** >> Order Now

ग्रह शांति हेतु करें नवग्रह एवं दान

चिंतन जोशी

कुंडली (जातक/ जन्म पत्री) में यदि कोई ग्रह कमजोर है या अशुभ भाव का स्वामी हो एवं अन्य भाव को देख कर अपना अशुभ प्रभाव दे रहा हो तो उस ग्रह को शांत करना आवश्यक होता हैं जिस्से ग्रह अपना प्रतिकूल प्रभाव के स्थान पर अनुकूल प्रभाव प्रदान करें।

किसी भी ग्रह के प्रभाव को अनुकूल बनाने का सरल उपाय हैं उस ग्रह से संबंधिक वस्तु विशेष का जल प्रवाह या दान करना, जिस्से ग्रह के अशुभ प्रभाव को कम किया जासके।

ग्रह:- सूर्य (वार:- रविवार)

सूर्य ग्रह कि शांति हेतु गेहूँ, ताँबा, घी, गुड़, माणिक्य, लाल कपड़ा, मसूरकी दाल, कनेर या कमल के फूल, गौ दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

ग्रह:- चंद्र (वार:- सोमवार)

चंद्र ग्रह कि शांति हेतु मोती, चाँदी, चावल, चीनी, जल से भरा हुवा कलश, सफेद कपड़ा, दही, शंख, सफेद फूल, साँड आदि का दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

ग्रह:- मंगल (वार:- मंगलवार)

मंगल ग्रह कि शांति हेतु मूंगा, मसूर, घी, गुड़, लाल कपड़ा, रक्त चंदन, गेहूँ, केसर, ताँबा, लाल फूल का दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

ग्रह:- बुध (वार:- बुधवार)

बुध ग्रह कि शांति हेतु हरे पन्ना, मूँग, घी, हरा कपड़ा, चाँदी, फूल, काँसे का बर्तन, कपूर का दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

ग्रह:- बृहस्पति (गुरु) (वार:- गुरुवार)

बृहस्पति ग्रह कि शांति हेतु पुखराज, चने की दाल, हल्दी, पीला कपड़ा, गुड़, केसर, पीला फूल, घी और सोने की वस्तुओं का दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

ग्रह:- शुक्र (वार:- शुक्रवार)

शुक्र ग्रह कि शांति हेतु श्वेत रत्न, चाँदी, चावल, दूध, सफेद कपड़ा, घी, सफेद फूल, धूप, अगरबत्ती, इत्र, सफेद चंदन दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

ग्रह:- शनि (वार:- शनिवार)

शनि ग्रह कि शांति हेतु निलम, काला कपड़ा, साबुत उड़द, लोहा, यथा संभव दक्षिणा, तेल, काला पुष्प, काले तिल, चमड़ा, काले कंबल का दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

ग्रह:- राहु (वार:- शनिवार)

राहु ग्रह कि शांति हेतु काला एवं गोमेद, नीला कपड़ा, कंबल, साबूत सरसों (राई), ऊनी कपड़ा, काले तिल व तेल का दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

ग्रह:- केतु (वार:- मंगलवार)

केतु कि शांति हेतु सात प्रकार के वैदूर्य, अनाज, काजल, झंडा, ऊनी कपड़ा, तिल आदि का दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

नोट:- * कृप्या दान अपनी श्रद्धा एवं क्षमता के अनुसार एक या अधिक वस्तुओं का कर सकते हैं। * दान ग्रहों के तय वार के अनुशार हि करें। * किसी गरीब या जरुरतमंद व्यक्ति को दान करना चाहिए। * अपने द्वारा दान का बखान या दिखावा करने हेतु दान करने से पुण्य कम हो जाता हैं।

आजीविका और रत्न धारण

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

व्यवसाय और नौकरी में सफलता लग्न और लग्नेश पर विशेष रुप से निर्भर होती हैं। अतः लग्नेश के अनुसार रत्न धारण करने से व्यवसाय और नौकरी में सफलता प्राप्त होती हैं।

लग्न कुंडली में दशम भाव कर्म का भाव होता हैं। यदि कर्मेश निर्बल अथवा दूषित स्थिति में हो, तो उसका रत्न धारण करने से वह शुभ फल प्राप्त होने लगता हैं। एसी स्थिति में कर्मेश से संबंधित रत्न धारण करना चाहिए।

आधुनिक युग में व्यवसाय और नौकरी शिक्षा एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं पर आधारित होता हैं। शिक्षा एवं प्रतियोगिता परीक्षा पंचम भाव का पर निर्भर होती हैं। पंचमेष निर्बल होनेसे शिक्षा एवं कैरियर में बाधाएं आती हैं। अतः कैरियर में सफलता के लिए पंचमेश का रत्न धारण करना चाहिए।

व्यक्ति जिस क्षेत्र में कैरियर बनाना चाहता हैं उसकी प्रकृति के आधार पर भीं रत्न धारण कियें जा सकतें हैं। व्यक्ति का कैरियर जिस ग्रह के कारत्व में आता हैं उस ग्रह सें संबंधित रत्न भी धारण किया जाता हैं।

माणिक्यः-

सरकारी कर्मचारी, उच्चाधिकारी, न्यायाधीश, राजनेता, औषधि, पैतृक व्यवसाय, डॉक्टर (नेत्र, गला, मस्तिष्क, हृदय एवं रक्त से संबंधित) राजकीय कार्यो के ठेकेदार, जौहरी आदि व्यापार करने वालोकों माणिक्य धारण करने से सफलता प्राप्त होती हैं।

मेतीः-

मनोचिकित्सक, डॉक्टर (उदर, फेफड़े, छाती एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ) दुकानदार, यात्रा, नाविक, एयर होस्टेस, हॉकर, भोजन सामग्री, इत्यादि के कार्य करने वालोकों मोती धारण करने से सफलता प्राप्त होती हैं।

मूंगाः-

पुलिस, सेना, साहसी कार्य, हथियार, प्रापर्टी डीलर, सर्जन, अस्थि राग विशेषज्ञ, विद्युत, फायर सर्विसेज, इंजीनियरिंग, मिनरल एंड मेटल्स, रसायन, वन विभाग, वकील, मांस व्यवसाय इत्यादि में कार्य करने वालोकों मूंगा धारण करने से सफलता प्राप्त होती हैं।

पन्नाः-

शिक्षक, ब्रॉकर्स, संपादक, प्रकाशक, लेखक, मुद्रक, वक्ता, गणितज्ञ, बीमा एजेंट, बैंक, नगर निगम कर्मचारी, दुकानदार, संदेषा वाहक, जादूगर, डॉक्टर (श्वास, तव्चा रोग विशेषज्ञ) शिक्षक इत्यादि में कार्य करने वालोकों पन्ना धारण करने से सफलता प्राप्त होती हैं।

पुखराजः-

वक्ता, न्यायाधीश, पुजारी, विद्वान, ज्यातिषी, दार्शनिक, मिनिस्टर, शिक्षा, चैरिटी, उदर रोग विशेषज्ञ, इत्यादि कार्य करने वालोकों पुखराज धारण करने से सफलता प्राप्त होती हैं।

हीराः-

सौंदर्य प्रसाधन, कला, अभिनेता, फिल्म, मनोरंजन, ज्वैलरी, संगीत, सुगंधित द्रव्य, फूल, विवाह से संबंधित कार्य, विलासिता की वस्तुएं, रेस्टोरेन्ट्स, होटल, डिजाइनिंग से संबंधित व्यापार करने वालोकों हीरा धारण करने से सफलता प्राप्त होती हैं।

नीलमः-

इंजीनियरिंग, सर्विस, कृषि, सफाई, पेट्रोलियम, खनिज, अरूचिपूर्ण कार्य, लौह से संबंधित कार्य, पत्थर, ठेकेदार, डॉक्टर (दंत रोग, कैंसर, अवरोध से संबंधित बीमारियां, अस्थिरोग विशेषज्ञ) संबंधित व्यापार करने वालोकों हीरा धारण करने से सफलता प्राप्त होती हैं।

***

श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- ❖ श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- ❖ जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- ❖ जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- ❖ श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- ❖ विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- ❖ गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।

रत्न धारण से विद्या प्राप्ति

✍ चिंतन जोशी

यदि जन्म कुंडली में उच्च शिक्षा का योग हो, किंतु विद्याध्ययन के समय अशुभ ग्रह की दशा के कारण रुकावटे आने का योग हो या विभिन्न प्रकार की समस्याओं के कारण रुकावटे आरही हो, तो संबंधित ग्रह की शांति हेतु ग्रह से संबंधित रत्न को धारण करना एवं ग्रह के यंत्र को अपने घर में स्थापित करना लाभदायक होता हैं।

जानकार ज्योतिषी से सलाह प्राप्त कर ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए रत्न धारण करना सरल एवं अत्याधिक लाभ प्रदान करने वाला श्रेष्ठ उपाय सिद्ध हो सकता हैं। क्योकि उचित मार्ग दर्शन से धारण किया गया रत्न शीघ्र एवं निश्चित शुभ प्रभाव प्रदान करने में समर्थ हैं।

- **लग्न के अनुशार रत्न धारण से विद्या प्राप्ति**
- मेष लग्न वाले जातक को विद्या प्राप्ति हेतु माणिक्य धारण करना चाहिये।
- वृष लग्न वाले जातक को विद्या प्राप्ति हेतु पन्ना धारण करना चाहिये।
- मिथुन लग्न वाले जातक को विद्या प्राप्ति हेतु हीरा धारण करना चाहिये।
- कर्क लग्न वाले जातक को विद्या प्राप्ति हेतु मूंगा धारण करना चाहिये।
- सिंह लग्न वाले जातक को विद्या प्राप्ति हेतु पीला पुखराज धारण करना चाहिये।
- कन्या लग्न वाले जातक को विद्या प्राप्ति हेतु नीलम धारण करना चाहिये।
- तुला लग्न वाले जातक को विद्या प्राप्ति हेतु नीलम धारण करना चाहिये।
- वृश्चिक लग्न वाले जातक को विद्या प्राप्ति हेतु पीला पुखराज धारण करना चाहिये।
- धनु लग्न वाले जातक को विद्या प्राप्ति हेतु मूंगा धारण करना चाहिये।
- धनु लग्न वाले जातक को विद्या प्राप्ति हेतु हीरा धारण करना चाहिये।
- कुंभ लग्न वाले जातक को विद्या प्राप्ति हेतु पन्ना धारण करना चाहिये।
- मीन लग्न वाले जातक को विद्या प्राप्ति हेतु मोती धारण करना चाहिये।

उचित मार्गदर्शन से धारण किया गया ग्रह रत्न विद्या लाभ हेतु विशेष लाभप्रद होता हैं।

सूर्य राशि से रत्न

✍ आलोक शर्मा

पश्चयात मत से प्रभावित अनेक व्यक्ति अपनी सूर्य राशि के आधार पर राशि का निर्णय करते हैं। लेकिन भारतीय ज्योतिष शास्त्र में चंद्र राशि व नाम राशि को अधिक महत्व दिया गया हैं। पश्चयात मतसे राशि का निर्णय करके उससे संबंधित रत्न धारण करने पर अधिक महत्व देते हैं। इस लिये पश्चयात मत को प्रधानता देने वाले व्यक्तियों के लिए लग्न, ग्रह की स्थिती, दशा, महादशा इत्यादि की शुभ-अशुभ स्थिती को देखना उनके लिए अनिवार्य नहीं हैं। वहं लोग केवल सूर्य राशि के आधार पर रत्न धारण करने का निर्णय कर ते हैं। आप सभी पाठको के मार्गदर्शन हेतु पश्चयात मत से सूर्य राशि के आधार पर रत्न धारण करने का निर्णय करते हैं उसकी तालिका प्रस्तुत हैं।

जन्मतिथि	सूर्य राशि	संबंधित रत्न	शुभ रत्न
15 अप्रेल से 14 मई तक	मेष	मूंगा	माणिक्य, मोति, पुखराज
15 मई से 14 जून तक	वृष	हीरा	पन्ना, निलम
15 जून से 14 जुलाई तक	मिथुन	पन्न	माणिक्य, हीरा, निलम
15 जुलाई से 14 अगस्त तक	कर्क	मोति	माणिक्य, मूंगा, पुखराज
15 अगस्त से 14 सितम्बर तक	सिंह	माणिक्य	मोति, मूंगा, पुखराज
15 सितम्बर से 14 नवम्बर तक	कन्या	पन्न	माणिक्य, हीरा, निलम
15 नवम्बर से 14 नवम्बर तक	तुला	हीरा	पन्ना, निलम
15 नवम्बर से 14 दिसम्बर तक	वृश्चिक	मूंगा	माणिक्य, मोति, पुखराज
15 दिसम्बर से 14 जनवरी तक	धनु	पीला पुखराज	माणिक्य, मोति, मूंगा
15 जनवरी से 14 फरवरी तक	मकर	निलम	पन्ना, हीरा,
15 फरवरी से 14 मार्च तक	कुंभ	निलम,	पन्ना, हीरा,
15 मार्च से 14 अप्रेल तक	मीन	पीला पुखराज,	माणिक्य, मोति, मूंगा

अंक ज्योतिष से जाने शुभ रत्न

आलोक शर्मा

जन्म तिथि	मूलांक	स्वामी ग्रह	शुभ रत्न	अन्य शुभ रत्न
1, 10, 19, 28	1	सूर्य	माणिक्य	मोति, मूंगा, पुखराज
2, 11, 20, 29	2	चंद्र	मोती	माणिक्य, मूंगा, पुखराज
3, 12, 21, 30	3	गुरू	पुखराज	माणिक्य, मोति, मूंगा
4, 13, 22, 31	4	राहु	गोमेद	हीरा, निलम, लहसुनिया
5, 14, 23	5	बुध	पन्ना	माणिक्य, हीरा, निलम
6, 15, 24	6	शुक्र	हीरा	पन्ना, निलम
7, 16, 25	7	केतु	लहसुनिया	हीरा, निलम, गोमेद
8, 17, 26	8	शनि	नीलम	पन्ना, हीरा,
9, 18, 27	9	मंगल	मूंगा	माणिक्य, मोति, पुखराज

शास्त्रोक्त विधान से रत्न धारण संबंधित सुझाव

विजय ठाकुर

	ग्रह	रत्न	धातु	वजन	अंगुली	दिन	समय
1	सूर्य	माणिक्य	सोना	5.25 रत्ती	अनामिका	रविवार	सूर्योदय
2	चंद्र	मोती	चांदी	7.25 रत्ती	कनिष्ठिका	सोमवार	चंद्रोदय
3	मंगल	मूंगा	सोना	8 रत्ती	अनामिका	मंगलवार	सूर्योदय
4	बुध	पन्ना	सोना	5.25 रत्ती	कनिष्ठिका	बुधवार	सुबह 9 बजे
5	गुरू	पुखराज	चांदी	4-10 रत्ती	तर्जनी	गुरुवार	सायं 4-6 बजे
6	शुक्र	हीरा	चांदी	1 कैरेट	अनामिका	शुक्रवार	प्रातः
7	शनि	नीलम	चांदी	4-10 रत्ती	मध्यमा	शनिवार	सायंकाल
8	राहू	गोमेद	पंचधातु	5.25 रत्ती	मध्यमा	बुधवार	सायं
9	केतु	लहसुनिया	पंचधातु	5.25 रत्ती	मध्यमा	शनिवार	प्रातः

सही क्रम में जड़ित नवरत्न हीं धारण करें

✍ स्वस्तिक.ऎन.जोशी

ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए विभिन्न रत्न धारण करवाएं जाते हैं।

लेकिन एकाधिक अशुभ ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए नवरत्न जड़ित अंगूठी, पैन्डेन्ट, इत्यादि आभूषण धारण करने की सलाह दी जाती हैं।

लेकिन नवरत्न धारण करने से पूर्व यह सुनिश्चित कर ले की जो नवरत्न आप बनवाने जा रहे हैं या बनाया हुवा हैं तो उसे देख ले की उसका क्रम सुनिश्चित हो।

क्योकी विद्वानो के मत से नवरत्नों की अंगूठी या पैन्डेन्ट में जड़ित रत्नो को जोड़ने का एक ही निश्चित क्रम निर्धारित है।

नवरत्न को निर्धारित क्रम में जड़वाने का यह चलन पूरातन काल से हैं।

इसके पीछे मूल्य रहस्य ग्रहो के लिये ज्योतिष व वास्तु में निर्धारित की गई दिशा हैं। वास्तु के अनुशार हर ग्रह की एक दिशा व स्थान सुनिश्चित हैं।

वास्तु में सूर्य को ब्रहम स्थान, चंद्र को अग्निकोण, मंगल को दक्षिण दिशा, बुध को ईशान कोण, बृहस्पति को उत्तर दिशा, शुक्र को पूर्व दिशा, शनि को पश्चितम दिशा, राहु के लिए नौऋत्य कोण और केतु के लिए वायव्य कोण निर्धारित किया गया हैं। इसी क्रम में नवरत्न को जड़वाने का विधान हैं।

इसके पीछे एसी मान्यता हैं की हमारे विद्वान ऋषी-मुनियो ने ग्रहो के इस क्रम का चलन किया था।

इन नवरत्नो के साथ यदि कोई यंत्र विशेष जैसे श्री यंत्र, बगला मुखी यंत्र, पंदरीया यंत्र, बीसा यंत्र आदि जड़ित किया जाये तो ग्रहो के क्रम में बदलव आजाता हैं। सिर्फ नवरत्न धारण करने पर उसे जड़ित करने का क्रम आप के मार्गदर्शन के लिए यहां प्रस्तुत हैं।

केतु लहसुनिया	गुरु(बृहस्पति) पीला पुखराज	बुध पन्न
शनि निलम	सूर्य माणिक्य	शुक्र हीरा
राहु गोमेद	मंगल मूंगा	चंद्र मोती

नवरत्न की अँगूठी या लटकन(पेन्डन्ट) जड़ित करने का क्रम उक्त हैं।

रत्न द्वारा रोग उपचार

✍ चिंतन जोशी, स्वस्तिक.ऎन.जोशी

HINDI	ENGLISH	STONE
1. हल्की लत छूडाने के लिये	Addiction (Mild)	Amethyst, White Agate
2. भारी लत छूडाने के लिये	Addiction (Strong)	Blue Sapphire
3. एलर्जी से सहायता के लिये	Allergies	Aquamarine
4. खून की कमी दूर के लिये	Aneamic (Blood Deficiency)	Magnetit
5. पथरी दूर के लिये	Appendicitis	Citrine
6. गठिया/सूजन संबंधित रोग में सहायक	Arthritis	Golden Tiger’s Eye, Green Emrald
7. हानि/घाटा/अधिक खर्च में सहायक	Attention Deficit	Black Agate
8. मुत्राशय संबंधित रोग में सहायक	Bladder	Bloodstone
9. रक्त स्त्राव के लिये(महिला के लिये नहीं)	Bleeding(Not4female)	Heliotrope
10. रक्त चाप के लिये (उच्च और कम)	Blood Pressure (High- Low)	Aventurine
11. रक्त शुद्ध करने में सहायक	Blood Purification	Bloodstone
12. अस्थि भंग में सहायक	Bone (Joining Cracks)	Pearl,Calcite
13. अस्थि मज्जा की सूजन में सहायक	Bone Marrow Inflammed	Crystal, Clear Quartz
14. अस्थि संबंधित परेशानी में सहायक	Bone Problems	Fluorite,Calcite
15. मस्तिष्क संबंधित रोग में सहायक	Brain	Blue Sapphire
16. मानसिक थकान/तनाव दूर करने के लिये	Brain Fatigue	Amazonite
17. कैंसक में सहायक	Cancer	Cat’s Eye
18. केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र में सहायक	Central Nervous System	Alexandrite, Aventurine
19. प्रसव कष्ट दूर करने के लिये	Childbirth(Ease)	Golden Topaz,Pearl,Apricot Agate
20. जीवाणु संक्रमण दूर के लिये	Colon Infections	Green Agate,Amber
21. मधुमेह में सहायक	Diabetes	White Coral, White Sapphire
22. माहवारी/ऋतुस्त्राव संबंधित परेशानी दूर	Dysmenorrhoea	Turquoise
23. कान संबंधित परेशानी दूर के लिये	Ear Infections	Blue Agate
24. लसीका ग्रंथि की वृद्धि रोक ने में सहायक	Enlarged Glands	Aquamarine

25. नेत्र/आंखँ संबंधित रोग में सहायक	Eye Disease	Opal, Amethyst
26. प्रजनन संबंधित रोग में सहायक	Fertility	Moonstone,Rose Quartz
27. बुखार दूर करने के लिये (अम्लता के साथ)	Fever(With Acidity)-	Red Coral
28. सर्दी- बुखार दूर करने के लिये (ठंड के साथ)	Fever(With Cold)-	Pearl
29. अहंकार/गैस दूर करने के लिये	Flatulence	Emerald,Red Coral,Pearl
30. पानी/द्रव्य संबंधित रोग दूर करने के लिये	Fluid Retention	Aquamarine
31. गिल्ट/ग्रंथि रोग विकार दूर करने के लिये	Glandular Disorders	Lapiz
32. स्त्री रोग संबंधित परेशानी में सहायक	Gynaec Problems	Red Agate, Red Jasper
33. बाल संबंधित परेशानी दूर करने के लिये	Hair	Marble Or Granite
34. हार्मोन असंतुलन में सहायक	Harmone Imbalance	Topaz,Amber
35. हृदय रोग (हलका) में सहायक	Heart Disorders (Mild)	Emerald
36. हृदय रोग (भारी) में सहायक	Heart Disorders (Strong)	Blue Sapphire
37. ज्यादा गुस्सा दूर करने के लिय (बच्चो के लिये)	Hyperactive Child	Green Emrald, Green Agate, Jade,
38. ज्यादा गुस्सा/संवेदनशीलता दूर करने के लिये	Hypersensitivity	Moonstone,Amazonite
39. नपुंसकता/शुक्राणु संबंधित परेषानी दूर करने के लिये	Impotency	Daimond, Zircon, Shiv Lingam Stone
40. अपच/बद हजमी दूर करने के लिये	Indigestion	Red Coral, Agate
41. अनिद्रा दूर करने के लिये	Insomnia	Agate(Any),Tourmaline
42. कब्ज की अनियमितता संबंधित परेशानी के लिये	Irregular Stools	Green Agate
43. गुर्दा संक्रमण दूर करने के लिये	Kidney Infections	Red Agate,Amazonite,Amethyst
44. गुर्दे की पथरी दूर करने के लिये (तोडने/भंग करने के लिये)	Kidney Stone (To Crack&Dissolve)	Garnet, Malachite
45. रक्त कैंसर दूर करने के लिये	Leukaemia	Alexandrite
46. सुस्त जिगर के में सहायक	Liver Sluggish	Red Coral, Amazonite, Amethyst
47. फेफडो में विकार दूर करने के लिये	Lung Disorders	Green Emrald, Jade, Amber
48. स्मरण शक्ति में सहायक	Memory	Emerald, Gomes, Peridot, Jade
49. रजोनिवृत्ति में सहायक	Menopause	Citrine

50. मासिक धर्म संबंधित परेशानी में सहायक	Menstrual Pains	Green Emrald, Jade, Amazonite
51. नाखून संबंधित परेशानी दूर करने के लिये	Nails	Gomed
52. वातशूल/वातरोग दूर करने के लिये	Neuralgia	Aquamarine
53. स्नायु विकार दूर करने के लिये	Neurological Disorders	Gomed, Black Hawk's Eye
54. नकसीर/नाक से खून निकलना दूर करने के लिये	Nose Bleed	Red Agate, Carnelian,
55. अस्थि रोग में सहायक	Osteoporosis	Green Emrald, Jade, Aventurine.
56. पक्षाघात/लकवा में सहायक	Paralysis	Blue Sapphire
57. बवासीर संबंधित परेशानी दूर करने के लिये	Piles	Mariam
58. गठिया रोगमें सहायक (पूराना या लंबे समय का)	Rhuematism (Chronic)	Amazonite
59. गठिया रोग में सहायक	Rhuematsm	Red Coral
60. यौन ऊर्जा बढ़ाने में सहायक	Sexual Energy	Agate Botswana
61. त्वचा संबंधित रोग दूर करने के लिये	Skin	Diamond, Amethyst
62. वाचा/वाणी विकार दूर करने के लिये	Speech Disorders	Blue Lace Agate.
63. बच्चो के मसूड़ों से संबंधित रोग में सहायक	Teething(Babies)	Amber, Citrine
64. गले का कैंसर	Throat	Citrine, Amber,Blue Lace Agate
65. थाईरोड में सहायक	Thyroid	Citrine, Amber,Amethyst, Aquamarine
66. दांत के दर्द में सहायक	Toothache	Aquamarine
67. मुत्राशय संबंधित रोग दूर करने के लिये	Urinary Tract Infection	Bloodstone
68. जरायु विकार दूर करने के लिये	Uterian Disorders	Mother Of Pearl
69. वजन बढ़ाने के लिये सहायक	Weight(To Increase)	Citrine, Amber
70. वनज घटाने के लिये सहायक	Weight(To Loose)	Ruby

नोट:- ऊपर दर्शाइ गई रत्न एवं रोग निदान की तालिका जानकारी के उद्देश्य से दिगई हैं। कोई भी रत्न पत्थर धारण करने से कूशल रत्न विशेज्ञ, ज्योतिष और चिकित्सक से परामर्श लेना आवश्यक हैं। रत्न धारण करने से पूर्व उसकी गुणवत्ता की जाँच करें एवं उस रत्न के संपूर्ण शुभ-अशुभ प्रभाव के बारे में जानकारी प्राप्त करने के बाद ही रत्न धारण करने का निर्णय करें।

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)- आदि लक्ष्मी, (२)- धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)- गज लक्ष्मी, (५)- संतान लक्ष्मी, (६)- विजय लक्ष्मी, (७)- विद्या लक्ष्मी और (८)- धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	**पारद शिवलिंग+नंदि**	**पारद शिवजी**	**पारद काली**
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	**पारद दुर्गा**	**पारद सरस्वती**	**पारद सरस्वती**
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	**पारद हनुमान 3**	**पारद हनुमान 1**	**पारद कुबेर**
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

मंत्र सिद्ध गोमति चक्र

 Premium Quality Very Rare Gomati Chakra Big Size 1 Weight 36 Gram Gomti... 30% Off ~~Rs. 820.00~~ Offer Price : Rs. 574.00	 Premium Quality Very Rare Gomati Chakra Big Size 1 Weight 27 Gram Gomti... 30% Off ~~Rs. 640.00~~ Offer Price : Rs. 448.00	 Premium Quality Very Rare Gomati Chakra Big Size 1 Weight 21 Gram Gomti... 30% Off ~~Rs. 550.00~~ Offer Price : Rs. 385.00	 Premium Quality Very Rare Gomati Chakra Big Size 1 Weight 18 Gram Gomti... 30% Off ~~Rs. 501.00~~ Offer Price : Rs. 350.70
 Premium Q 11 PCS Very Rare Gomati Chakra Big Each 1 Weight 7 Gram 30% Off ~~Rs. 1100.00~~ Offer Price: Rs. 770.00	 Premium Q 11 PCS Very Rare Gomati Chakra Big Each 1 Weight 6 Gram ... 30% Off ~~Rs. 910.00~~ Offer Price: Rs. 637.00	 Premium Q Very Rare Gomati Chakra Big Size Weight 10 Gram ... 30% Off ~~Rs. 460.00~~ Offer Price: Rs. 322.00	 Premium Q Very Rare Gomati Chakra Big Size Weight 9 Gram ... 30% Off ~~Rs. 251.00~~ Offer Price: Rs. 175.70
 Premium Q Very Rare Gomati Chakra Big 8 Gram ... 30% Off ~~Rs. 151.00~~ Offer Price: Rs. 105.70	 Premium Q Gomati Chakra 7pcs Big Each 4.5Gram 30% Off ~~Rs. 251.00~~ Offer Price: Rs. 175.70	 Premium Q 3 PCS Very Rare Gomati Chakra 7 Gram Each.. 30% Off ~~Rs. 251.00~~ Offer Price: Rs. 175.70	 Rakt Gunja 51 Pcs + Free 11 Pcs Gomti Chakra... 30% Off ~~Rs. 280.00~~ Offer Price: Rs. 196.00
 Gomti Chakra 11 Pcs+11 Pcs Rakt Gunja+11 White Cowrie.. 10% Off ~~Rs. 325.00~~ Offer Price: Rs. 292.50	 Gomti Chakra 11 Pcs Gomati Chakra Sudarshan Chakra...... 30% Off ~~Rs. 199.00~~ Offer Price: Rs. 139.30		

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> Shop Online | Order Now

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्रीमहायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY :Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- भाग्योदय यंत्र
- मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- गृहस्थ सुख यंत्र
- शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- रोग निवृत्ति यंत्र
- साधना सिद्धि यंत्र
- शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

>> Shop Online | Order Now

- क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।



दिसम्बर-2016 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	गुरु	मार्गशीर्ष	शुक्ल	द्वितीया	22:09:42	मूल	29:05:01	शूल	30:04:04	बालव	09:08:46	धनु	-
2	शुक्र	मार्गशीर्ष	शुक्ल	तृतीया	23:57:21	पूर्वाषाढ़	31:17:02	गंड	30:16:06	तैतिल	11:05:47	धनु	-
3	शनि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	चतुर्थी	25:24:21	पूर्वाषाढ़	07:16:51	वृद्धि	30:10:17	वणिज	12:43:06	धनु	13:47:00
4	रवि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	पंचमी	26:26:02	उत्तराषाढ़	09:07:17	ध्रुव	29:45:44	बव	13:58:51	मकर	-
5	सोम	मार्गशीर्ष	शुक्ल	षष्ठी	26:56:47	श्रवण	10:32:25	व्याघात	28:54:55	कौलव	14:46:28	मकर	23:03:00
6	मंगल	मार्गशीर्ष	शुक्ल	सप्तमी	26:50:57	धनिष्ठा	11:24:42	हर्षण	27:36:54	गर	14:58:27	कुंभ	-
7	बुध	मार्गशीर्ष	शुक्ल	अष्टमी	26:05:45	शतभिषा	11:41:22	वज्र	25:47:56	विष्टि	14:33:52	कुंभ	29:27:00
8	गुरु	मार्गशीर्ष	शुक्ल	नवमी	24:37:24	पूर्वाभाद्रपद	11:16:46	सिद्धि	23:25:12	बालव	13:26:09	मीन	-
9	शुक्र	मार्गशीर्ष	शुक्ल	दशमी	22:28:43	उत्तराभाद्रपद	10:11:51	व्यतिपात	20:29:40	तैतिल	11:38:06	मीन	-
10	शनि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	एकादशी	19:44:25	रेवति	08:29:25	वरियान	17:05:58	वणिज	09:10:40	मीन	08:29:00
11	रवि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	द्वादशी	16:31:58	भरणी	27:33:50	परिग्रह	13:16:58	बालव	16:31:58	मेष	-
12	सोम	मार्गशीर्ष	शुक्ल	त्रयोदशी	12:58:53	कृतिका	24:39:11	शिव	09:11:04	तैतिल	12:58:53	मेष	08:51:00
13	मंगल	मार्गशीर्ष	शुक्ल	चतुर्दशी-पूर्णिमा	09:16:24	रोहिणि	21:40:46	साध्य	24:38:54	वणिज	09:16:24	वृष	-
14	बुध	पौष	कृष्ण	प्रतिपदा	26:08:36	मृगशिरा	18:50:47	शुभ	20:31:06	बालव	15:48:54	वृष	08:14:00
15	गुरु	पौष	कृष्ण	द्वितीया	23:04:32	आद्रा	16:23:17	शुक्ल	16:40:09	तैतिल	12:32:39	मिथुन	-

16	शुक्र	पौष	कृष्ण	तृतीया	20:36:04	पुनर्वसु	14:25:45	ब्रह्म	13:15:27	वणिज	09:45:27	मिथुन	08:51:00
17	शनि	पौष	कृष्ण	चतुर्थी	18:51:39	पुष्य	13:09:28	इन्द्र	10:24:28	बव	07:37:35	कर्क	-
18	रवि	पौष	कृष्ण	पंचमी	17:56:55	आश्लेषा	12:40:58	वैधृति	08:10:58	तैतिल	17:56:55	कर्क	12:40:00
19	सोम	पौष	कृष्ण	षष्ठी	17:55:35	मघा	13:03:05	प्रीति	29:46:13	वणिज	17:55:35	सिंह	-
20	मंगल	पौष	कृष्ण	सप्तमी	18:44:52	पूर्वाफाल्गुनी	14:15:48	आयुष्मान	29:30:48	बव	18:44:52	सिंह	20:41:00
21	बुध	पौष	कृष्ण	अष्टमी	20:18:12	उत्तराफाल्गुनी	16:12:34	सौभाग्य	29:45:23	बालव	07:26:38	कन्या	-
22	गुरु	पौष	कृष्ण	नवमी	22:25:15	हस्त	18:43:04	शोभन	30:22:27	तैतिल	09:18:42	कन्या	-
23	शुक्र	पौष	कृष्ण	दशमी	24:54:47	चित्रा	21:35:06	अतिगंड	31:12:36	वणिज	11:37:55	कन्या	08:07:00
24	शनि	पौष	कृष्ण	एकादशी	27:32:45	स्वाती	24:36:30	अतिगंड	07:13:03	बव	14:14:00	तुला	-
25	रवि	पौष	कृष्ण	द्वादशी	30:06:56	विशाखा	27:36:56	सुकर्मा	08:06:56	कौलव	16:50:59	तुला	20:53:00
26	सोम	पौष	कृष्ण	त्रयोदशी	32:30:47	अनुराधा	30:27:02	धृति	08:57:02	गर	19:20:28	वृश्चिक	-
27	मंगल	पौष	कृष्ण	त्रयोदशी	08:31:10	जेष्ठा	33:02:06	शूल	09:38:40	वणिज	08:31:10	वृश्चिक	-
28	बुध	पौष	कृष्ण	चतुर्दशी	10:37:09	जेष्ठा	09:01:32	गंड	10:07:09	शकुनि	10:37:09	वृश्चिक	09:02:00
29	गुरु	पौष	कृष्ण	अमावस्या	12:23:26	मूल	11:17:49	वृद्धि	10:21:34	नाग	12:23:26	धनु	-
30	शुक्र	पौष	शुक्ल	प्रतिपदा	13:49:04	पूर्वाषाढ़	13:12:30	ध्रुव	10:20:00	बव	13:49:04	धनु	19:39:00
31	शनि	पौष	शुक्ल	द्वितीया	14:52:10	उत्तराषाढ़	14:48:25	व्याघात	10:01:33	कौलव	14:52:10	मकर	-

दिसम्बर-2016 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	गुरु	मार्गशीर्ष	शुक्ल	द्वितीया	22:09:42	-
2	शुक्र	मार्गशीर्ष	शुक्ल	तृतीया	23:57:21	-
3	शनि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	चतुर्थी	25:24:21	वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत।
4	रवि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	पंचमी	26:26:02	पंचमी व्रत।
5	सोम	मार्गशीर्ष	शुक्ल	षष्ठी	26:56:47	स्कन्द षष्ठी व्रत संध्याकाल। चम्पा षष्ठी व्रत। श्री अन्नपूर्णा षष्ठी व्रत।
6	मंगल	मार्गशीर्ष	शुक्ल	सप्तमी	26:50:57	नरसिंह मेहता जयन्ती।
7	बुध	मार्गशीर्ष	शुक्ल	अष्टमी	26:05:45	श्री दुर्गाष्टमी व्रत। बुधाष्टमी पर्व।
8	गुरु	मार्गशीर्ष	शुक्ल	नवमी	24:37:24	कल्पादि नवमी।
9	शुक्र	मार्गशीर्ष	शुक्ल	दशमी	22:28:43	-
10	शनि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	एकादशी	19:44:25	मोक्षदा एकादशी व्रत। वैकुण्ठ एकादशी। श्रीमद्भगवद्गीता जयंती। मौनी एकादशी (जैन)।
11	रवि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	द्वादशी	16:31:58	अखण्ड द्वादशी। प्रदोष व्रत। अनंग त्रयोदशी व्रत।
12	सोम	मार्गशीर्ष	शुक्ल	त्रयोदशी	12:58:53	पिशाच मोचन चतुर्दशी। कपर्दीश्वर दर्शन पूजन।
13	मंगल	मार्गशीर्ष	शुक्ल	चतुर्दशी-पूर्णिमा	09:16:24	स्नान-दान व्रतादि हेतु उत्तम पूर्णिमा। श्री विद्या जयन्ती। दत्तात्रेय जयन्ती। बत्तीसी पूर्णिमा। मार्गशीर्ष मास के व्रत-यम आदि नियम पूर्ण। पूर्णिमा तिथि क्षय
14	बुध	पौष	कृष्ण	प्रतिपदा	26:08:36	पौष मास कृष्ण पक्षारम्भ। पौष मासीय व्रत-यम-नियम प्रारम्भ।
15	गुरु	पौष	कृष्ण	द्वितीया	23:04:32	सूर्य की धनु संक्रान्ति चन्द्र दर्शन। संक्रान्ति का सामान्य पुण्यकाल दोपहर 02:33 से सूर्यास्त तक। दीप वस्त्र, दान हेतु उत्तम। गोदावरी स्नान उत्तम। धनु (खर) मास आरम्भ। सौर / पौष मास आरम्भ।
16	शुक्र	पौष	कृष्ण	तृतीया	20:36:04	-
17	शनि	पौष	कृष्ण	चतुर्थी	18:51:39	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रा.08:55 पर)।

18	रवि	पौष	कृष्ण	पंचमी	17:56:55	-
19	सोम	पौष	कृष्ण	षष्ठी	17:55:35	-
20	मंगल	पौष	कृष्ण	सप्तमी	18:44:52	-
21	बुध	पौष	कृष्ण	अष्टमी	20:18:12	बुधाष्टमी पर्व। सूर्य सायन मकर राशि में संध्या 04:10 पर। सूर्य सायन उत्तरायण। सायन शिशिर ऋतु प्रारम्भ।
22	गुरु	पौष	कृष्ण	नवमी	22:25:15	-
23	शुक्र	पौष	कृष्ण	दशमी	24:54:47	पौष दशमी। पार्श्वनाथ जयन्ती (जैन)।
24	शनि	पौष	कृष्ण	एकादशी	27:32:45	सफला एकादशी व्रत।
25	रवि	पौष	कृष्ण	द्वादशी	30:06:56	सुरूप द्वादशी व्रत।
26	सोम	पौष	कृष्ण	त्रयोदशी	32:30:47	प्रदोष व्रत।
27	मंगल	पौष	कृष्ण	त्रयोदशी	08:31:10	मासिक शिवरात्रि व्रत। त्रयोदशी तिथि वृद्धि।
28	बुध	पौष	कृष्ण	चतुर्दशी	10:37:09	श्राद्ध की अमावस्या।
29	गुरु	पौष	कृष्ण	अमावस्या	12:23:26	स्नान-दानाद हेतु उत्तम अमावस्या। बकुला अमावस्या (ओडिसा)।
30	शुक्र	पौष	शुक्ल	प्रतिपदा	13:49:04	पौष मास शुक्ल पक्ष आरम्भ। चन्द्र दर्शन
31	शनि	पौष	शुक्ल	द्वितीया	14:52:10	-

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र



शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 2350, 2800, 3250, 3700, 4600, 5500 से 10,900 तक >> **Shop Online**

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 255 से 10900 तक**

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 730 से 10900 तक**

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र
मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	पुत्र प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रह्माण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र
ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1” X 1”	460	1” X 1”	370	1” X 1”	255
2” X 2”	820	2” X 2”	640	2” X 2”	460
3” X 3”	1650	3” X 3”	1050	3” X 3”	730
4” X 4”	2350	4” X 4”	1450	4” X 4”	1050
6” X 6”	3700	6” X 6”	2800	6” X 6”	1900
9” X 9”	7300	9” X 9”	4600	9” X 9”	3250
12” X12”	12700	12” X12”	9100	12” X12”	7300

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	**Diamond (Special)**	**Green Emerald (Special)**	**Naturel Pearl (Special)**	**Ruby (Old Berma) (Special)**	**Green Emerald (Special)**
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 46000	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 75000	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 125000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 280000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 525000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	**Red Coral (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

मंत्र सिद्ध रूद्राक्ष

Rudraksh List	Rate In Indian Rupee	Rudraksh List	Rate In Indian Rupee
एकमुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	730 to 3700	नौ मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	1900 to 4600
दो मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	55 to 280	दस मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	2350 to 5500
तीन मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	55 to 280	ग्यारह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	2800 to 5500
चार मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	55 to 190	बारह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	3700 to 7300
पंच मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	55 to 370	तेरह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	-
छह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	55 to 190	चौदह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	-
सात मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	460 to 730	गौरीशंकर रूद्राक्ष (नेपाल)	-
आठ मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	1900 to 460	गणेश रुद्राक्ष (नेपाल)	730 to 1450

* मूल्य में अंतर रुद्राक्ष के आकार और गुणवत्ता के अनुसार अलग-अलग होते हैं। उपरोक्त मूल्य छोटे से बड़े आकार के अनुरुप दर्शाये गये हैं। कभी-कभी संभावित हैं की छोटे आकार के उत्तम गुणवत्ता वाले रुद्राक्ष अधिक मूल्य में प्राप्त हो सकते हैं।

विशेष सूचना: बाजार की स्थिति के अनुसार, रूद्राक्ष मूल्य, दिन-ब-दिन बदलते रहते है, जिस कारण हमारी मूल्य सूची में भी बाजार की स्थिति के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं, कृप्या रुद्राक्ष के लिए अपना भुगतान भेजने से पहले रुद्राक्ष के नयी मूल्य सूची हेतु हम से संपर्क करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 730 से Rs. 10900 तक उप्लब्द्ध

>> **Shop Online**

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 1900 >> Shop Now

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)



घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 1650 से Rs. 10900 तक उप्लब्द्ध**

दिसम्बर 2016 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
04	प्रातः 06:32 से दिन 09:07 तक	16	प्रातः 06:40 से दोपहर 02:25 तक
05	प्रातः 06:33 से दिन 10:32 तक	21	दोपहर 04:12 से देर रात्रि 06:42 तक
09	दोपहर 10:12 से देर रात्रि 06:35 तक	24	प्रातः 06:44 से रात्रि 12:37 तक
12	रात्रि 12:39 से देर रात्रि 06:37 तक	26	प्रातः 06:45 से देर रात्रि 06:27 तक
14	प्रातः 06:39 से सायं 06:52 तक	31	दोपहर 02:48 से देर रात्रि 06:47 तक
15	दिन 04:23 से देर रात्रि 06:39 तक		
त्रिपुष्कर योग (तीनगुना फल दायक)			
20	दिन 02:15 से सायं 06:44 तक	25	प्रातः 06:44 से देर रात्रि 03:37 तक
24	रात्रि 12:37 से देर रात्रि 06:44 तक	31	प्रातः 06:47 से दोपहर 02:48 तक
द्विपुष्कर योग (दौ गुना फल दायक)			
06	प्रातः 06:33 से दोपहर 11:25 तक		
विघ्नकारक भद्रा			
03	दोपहर 12:44 से देर रात्रि 01:25 तक	16	प्रातः 09:45 से रात्रि 08:36 तक
07	सूर्योदय से दोपहर 02:33 तक	19	सायं 05:55 से देर रात्रि 06:20 तक
10	प्रातः 09:11 से सायं 07:45 तक	23	दोपहर 11:38 से रात्रि 12:55 तक
13	दिन 09:17 से सायं 07:27 तक	27	प्रातः 08:30 से रात्रि 09:34 तक

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

वार	गुलिक काल (शुभ) समय अवधि	यम काल (अशुभ) समय अवधि	राहु काल (अशुभ) समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुशार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्बेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

ग्रह चलन दिसम्बर-2016

Day	Sun	Mon	Ma	Me	Jup	Ven	Sat	Rah	Ket	Ua	Nep	Plu
1	07:15:07	08:01:27	09:22:03	08:03:16	05:22:43	08:28:10	C 07:23:38	R 04:13:37	R 10:13:37	R 11:26:48	10:15:10	08:21:51
2	07:16:08	08:13:32	09:22:48	08:04:40	05:22:53	08:29:21	C 07:23:45	R 04:13:24	R 10:13:24	R 11:26:46	10:15:11	08:21:53
3	07:17:09	08:25:45	09:23:33	08:06:03	05:23:03	09:00:31	C 07:23:52	R 04:13:14	R 10:13:14	R 11:26:45	10:15:11	08:21:54
4	07:18:10	09:08:07	09:24:18	08:07:25	05:23:13	09:01:41	C 07:23:59	R 04:13:07	R 10:13:07	R 11:26:44	10:15:12	08:21:56
5	07:19:11	09:20:40	09:25:03	08:08:45	05:23:23	09:02:51	C 07:24:07	R 04:13:03	R 10:13:03	R 11:26:43	10:15:12	08:21:58
6	07:20:12	10:03:28	09:25:48	08:10:03	05:23:33	09:04:01	C 07:24:14	R 04:13:02	R 10:13:02	R 11:26:41	10:15:13	08:22:00
7	07:21:13	10:16:34	09:26:33	08:11:19	05:23:42	09:05:11	C 07:24:21	R 04:13:02	R 10:13:02	R 11:26:40	10:15:13	08:22:01
8	07:22:14	11:00:01	09:27:19	08:12:33	05:23:52	09:06:21	C 07:24:28	R 04:13:02	R 10:13:02	R 11:26:39	10:15:14	08:22:03
9	07:23:14	11:13:54	09:28:04	08:13:44	05:24:01	09:07:30	C 07:24:35	R 04:13:00	R 10:13:00	R 11:26:38	10:15:15	08:22:05
10	07:24:15	11:28:11	09:28:49	08:14:52	05:24:10	09:08:39	C 07:24:42	R 04:12:57	R 10:12:57	R 11:26:37	10:15:15	08:22:07
11	07:25:16	00:12:53	09:29:34	08:15:57	05:24:19	09:09:49	C 07:24:49	R 04:12:50	R 10:12:50	R 11:26:36	10:15:16	08:22:09
12	07:26:17	00:27:53	10:00:19	08:16:57	05:24:28	09:10:58	C 07:24:56	R 04:12:41	R 10:12:41	R 11:26:35	10:15:17	08:22:11
13	07:27:18	01:13:04	10:01:05	08:17:52	05:24:37	09:12:07	C 07:25:03	R 04:12:31	R 10:12:31	R 11:26:34	10:15:17	08:22:13
14	07:28:19	01:28:16	10:01:50	08:18:42	05:24:46	09:13:16	C 07:25:10	R 04:12:19	R 10:12:19	R 11:26:34	10:15:18	08:22:15
15	07:29:20	02:13:17	10:02:35	08:19:26	05:24:55	09:14:24	C 07:25:17	R 04:12:09	R 10:12:09	R 11:26:33	10:15:19	08:22:16
16	08:00:21	02:27:59	10:03:20	08:20:02	05:25:03	09:15:33	C 07:25:25	R 04:12:00	R 10:12:00	R 11:26:32	10:15:20	08:22:18
17	08:01:22	03:12:14	10:04:06	08:20:31	05:25:12	09:16:41	C 07:25:32	R 04:11:54	R 10:11:54	R 11:26:31	10:15:21	08:22:20
18	08:02:23	03:25:59	10:04:51	08:20:51	05:25:20	09:17:49	C 07:25:39	R 04:11:51	R 10:11:51	R 11:26:31	10:15:22	08:22:22
19	08:03:24	04:09:15	10:05:36	08:21:01	05:25:28	09:18:57	C 07:25:46	R 04:11:50	R 10:11:50	R 11:26:30	10:15:23	08:22:24
20	08:04:26	04:22:05	10:06:22	R 08:21:00	05:25:36	09:20:05	C 07:25:53	R 04:11:50	R 10:11:50	R 11:26:30	10:15:24	08:22:26
21	08:05:27	05:04:32	10:07:07	R 08:20:48	05:25:44	09:21:13	C 07:26:00	R 04:11:51	R 10:11:51	R 11:26:29	10:15:25	08:22:28
22	08:06:28	05:16:43	10:07:52	RC 08:20:25	05:25:52	09:22:20	C 07:26:07	R 04:11:50	R 10:11:50	R 11:26:29	10:15:26	08:22:30
23	08:07:29	05:28:42	10:08:37	RC 08:19:50	05:26:00	09:23:28	C 07:26:14	R 04:11:47	R 10:11:47	R 11:26:28	10:15:27	08:22:32
24	08:08:30	06:10:34	10:09:23	RC 08:19:03	05:26:07	09:24:35	C 07:26:21	R 04:11:43	R 10:11:43	R 11:26:28	10:15:28	08:22:34
25	08:09:31	06:22:24	10:10:08	RC 08:18:06	05:26:15	09:25:42	C 07:26:28	R 04:11:35	R 10:11:35	R 11:26:28	10:15:29	08:22:36
26	08:10:32	07:04:16	10:10:53	RC 08:17:00	05:26:22	09:26:48	C 07:26:35	R 04:11:25	R 10:11:25	R 11:26:28	10:15:30	08:22:38
27	08:11:33	07:16:11	10:11:39	RC 08:15:46	05:26:29	09:27:55	C 07:26:42	R 04:11:14	R 10:11:14	R 11:26:28	10:15:31	08:22:40
28	08:12:35	07:28:13	10:12:24	RC 08:14:26	05:26:36	09:29:01	07:26:49	R 04:11:01	R 10:11:01	R 11:26:27	10:15:33	08:22:42
29	08:13:36	C 08:10:22	10:13:09	RC 08:13:05	05:26:43	10:00:07	07:26:56	R 04:10:50	R 10:10:50	R 11:26:27	10:15:34	08:22:44
30	08:14:37	C 08:22:41	10:13:55	RC 08:11:43	05:26:50	10:01:13	07:27:02	R 04:10:40	R 10:10:40	11:26:27	10:15:35	08:22:46
31	08:15:38	09:05:08	10:14:40	RC 08:10:24	05:26:56	10:02:18	07:27:09	R 04:10:32	R 10:10:32	11:26:27	10:15:37	08:22:48

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> **Shop Online**

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

अमोघ महामृत्युंजय कवच	10900	श्रापित योग निवारण कवच	1900	तंत्र रक्षा	730
राज राजेश्वरी कवच	11000	* सर्व जन वशीकरण	1450	शत्रु विजय	730
सर्व कार्य सिद्धि कवच	4600	सिद्धि विनायक कवच	1450	विवाह बाधा निवारण	730
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धिप्रद कवच	6400	सकल सम्मान प्राप्ति कवच	1450	व्यापर वृद्धि	730
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच	6400	आकर्षण वृद्धि कवच	1450	सर्व रोग निवारण	730
दस महा विद्या कवच	6400	वशीकरण नाशक कवच	1450	रोजगार वृद्धि	730
नवदुर्गा शक्ति कवच	6400	प्रीति नाशक कवच	1450	मस्तिष्क पृष्टि वर्धक	640
रसायन सिद्धि कवच	6400	चंडाल योग निवारण कवच	1450	कामना पूर्ति	640
पंचदेव शक्ति कवच	6400	ग्रहण योग निवारण कवच	1450	विरोध नाशक	640
सुवर्ण लक्ष्मी कवच	4600	अष्ट लक्ष्मी	1250	विघ्न बाधा निवारण	550
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच	4600	मांगलिक योग निवारण कवच	1250	नज़र रक्षा	550
*विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच	3250	संतान प्राप्ति	1250	रोजगार प्राप्ति	550
कालसर्प शांति कवच	2800	स्पे- व्यापर वृद्धि	1050	दुर्भाग्य नाशक	460
इष्ट सिद्धि कवच	2800	कार्य सिद्धि	1050	* वशीकरण (2-3 व्यक्तिके लिए)	1050
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच	2350	आकस्मिक धन प्राप्ति	1050	* पत्नी वशीकरण	640
श्रीदुर्गा बीसा कवच	1900	स्वस्तिक बीसा कवच	1050	* पति वशीकरण	640
अष्ट विनायक कवच	1900	हंस बीसा कवच	1050	सरस्वती (कक्षा +10 के लिए)	550
विष्णु बीसा कवच	1900	स्वप्न भय निवारण कवच	1050	सरस्वती (कक्षा 10 तकके लिए)	460
रामभद्र बीसा कवच	1900	नवग्रह शांति	910	* वशीकरण (1 व्यक्ति के लिए)	640
कुबेर बीसा कवच	1900	भूमि लाभ	910	सिद्ध सूर्य कवच	550
गरुड बीसा कवच	1900	काम देव	910	सिद्ध चंद्र कवच	550
सिंह बीसा कवच	1900	पदों उन्नति	910	सिद्ध मंगल कवच	550
नर्वाण बीसा कवच	1900	ऋण मुक्ति	910	सिद्ध बुध कवच	550
संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच	1900	सुदर्शन बीसा कवच	910	सिद्ध गुरु कवच	550
राम रक्षा कवच	1900	महा सुदर्शन कवच	910	सिद्ध शुक्र कवच	550
हनुमान कवच	1900	त्रिशूल बीसा कवच	910	सिद्ध शनि कवच	550
भैरव रक्षा कवच	1900	धन प्राप्ति	820	सिद्ध राहु कवच	550
शनि साड़ेसाती और ढ़ैया कष्ट निवारण कवच			1900	सिद्ध केतु कवच	550

उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

>> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785, Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and www.gurutvajyotish.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	200.00	500.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	10000.00	2000.00	41000.00	55000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	75.00	90.00	12.00	180.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	120.00	150.00	190.00	280.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	20.00	28.00	42.00	51.00	90.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye Orissa	(उडिसा लहसुनिया)	460.00	640.00	1050.00	2800.00	5500.00 & above
Gomed	(गोमेद)	15.00	27.00	60.00	90.00	120.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	300.00	410.00	640.00	1800.00	2800.00 & above
Zarakan	(जरकन)	350.00	450.00	550.00	640.00	910.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	15.00	30.00	45.00	60.00	90.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	15.00	30.00	45.00	60.00	90.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	60.00	120.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	60.00	90.00	120.00	280.00	460.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	20.00	30.00	45.00	60.00	120.00 & above
Opal	(उपल)	30.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Garnet	(गारनेट)	30.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	09.00	12.00	15.00	19.00	25.00 & above
Real Onyx	(ओनेक्स)	60.00	90.00	120.00	190.00	280.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	25.00	30.00	45.00	55.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	21.00	30.00	45.00	100.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	09.00	12.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Diamond (.05 to .20 Cent)	(हीरा)	50.00 (Per Cent)	100.00 (Per Cent)	200.00 (PerCent)	370.00 (Per Cent)	460.00 & above (Per Cent)

>> Order Now

Note : **Bangkok** (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

सूचना

- ❖ पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ❖ लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- ❖ नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ❖ पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- ❖ प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- ❖ प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ❖ अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ❖ ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ❖ पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ❖ हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- ❖ यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ❖ हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ❖ पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- ❖ अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष पत्रिका दिसम्बर-2016

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvajyotish.com
http://gk.yolasite.com/
www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



DEC 2016